॥ श्रीः ॥

स्काटलेण्डके इतिहासयुक्त

स्काटलेन्ड-रवि

वालेसका जीवनचरित ।

अनुवादक—

महावीरप्रसाद ।

कलकत्ता ।

९७ मुक्तारामबाबूस्ट्रीट, भारतमित्र प्रेससे

पण्डित कृष्णानन्द शर्म्मा द्वारा

मुद्रित और प्रकाशित ।

संवत् १९६४ ।

सर विलियम वालेस।

विज्ञप्ति।

२०—२२ वर्ष हुए बाबू योगेन्द्रनाथ विद्याभूषण एम० ए० ने बङ्गभाषामें सर विलियम वालेसकी जीवनी लिखी थी। यह पुस्तक उसीका अनुवाद है। बाबू योगेन्द्रनाथ बङ्गभाषाके एक तेजस्वी लेखक थे। उन्होंने बङ्गदर्शनके ढङ्ग पर आर्य्यदर्शन नामका एक मासिकपत्र निकालकर कई वर्ष तक बड़ी योग्यतासे चलाया था। आर्य्यदर्शनके लेख पाण्डित्यपूर्ण होते थे। योगेन्द्र बाबू स्वाधीन प्रकृति और सच्चे देशहितैषी थे। उनके बनाये ग्रन्थ और उक्त मासिकपत्र इस बातके साची हैं। वह कई उत्तम उत्तम पुस्तकें लिख गये हैं जिनमें सर जान ष्टुआर्ट मिलकी जीवनी, मेजिनीकी जीवनी (अपूर्ण), गेरीबाल्डीकी जीवनी, वालेसकी जीवनी, आत्मोत्सर्ग और हृदयोच्छ्वास मुख्य हैं। गेरीबाल्डीकी जीवनीका मराठी भाषामें अनुवाद हुआ है। मैं महावली वालेसकी जीवनीका अनुवाद करके हिन्दी पाठकोंकी सेवामें अर्पण करता हूं।

कलकत्ता
फाल्गुन शुक्ल ७ संवत् १९६३ वि०। } महावीरप्रसाद।

मुखबन्ध।

आत्मोत्सर्गका फड़कता हुआ दृष्टान्त वीर चूड़ामणि वालेस है। मैजिनी और गैरीबाल्डीने जिस तरह केवल स्वदेशोद्धारके व्रतमें जीवन आहुति दे दी वालेसने भी वैसेही केवल एकही चिन्तामें और एकही काममें जीवन समर्पण कर दिया था। दुर्दमनीय अङ्गरेजोंके अत्याचारसे जन्मभूमि स्काटलेण्डका उद्धार करनेमेंही उसका सब शारीरिक और मानसिकबल खर्च हुआ था। उसका शारीरिक और मानसिक बल भी अपरम्पार था। वह भीमके समान बली था। एक वस्तुमें दो गुण बहुधा नहीं पाये जाते। वह आलस्य और भयका नाम नहीं जानता था। उसने अकेले जो जो काम किये हैं वह आज कलके लोगोंको बड़े आश्चर्य्यमें डालनेवाले हैं। वह गैरीबाल्डीकी भांति निष्काम कर्म्म योगी था। जन्मभूमिका उद्धार करनेके सिवा उसने अपनी उस अलौकिक वीरता और बुद्धिमानीसे और किसी फलकी इच्छा नहीं की। वह चाहता तो स्काटलेण्डका शासनदण्ड चिरकालके लिये अपने हाथमें रख सकता किन्तु वह उसका इरादा नहीं था। वह स्वजातिका अवैतनिक और स्वेच्छा-प्रवृत्त सेवक बन कर उसके लिये प्राण देनेको बराबर तय्यार था। इसीलिये जब उसने देखा कि उसकी हुकूमत स्काटलेण्डके तालुकेदारोंको असह्य होगई तब अकारण देशमें भीतरी लड़ाईकी आग न भड़का कर वह जातीय उद्धारका कार्य्य उनको सौंप कुछ दिनके लिये फ्रांस चलागया। किन्तु उसकी गैरहाजिरीमें स्काटलेण्डका सौभाग्य सूर्य्य फिर अस्ताचल पर पहुंचनेको हुआ। उसने अङ्गरेजोंको बार बार पराजित करके स्काटलेण्डसे भगाया था; यहां तक कि एक बार उसकी दिग्विजयिनी सेना लन्दनके तोरण द्वारतक पहुंची थी और इङ्गलेण्डकी महारानीको आकर उससे शान्ति की भीख

मांगनी पड़ी थी। गर्वित इङ्गलेण्डने इससे बढ़ कर अपमान और कभी सहा था कि नहीं इसमें सन्देह है। किन्तु साहसी एडवर्ड किसी तरह पीछे पांव देनेवाले नहीं थे। वह जितनी बार हारते थे उतनीही बार लड़नेको तय्यार होते थ। पराजयके गुरुत्वके अनुसार उनके आयोजनका गुरुत्व नियमित होता था। ऐसा अध्यवसाय ऐसी मुस्तैदीही अंगरेजोंकी सफलताकी जड़ है।

सर विलियम वालेस जब फ्रांस चला गया तब एडवर्डने स्काटलेण्डको फिर तबाह कर डाला। स्काटलेण्डके तालुकेदार एक एक करके उनकी अधीनता स्वीकार करने लगे। फिर ब्रटिश सिंहकी पताका स्काटिश किलों पर फर्राने लगी। स्काटिश जातीय दलने वालेससे स्वदेशमें लौट आनेकी प्रार्थना की। वालेसने पहले जातीय आह्वान पर कान नहीं किया। जातीय दूत उदास होकर लौट आया। किन्तु उसका वह मान स्वदेशानुरागकी आगमें शीघ्रही भस्म होगया। वह स्वदेशकी दुर्गतिकी खबर पाकर बहुत दिन निश्चिन्त न रह सका। बहुत जल्द स्काटिश देश के किनारे आपहुंचा। इतनेमें वालेसके आनेका समाचार एडवर्डके कानों तक पहुंचा। एडवर्ड बार बार विफल मनोरथ हुएथे इससे फिर उन्होंने वालेससे सम्मुख संग्राममें खड़े होनेका साहस नहीं किया। वीरतासे जो बात न बनी विश्वासघातसे उसको पूरा करने पर आमादा हुए।

एडवर्डने वालेसके नौकरको सोना देकर खरीद लिया। वालेस जब सोया हुआ था उस समय उसके नमकहराम नौकरने उसको पकड़वा दिया। वालेसके आनेकी खबर स्काटलेण्डमें सर्वत्र फैली भी न थी कि यह घृणित कार्य्य होगया। व्याध सोये हुए सिंहको जैसे जंगलमें फंसाता है वैसेही अंगरेज उसको सोये हुएही घोड़ेकी पीठमें बांध कर ताबरतोड़ लन्दनकी तरफ ले भागे। सवेरे जातीय दलने जब समाचार पाया तब तक वालेस बहुत दूर चला गया था। हाथ पांव बान्ध कर वालेस लन्दन टावरके कारागारमें फेंका गया।

अङ्गरेज जजोंके विलक्षण विचारसे वालेस राजद्रोही समझा गया। एडवर्डकी आज्ञासे उसकी देह टुकड़े टुकड़े करके चारोंओर फेंकी गई। स्वाधीनता देवी खूनकी बड़ी प्यासी है। जो जाति उसके चरणोंमें आत्मबलि दे सकती है जो जाति उसके मन्दिरके सामने देशके श्रेष्ठ मनुष्योंको बलि दे सकती है वह उसी जाति पर प्रसन्न होती है। इसीसे आज वालेसने स्वजातिके उद्धारके लिये उस दुराराध्या स्वाधीनता देवीके मन्दिरके सामने आत्म-बलि दी! उसकी वीरतासे जो काम नहीं हुआ वह उसकी आत्म-बलिसे होगया। स्वाधीनता देवी स्काटलेण्डके प्राणके प्राण वालेसका खून पीकर बहुत सन्तुष्ट हुई। बैनक बरनकी रणभूमिमें ब्रूसने आसानीसे जय पाकर अनन्तकालके लिये स्काटलेण्डमें स्वाधीनता देवीको प्रतिष्ठित किया। उक्त ब्रूसकी पीढ़ी दरपीढ़ी स्काट-लेण्डके सिंहासन पर बैठी थी। अन्तमें एलिजाबेथकी मृत्यु होने पर स्काटलेण्डके राजा छठे जेम्स प्रथम जेम्सके नामसे इंग-लेण्ड और स्काटलेण्डके संयुक्त सिंहासन पर बैठे। अतएव एक तरहसे इंगलेण्डकोही स्काटिश राजवंशकी अधीनता स्वीकार करना पड़ी। वालेसकी वैसी निष्ठुर हत्याका इससे बढ़ कर उत्तम प्रायश्चित और क्या हो सकता है?

इसलिये जिस महापुरुषके रक्तसे अनन्तकालके लिये स्काटलेण्डमें स्वाधीनताकी प्रतिष्ठा हुई उस महापुरुषकी कीर्त्ति कहना सुनना या पढ़ना हरेक स्वदेशानुरागी व्यक्तिका कर्त्तव्य है। इसी विचारसे आज हमने उस महापुरुषकी कीर्त्ति यथाशक्ति वर्णनकी है, अब स्वदेशानुरागी व्यक्तिमात्र उसे सुनें और पढ़ें तो हम अपना परि-श्रम सार्थक समझेंगे। जो महात्मा हैं उनकी जीवनी सब देशके लोगोंके लिये शिक्षाप्रद है। जातिगत विद्वेषके कारण जो लोग ऐसी अनमोल शिक्षाकी उपेक्षा करते हैं वह बहुत भूलमें हैं।

श्रीयोगेन्द्रनाथ बंद्योपाध्याय।

अवतरणिका ।

सन् १०६६ ईस्वीमें विजयी विलियम द्वारा इङ्गलेण्ड विजित होने पर, इंगलेण्ड और स्काटलेण्डमें बड़ा भारी गदर मचा। जबर-दस्त साक्सन तालुकेदारोंने विलियमके असह्य प्रतापसे व्याकुल हो फोर्थ पार होकर स्काटलेण्डकी उपत्यकामें शरणली। यहां तक कि विलियमके सहयात्री नार्मन जागीरदार भी उसकी मनमानी चालसे नाराज होकर साक्सन सामन्तोंकी देखा देखी स्काटलेण्डके पहाड़ी प्रदेशोंमें जाबसे। इनके जानेसे स्काटलेण्डमें एक विशेष परिवर्त्तन होने लगा। इंगलेण्डकी तरह स्काच अदालतोंमें भी फरासीसी भाषा घुसी। इससे यद्यपि जातीय भाषाकी असलीयतमें कोई विशेष परिवर्त्तन नहीं हुआ तथापि जातीय जीवनकी विशेष हानि हुई थी। क्योंकि जातीय भाषाका अनादर होनेसेही जातीय जीवन संकीर्ण हो जाता है। जिस समय स्काटलेण्डके भाग्यचक्रमें यह सब फेर बदल होरहा था उस समय स्काच् सिंहासन पर माल-कम् केनमोर, प्रथम अलकजेण्डर और प्रथम डेविड नामक तीन नृपति क्रमसे विराजमान थे।

किन्तु विदेशी भाषाके घुसनेसे जातीय भाषाका अनादर और उससे जातीय जीवनमें सङ्कीर्णता होने पर भी कुछ जबरदस्त नार्मन सामन्तोंको आश्रय देकर स्काच् राजाओंने उस समय मानो बड़े राजनीतिज्ञका काम किया। क्योंकि उस समय दो फायदे हुए थे एक तो प्रतापी नये राजाका बल घटा, दूसरे स्वराज्यका जोर बढ़ा। विशेष कर नार्मन सरदार, वीर भूमि युरोपके मैदानमें जो युद्ध कौशल और वीरधर्म्म सीख आये थे स्काटलेण्डमें उसका प्रचार करके उन्होंने वहांकी भविष्यकीर्त्तिकी नीव डाली।

सन् ११५३ ईस्वीमें डेविडकी मृत्यु हुई। उस समयसे दूसरे अल-कजेण्डरके शासनकाल तक कुछ कम सौ साल स्काटलेण्डमें बराबर शान्ति रही। इतने दिन स्काटलेण्डके भाग्याकाशमें प्रचण्ड सौभाग्य

शरणमें गये। एडवर्ड इस शर्त पर पञ्चायत करनेको राजी हुए कि इसके बाद स्काटराजको इंगलेण्ड नरेशकी अधीनता स्वीकार करनी पड़ेगी। उन्होंने पुरानी ऐतिहासिक घटनासे अपना यह हक साबित किया।

स्काट राज विलियमने ११७४ ईस्वीमें जब इङ्गलेण्ड पर आक्रमण किया तब वह चारसौ सवारों सहित यार्क सायरके बैरनों द्वारा पकड़े गये। उन्हें और उनकी सेनाको छुड़ानेके लिये स्काच् बैरनोंने हेनरीसे यह सन्धि की कि विलियम कैदसे छूटने पर इङ्गलेण्डके जागीरदार बन कर स्काटलेण्डमें राज्य करेंगे। विलियम अपने बैरनोंकी यह शर्त माननेको लाचार हुए। पीछे ११८९ ईस्वीमें हेनरीके मरने पर सिंह हृदय रिचार्ड इङ्गलेण्डके सिंहासन पर बैठे। उन्होंने पवित्र तीर्थ स्थान जेरूजेलमकी यात्रा करते समय विलियम सिंहको रक्सबरा और बारविकके किले (विलियमने सन्धिकी जमानतके तौर पर यह दोनों किले इङ्गलेण्ड नरेशको देरखे थे) लौटा दिये और उन्हें सब तरहकी अधीनतासे बरी कर दिया। इसके बदलेमें विलियम सिंहने १ लाख रुपये दिये। रिचार्ड और विलियमकी इसी सन्धिसेही इस विषयका आखिरी फैसला हो गया था। इसलिये उस पुराने टूटे हुए स्वत्व पर यह नया दावा खड़ा करना एडवर्डके लिये न्यायसे बिलकुल रहित था इसमें सन्देह नहीं।

किन्तु ऐसा दावा अनुचित और न्याय-रहित जान कर भी सिंहासनके भिखारी बेलियल और ब्रूस एडवर्डके प्रस्ताव पर राजी हुए। अब स्काटलेण्डका भाग्य फूटा।

लेण्डको अपना करद राज्य बनाना चाहा तब स्काटिश पार्लीमेण्ट किसी तरह राजी नहीं हुई।

एडवर्डका फैसला सबके मानने योग्य न होने पर भी प्रचलित नियमानुसार ठीक हुआ था। क्योंकि बेलियल अर्ल डेविडकी बड़ी लड़कीका परपोता और ब्रूस छोटी लड़कीका पोता था। लोगोंके ख्यालसे ब्रूस अधिक नजदीकी था इसलिये उसके मौजूद रहते दूरका उत्तराधिकारी बेलियल स्काटिश सिंहासनका अधिकारी नहीं हो सकता था। किन्तु प्रचलित ज्येष्ठाधिकारवाले नियमके अनुसार जेठी लड़कीका उत्तराधिकारी मौजूद रहते छोटी लड़कीका कोई उत्तराधिकारी हकदार नहीं समझा जा सकता। इससे एड-वर्डका फैसला प्रचलित रिवाजके अनुसार था इसमें सन्देह नहीं।

किन्तु दूसरे अलकजेण्डरके समयमें ब्रूस उत्तराधिकारी स्वीकृत होचुका था और वह स्काटलेण्डके अधिक लोगोंके मन मुआफिक भी था इससे एडवर्डने पहले ब्रूसकोही स्काटिश सिंहा-सन देनेका प्रस्ताव किया। परन्तु ब्रूसने उनके सब नियम स्वीकार नहीं किये इससे वह प्रस्ताव खारिज हुआ। एडवर्डने अब लाचार होकर बेलियलका पक्ष लिया। १२९३ में बेलियल प्रथम एडवर्ड की अधीनतामें स्काट-सिंहासन पर बैठे। इधर मालकम केनमोर के समयसे स्काटिश-राजवृन्द जिस राजनीति पर चले आते थे, जिस से इस समय स्काटलेण्डका भला हुआ था धीरे धीरे उसका परि-णाम बुरा हुआ। उन लोगोंने जिन नार्मन बैरनोंको आश्रय देकर बड़ी बड़ी जमींदारियां और राज्यके सब ऊंचे ऊंचे पद देरखे थे वह अभीसे स्काट-सिंहासनकी तरफसे लापरवाही दिखाने लगे। उन विदेशी बैरनोंने अब देखा कि स्काटलेण्डसे इंगलेण्डकी भविष्य में मुठभेड़ अटल है उसमें स्काटलेंडका सिंहासन इंगलेण्डके नरेशके हाथमें जाय चाहे स्काटराजके हाथमें रहे उनका कुछ नफा नुक-सान नहीं है। जबतक उनकी जमीन पर कोई हाथ न डालेगा तबतक उन्हें किसीसे उज्र नहीं है। बल्कि जबरदस्त इंगलेण्ड नरेशका पक्ष लेना उनके लिये और अच्छा है। फिर स्काटराज

इंगलेण्डेश्वरका अधीन राजाही तो है। इस लिये जबरदस्तका साथ देनेमें कमजोरको तरफसे कुछ खटका नहीं बल्कि उसके विरुद्ध चलनेमें भारी डर है। स्काट लोगोंके साथ उनका कुछ जातीय सम्बन्ध नहीं था इसलिये जातीय मर्यादा रखनेकी भी उन्हें कुछ परवा न थी। बल्कि इंगलेण्डनरेश और इंगलेण्डवासी नार्मनों से खूनका सम्बन्ध होनेसे स्वयं उधर उनके हृदयका आकर्षण था। जब स्मरण होता है कि स्काटलेण्डकी सब बड़ी बड़ी जमींदारियां विदेशी नार्मनोंके हाथमें थीं, राज्यके सब ऊंचे ऊंचे पदों पर वही थे तो हमारे मनमें यह विस्मय होता है कि क्योंकर स्काटिश जातीय दल इस दुर्लंघ्य घटनाओंको लांघकर जातीय जीवनको विध्वंस करनेवाली इन विघ्न बाधाओंको पारकर राखमें छिपी हुई चिनगारीकी भांति स्वाधीनतासमरमें आखड़ा हुआ।

स्काटलेंडके नार्मनोंने जैसा सोचा था वैसाही हुआ। बहुत जल्द एडवर्डसे वेलियलकी रगड़ शुरू होगई। इस रगड़में उक्त नार्मन बैरन एडवर्डकी ओर जातीयदल वेलियलकी तरफ खड़ा हुआ। हम आज जिस प्रातःस्मरणीयचरित महात्माकी जीवनी लिखना चाहते हैं वही इस जातीय दल संगठका, नायक और एक मात्र बल था। अगर कभी किसीने निःस्वार्थ भावसे जातीय उद्धारके व्रतमें जीवन उत्सर्ग किया है, अगर कभी किसीने स्वजाति के हितार्थ जातीय भाग्यदेवताकी तृप्तिके लिये शरीरका रक्त बूंद बूंद करके दिया है, अगर कभी किसीने स्वजाति और स्वदेशकी चिन्ता जन्मभर की है, अगर किसीने कभी सोते समय भी स्वजाति और स्वदेशका स्वप्न देखा है, अगर किसीने कभी स्वजातिके उद्धारके लिये शरीरके टुकड़े टुकड़े करके दसो दिशाओंमें फिंकवाया है तो **सर विलियम वालेस** ने।

आज हम उस पूज्य नरदेवके आगे और जो स्काटलेण्ड उसकी जन्मभूमि है उसके आगे भी सिर नवाते हैं। कविवर बारनेसने सच कहा है कि ऐसा स्काटिश हृदय नहीं कि जिसका गर्म खून वालेसके नाम पर न उबल उठे।* हम यह भी कहते हैं कि ऐसा स्वजाति प्रेमी मनुष्य नहीं, वालेसकी कहानीसे जिसका कलेजा न फटने लगे, वालेसके नामपर जिसका हृदय भक्तिरससे न उमड़ उठे।

---

* "At Wallace's name what Scottish blood,
But boils up in a spring-tide flood ?"

॥ श्रीः ॥

स्काटलेण्डके इतिहासयुक्त

वीरवर वालेसका जीवनचरित ।

पहला अध्याय ।

स्काटलेण्ड और इंगलेण्डकी उस समयकी भीतरी अवस्था ।

युरोपके दूसरे राज्योंकी तरह स्काटलेण्ड और इंगलेण्डमें भी उस समय सामन्त तान्त्रिक प्रथा जारी थी। सामन्त यानी जागीरदार लोग प्रायः सब विषयोंमें स्वतन्त्र थे, सिर्फ युद्धके समय उन्हें धन और सेनासे राजाकी सहायता करनी पड़ती थी उनको एक तरहसे छोटे छोटे राजा भी कह सकते थे। यह सामन्त तान्त्रिक प्रथा पहले भारतवर्षमें भी जारी थी। भारतवर्षमें एक एक समय एक एक प्रतापी राजा सम्राट तो होता था किन्तु उसके अधीनस्थ राजा लोग उसको कुछ नजर देकर और बादशाह मान करकेही छुट्टी पाजाते थे। वह अपने राज्यके भीतर सब विषयोंमें स्वाधीन होते थे। विजयी सम्राट अगर किसी पर चढ़ाई करता या शत्रु उस पर चढ़ाई करता तो जागीरदार रुपये और सेनासे प्रभुकी मदद करते थे, किन्तु प्रभुको विपदमें फंसा देखतेही वह अकड़ जाते और हरेक अपनेको स्वतन्त्र बनानेकी कोशिश करता। इस लिये जब जब जातीय एकताकी ज्यादा जरूरत पड़ती तबही तब जातीय भीतरी गदर खड़ा होजाता था। नतीजा यह होता कि जातीय पराजय और जातीय पतन होता था। इसी कारण

भारत-गौरव-रवि पृथिवीराजका और उसके साथही भारतका भी पतन हुआ। उसी एक कारणसे स्काटलेण्डका पतन हुआ, उसी एक कारणसे हेनरी और उनके वीर पुत्र एडवर्डको कदम कदम पर अटकना और हारना पड़ा था। किसान और मजदूर और उनकी भूमि सामंतोंके अधीन होनेसे वह लोग जब चाहते तभी राजाको मुट्ठीमें कर सकते थे। किन्तु इंगलेण्डमें इस तकरारसे मेवा फला। वहां इस राजा और सामंतों के झगड़ेसेही प्रजातन्त्र शासनप्रणालीकी उत्पत्ति हुई। पर भारत और स्काटलेण्डमें इससे जातीय पतन हुआ।

सन् १०६६ ई० में विजयी विलियमके इंगलेण्ड जीतनेके बाद करीब अढ़ाई सदी तक साक्सन सामंत और पुरोहित लोग जमीन लेकर बराबर नार्मन राजाओंसे लड़ते रहे। वह राज्यकी विकट लालसासे दो सदी तक वेल्स आयर्लेण्ड और स्काटलेण्ड आदि पड़ोसी राज्योंको इंगलेण्डमें मिलानेकी कोशिशमें लगे रहे। इससे उन्हें धन और सेनाकी बड़ी जरूरत पड़ी। तंग आये हुए जागीरदारोंने धन और सेना देनेसे इनकार किया तो नार्मन राजा इनकी जमीन पर हाथ बढ़ानेको मुस्तैद हो गये।

किन्तु किसान और मजदूर जो उस समयकी जातीय सेनाकी अद्वितीय सामग्रीथे, सामन्तोंके अधिकार में थे इससे इंगलेंड नरेश उनको काबूमें न करसके। अंतमें उन्होंने अपनी भूल समझी। देखा कि घरमें झगड़े लगे रहनेसे बाहर विजय नहीं पासकते यह सब सोचकर इंगलेण्डेश्वर जानने १२१५ ईस्वीमें इंगलेण्डकी प्रजाको महत स्वत्वपत्र यानी मेगनाचार्टा प्रदान किया। यह पत्रही इंगलेंडकी सर्वसाधारण प्रजाकी व्यक्तिगत स्वाधीनता की जड़ है। यह मेगनाचार्टा पाकर साक्सन सरदार खुशीसे राजाके अनुगामी हुए। किन्तु तीसरे हेनरीने जानके सिंहासन पर बैठकर पिताका दिया हुआ स्वत्व प्रजासे छीन लेना चाहा। इसका परिणाम हम पहलेही बताचुके हैं कि वह और उसके पुत्र प्रथम एडवर्ड

लन्दन टावरमें कैद किये गये। उस समय हेनरीके दामाद स्काट-नरेश तीसरे अलकजेण्डर अगर ससुर और सालेको छुड़ानेके लिये तीस हजार सेना न भेजते तो इंगलेण्डका इतिहास कैसा बनता कौन कह सकता है? हेनरी कमजोर मिजाजके थे इससे फिर उन्होंने प्रजासे झगड़नेका साहस नहीं किया। प्रजाकी सहानुभूति और सहायता विना उनकी राज्य-लालसा मनकी मनहीमें रहगई। पीछे उनके पुत्र प्रबल प्रतापी एडवर्डने पिताकी गद्दीपर बैठतेही सबसे पहले वेल्सको अपने राज्यमें मिलाया और जल्दही आयर्लेण्डने भी उनकी अधीनता मानली। अब उनके विजयपिपासु नेत्र स्काटलेण्ड पर पड़े। उनका खजाना भरा और विजयिनी सेना रणोन्मत्त थी इसलिये स्काटलेण्डको जीत लेना उन्होंने बहुत सहज समझा किन्तु ऐसा नहीं हुआ। फ्रांसदेशकी गिनी की खाड़ीमें एडवर्डका एकुइटन नामक एक छोटासा राज्य था। उसके लिये फ्रांस-राजके सामने उन्हें जागीरदारकी हैसियतसे सिर नवाना पड़ता था। इस समय फिलिप फ्रांसके सिंहासन पर थे। उन्हीं दिनों अङ्गरेजों और नार्मनोंके तिजारती जहाजोंमें फसाद उठने पर अङ्गरेज सौदागरोंने दिनेमारोंकी सहायतासे नार्मन जहाजोंको बड़ा नुकसान पहुंचाया। इसपर फिलिपने बिगड़ कर इसकी जवाबदेहीके लिये अपने सामन्त एडवर्डको फ्रांसीसी दरबारमें हाजिर होनेका हुक्म दिया। एडवर्डने यह हुक्म नहीं माना। फिलिपने एकुइटन जब्त कर लिया। मानी एडवर्डसे यह सहा नहीं गया उन्होंने फ्रांस पर चढ़ाई करनेके लिये बहुत सेना इकट्ठी की। वह चढ़ाई करनाही चाहते थे कि इतनेमें वेल्सने सिर उठाया। एडवर्ड उसी सेना सहित वेल्सपर चढ़ दौड़े और विद्रोही वेल्सवासियोंको अच्छी तरह हरा कर कड़ा दण्ड दिया। स्काटलेण्ड, वेल्स और गिनीमें लड़ाई छिड़ जानेसे एडवर्डका भरा खजाना खाली होगया। अब उन्होंने प्रजाका स्वत्व छीन कर उसकी मर्जीके खिलाफ भारी कर लगाया। पुरोहित, जागीरदार और सौदागर—सबने मिलकर

एडवर्डका मुकाबला किया। पीछे सन् १२८७ ईस्वीमें वह जब सेना सहित फ्रांससे लड़नेके लिये कूच करने लगी तब अर्ल हियर फोर्ड और नार्फीक नामक दो प्रधान जागीरदार इंगलेण्डके वाहर जानेसे इनकार करके सेना सहित अपने अपने घर लौट आये। इसी तरह स्काटलेण्डको कूच करनेके समय भी उन्हें अपनी प्रजासे वार आर रुकना पड़ा। यों उनका प्रचण्ड दर्प चूर्ण करके इंगलेण्डकी प्रजाने एक एककर अपने गये हुए सब स्वत्व फिर प्राप्त कर लिये। स्वत्व पाकर प्रजा अब खुशीसे उनका साथ देनेको तैयार हुई।

जब एडवर्डने फिलिपसे लड़नेका विचार किया तब उन्होंने सामन्त-स्वामीकी हैसियतसे स्काट नरेश वेलियलको सेना सहित सहायताके लिये बुलाया। स्काट राज और उनकी प्रजाने तब अपनी दशा समझी। एडवर्डको वादशाह स्वीकार करना उन्होंने पहले केवल जवानी इज्जत करना समझा था। पर अब समझा कि एड-वर्डकी दुर्दमनीय विद्वेष वृत्ति पूरी करनेके लिये उन्हें बीच बीचमें जातीय खून और जातीय धन खर्चना पड़ेगा। तब उन्हें भय हुआ। भयसे वह लोग फिर गये। स्काट नरेशने इतने दिन पर अपनी भूल समझी और समझ कर एडवर्डकी अधीनता छोड़ दी। इसका परिणाम हुआ इङ्गलेण्डसे भीषण संग्राम। इस जातीय स्वाधीनताके समरमें वालेस आदिका जातीय दल वेलियलका सहायक हुआ। वह इस अदम्य तेजसे इंगलेण्डका आक्रमण रोकने लगा कि अंतमें एडवर्डको अपनी प्यारी जागीर एकुइटनकी आशा छोड़ फिलिपसे सन्धि करके समूची सेना सहित स्काटलेण्ड पर चढ़ाई करनी पड़ी। अगर डनबारके अर्लकासपेट्रिक जैसे स्काटलेण्डप्रवासी विश्वासघातक नार्मन जागीरदार धन और सेनासे एडवर्डकी सहायता न करते, अगर फालकर्कके युद्धमें जातीय दलमें सेनापतित्वको लेकर परस्पर फूट न फैलती, अगर मानटीथ वीरवर वालेसको एडवर्डके चरणोंमें न बेच देता तो आजके इतिहासमें न जाने क्या होता; तब स्काट-

लेण्डका भी जातीय जीवन लोप न होता। विश्वासघातकता! तेरी महिमा अपार है। तूने जयचन्द्र बन कर भारतका सिंहासन यवनोंको सौंपा। विभीषण बनकर लङ्का रामके हाथमें दी। मानटीथ बन कर वालेसका शरीर एडवर्डके चरणोंमें बेचा। किङमिन और कासपैट्रिककी शकलमें स्वदेशकी स्वाधीनता विदेशियोंके चरणोंमें डाल दी। पिशाचि! तेरे लिये असाध्य कुछ नहीं है। तेरे आनेसे मनुष्य भीषण राक्षस बन जाता है। तब वह अपनाही खून आप पीता है अपनाही मांस आप खाता है! पिशाचि! इस जगतमें सब नाशवान हैं किन्तु क्या तेरा नाश नहीं?

दूसरा अध्याय।

वालेसके लड़कपन और जवानीके अद्भुत कार्य्य।

वालेसने स्काटलेण्डके किसी पुराने जागीरदारके वंशमें जन्म लिया था। इतिहाससे इतना पता लगता है कि रिचार्ड वालेन्स या वालेस, वालेस वंशका आदि पुरुष था। आर्डिङ्ग नदीके किनारे किलमरनक नगरके निकट रिकार्टन नामक गांवमें उसका किला था। वह गांव रिचार्ड टौन या रिचार्ड नगरके नामसे प्रसिद्ध हुआ। रिकार्टन रिचार्ड टौनका अपभ्रंश है। १२५९ ईस्वीमें एडम वालेस नामका उस वंशका एक आदमी एडम और मलकम नामक दो पुत्र छोड़ कर मर गया। एडम पैत्रिक जायदादका मालिक बन कर रिकार्टनके गढ़में रहा। दूसरा पुत्र मलकम एलरस्ली किलेका मालिक हुआ। मलकमने आयर नगरके शेरिफ सर रोनाल्ड क्राफोर्डकी लड़की जेन क्राफोर्डसे विवाह किया। इसी विवाहका फल एलरस्लीका नाइट सुप्रसिद्ध सर विलियम वालेस था।

जेनके गर्भसे मलकमके तीन पुत्र हुए—सर मलकम वालेस सर विलियम वालेस और जान वालेस। सबसे छोटे जानको १३०७ ईस्वीमें इङ्गलेण्ड नरेशने फांसी पर चढ़ा दिया।

हमारे ग्रन्थके नायक सर विलियम वालेसने सम्भवत: १२७० ईस्वीमें स्काट राज तीसरे अलकजेण्डरके मरनेसे कुछ पहले जन्म लिया। इस हिसाबसे जब वह विश्वासघातक मानटीथ द्वारा १३०५ ईस्वीमें एडवर्डके हाथमें सौंपा गया उस समय उसकी उमर ३५ वर्ष थी। इतिहास-क्षेत्रमें जब वह पहले पहल आया तब उसकी उमर २७ वर्ष थी। ८ सालके अन्दर उसने स्काटलेण्डमें एक नया युग बर्ता दिया।

ऐसा कहते हैं कि वालेसने लड़कपनमें अपने चाचा दुनिपेसके पुरोहितके पास रहकर ग्रीक लाटिन प्रभृति प्राचीन साहित्यसागर मन्थन करके रत्न चुन चुन कर अपने चित्त भाण्डारमें भरे थे। सन् १२९१ ईस्वीकी ११ वीं जूनको ६ राज प्रतिनिधियोंके स्काट-लेण्डकी हुकूमत छोड़ देने पर एडवर्ड स्काटलेण्डके चक्रवर्त्ती राजा हुए और उसी समय उन्होंने सर्वत्र यह आज्ञा जारी की कि हर स्काटलेण्डवासीको मेरे सामने कोर्निश करके और घुटना टेक कर मेरी अधीनता स्वीकार करना होगी। वालेसके पिता एलरस्लीके अधीश्वर सर मलकम वालेससे यह आज्ञा सही न गई। वह एड-वर्डके सामने घुटना टेकनेके बदले दूसरी सजा अच्छी समझ कर बड़े बेटे सहित डम बार्टन शायरके लेनक्सोके किलेमें चला गया। इधर उसकी सहधर्म्मिणी मझले बेटे वालेसको लेकर बूढ़े बाप क्राफोर्डके यहां चली गई। छोटा लड़का जान पहलेही वहां भेजा जाचुका था। क्राफोर्डने इन लोगोंको बड़े यत्नसे अपने मकानमें रखा। जब वालेस माता सहित किल्स पिण्डी नगरमें था तब वह दण्डीके विद्यालयमें भेजा गया। उस समयके विद्यालय गिरजेके साथ होते थे। उच्चश्रेणीके बालक और पादरीपुत्रही उनमें पढ़ने पाते थे। इस समय उसकी उमर करीब १६ वर्ष थी। उसकी

भविष्य दीक्षा गुरु और जीवनचरित लेखक जान ब्लेयरसे उसका यहीं प्रथम परिचय हुआ।

इस समय एडवर्डने स्काटलेण्ड पर बड़ी कड़ाई शुरू की। उनकी उद्धत सेना दुर्गरक्षित नगरों पर आक्रमण करके भयानक अत्याचार और मार काट करने लगी। उस नई जवानीमेंही वालेसका हृदय इस जातीय पीड़ासे बहुत व्यथित हुआ। वह गाल पर हाथ धर कर कभी कभी स्वदेशकी भविष्य चिन्तामें निमग्न हो जाता था। ऐसा कहते हैं कि उसने विद्यालयमें पढ़ते समय यथेच्छाचारी सैनिकोंका सामना करनेके लिये सहपाठियोंका एक छात्र-समाज बनायाथा। पूर्वोक्त जान ब्लेयरकी तरह सरनील केम्बेल भी उसका सहपाठी था। वालेस तभीसे हमेशा तलवार और छुरा बांधता था। क्योंकि एडवर्डके सैनिकोंके साथ किशोरावस्थासेही उसकी छेड़ छाड़ होने लगी थी इस बीचमें कितनेही वालेसकी तलवारके शिकार भी होचुके थे।

वालेस एक दिन कहींसे डंडीको लौटरहा था कि डंडीके गवर्नर सेलबाईके पुत्रने उसपर आक्रमण किया। कम्बरलेण्ड निवासी सेलबाई एलवर्डकी अधीनता स्वीकार करके उनकी कृपासे डंडी और फोर फारके किलेका मालिक हुआ है। गवर्नर सेलबाई लालच और उसके पुत्र घृणा और अनुचित घमण्डके कारण प्रजाकी आंखोंमें कांटेसे लगते थे। उस दिन गवर्नर-कुमार चार साथियों सहित खेलता था इतनेमें वालेस सुन्दर हरी पोशाक पहने और हथियार बांधे उधरसे जानिकला। गवर्नर के पुत्रसे यह देखा न गया वह वालेसको कहने लगा—"अरे गर्वित स्काट! यह सज धज यह वीरोचित अस्त्र शस्त्र दासके योग्य नहीं है। सियारको शेरकी छाल ओढ़ना कभी शोभा नहीं देता।" यह कहकर वह ज्योंही वालेसका छुरा छीननेको झपटा त्योंही वालेसने उसकी गर्दन पकड़कर तलवारसे काट डाली। लाश जमीन पर पड़ीरही और वालेस वहांसे भागा। वह बचपनमें जिस चाचाके

घर रहता था भागा भागा वहीं पहुंचा। चाचीने उसे जनाना पोशाक पहना कर चरखा कातनेको बिठा दिया। उसका पीछा करने वालोंने आकर उस घरको अच्छी तरह ढूंढ़ा पर वालेस का कहीं पता न पाकर अफसोस और निराशाके साथ लौट गये। तब उसकी चाचीने रातको उसे डी नदी पार करा दिया। वालेस कुशल पूर्वक किल्सपिण्डी नगरमें माताके पास चला गया।

यहां उसकी माता और भाईबन्द उस वारदातकी बात सुनकर बहुत डरे। वहां रहनेसे पकड़े जानेका अन्देशा जानकर भाईबन्दोंने उन लोगोंको वहांसे चले जानेकी सलाह दी। वालेसकी माता पुत्र सहित बैरागिनीके भेषमें तीर्थ यात्राके बहाने अनेक देशोंमें घूमती हुई दुनिपेसमें आपहुंची। यहां वह लोग आदर पूर्वक रखे गये। जबतक उनका भाग्य न पलटे तबतक वहीं रहनेकी उन्हें सलाह दी गई। अभागिनी जेनने यहीं लाउडन पहाड़का शोचनीय युद्ध समाचार सुना। इस युद्धमें उसका पति और बड़ा पुत्र अंगरेजोंके हाथ मारेगये। पिता और बड़े भाईका मरना सुनकर वालेस बड़ाही शोकातुर हुआ। परशुरामने जैसे पितृ-घाती क्षत्रियके रक्तसे पिताका तर्पण किया था हमारे नये वीरने वैसेही पितृघाती अंगरेजके लोहूसे पिताका शोकानल बुझानेकी प्रतिज्ञा की। चारों ओर देशमें शत्रुओंका अत्याचार सुनकर वह लोग दुनिपेसकी मेहमानदारी छोड़नेको लाचार हुए। आश्रय-दातासे वालेसने कहा—“मेरे पिता और भ्राताको अंगरेजोंने मार डाला है आज मैं ईश्वरके सामने शपथ करता हूं कि अगर मैं जीता रहा तो जरूर इसका बदला लूंगा।”

दुनिपेस छोड़कर वह लोग अपने निवासस्थान एलरस्लीके किले में आये। वहां वालेससे उसके मामा सर रोनाल्डकी मुलाकात हुई। वह उस समय आयरके गवर्नर पर्सीकी निगरानीमें वहां रहते थे। बिचारी जेनने अपने लिये भी पर्सीसे शान्तिकी भीख मांगनेके लिये भाईको कहा मगर वालेस इस बात पर राजी न

हुआ। उसने ऐसे समयमें शत्रुसे शान्ति मांगकर बदला लेनेका समय आलस्यमें खोना कायरका काम समझा। वह माताको एलरस्लीके किलेमें छोड़कर मामाके साथ रिकर्टनमें बूढ़े चाचा सर रिचार्डके गढ़में गया। आर्विङ्ग नदीके किनारे एक ऊंचे स्थान पर रिकर्टनका किला था। वालेसके चाचाके पोते जान वालेसका, पासके क्रेगी दुर्गकी उत्तराधिकारिणीसे व्याह होगया था तभीसे वालेस वंश रिकर्टन दुर्ग छोड़कर क्रेगीमें रहने लगा। तबसे रिकर्टनका किला बेमरम्मत पड़ा रहा फिर गिर गया। अब उसका निशान भी नहीं है।

जो हो, वह वालेसकी एक यादगार था। १२९२ ईस्वीके फरवरी महीनेमें वह यहां आया और एक महीना भी नहीं बीता था कि एक अनसोची घटनाके कारणसे उसे वहांसे भागना पड़ा। एक दिन वह आर्विङ्ग नदीमें मछली मारने गया था। जाल ढोने के लिये सिर्फ एक लड़का उसके साथ था। वह बहुतसी मछलियां मार चुका था कि इतनेमें गवर्नर पर्सी उधरसे जानिकले वह दल बल सहित आर्विङ्गके किनारे किनारे ग्लासगोका मेला देखने जाते थे। उनके शरीररक्षक पांच सवार वालेसके पास आकर तमाशा देखने लगे। जालमें बहुतसी अच्छी अच्छी मछलियां फंसी देख कर उन लोगोंने गवर्नरके लिये मांगीं। वालेसने कुछ मछलियां देदेनेके लिये लड़केको कहा। उन्होंने सब मांगीं। कहा—"इस बार जालमें जितनी मछलियां आई हैं सब गवर्नरको मिलनी चाहियें, फिर तुम चाहे जितनी मछली मारकर लेजाओ।" इस पर वालेसने बिगड़कर कहा—"आज यह मछलियां एक बूढ़े निमन्त्रित नाइटके भोजमें जायंगी, इस लिये अगर तुम लोग भलेमानस हो तो जितनी दी है उतनीही ले जाओ।" गर्वित अङ्गरेजोंने यह बात न मानी। एक सवारने घोड़ेसे उतरकर बालकसे सब मछलियां छीन लीं। वालेस बोल उठा—"तुम्हारा यह बड़ा अन्याय है।" अङ्गरेज बोला—"क्या? मेरा अन्याय? दुष्ट! तो यह ले!"

होगया। काराध्यक्षने उसे मरा समझ कर कैदखानेकी दीवार परसे पासके खेतमें फेकवा दिया। वह वैसाही वहां पड़ा था कि इतनेमें उसकी धाय आयर निवासिनी मिउटन खबर पाकर उसकी लाश देखने आई! उसने अपने घरमें कबर देनेके बहाने वालेसकी देह लेजानेकी आज्ञा काराध्यक्षसे ली। वहां लेजाकर उसने और उसकी लड़कीने दिन रात सेवा करके वालेसको जिलाया।

वालेसने अच्छीतरह आराम होनेपर घोड़े, रुपये और हथियार के लिये रिकर्टनमें बूढ़े चाचाके पास जानेका इरादा किया। इधर प्राण बचाने वाली धाय और उसकी लड़कीको एलरस्ली दुर्गमें माके पास भेज दिया। धायके घरमें एक पुरानी तलवार थी सिर्फ वही लेकर वह रिकर्टनकी तरफ चला। राहमें ग्लासगोके मेलेसे लौटते हुये स्क्वायर लांगकासल और उसके दो नौकरोंने उसपर हमला किया। लांगकासल उसे जबरदस्ती आयर लेजानेकी चेष्टा करने लगा। वालेसने लाचार होकर आत्मरक्षाके लिये लांग-कासल और उसके एक नौकरको पुरानी तलवारसेही काटडाला। दूसरा नौकर जान लेकर भाग गया।

वालेसको रिकर्टनमें बूढ़े चाचा रिचार्ड और उनके दो पुत्रोंने आदरसे रखा। इधर उसका आना सुनकर करसबीसे उसके मामा रोनालड और एलरस्लीसे उसकी मा भी आगई। वालेसकी अद्भुत रिहाई सुनकर और उसके बाद आज उसे देखकर सबके आनन्दकी सीमा न रही। उस समय सबकी आंखोंसे आनन्दके आंसू बहने लगे।

तीसरा अध्याय।

स्काटराज बेलियलका परिणाम—बारविक और डनबारका युद्ध स्काटलेण्डकी शोचनीय दशा।

हम पहले कह आये हैं कि एडवर्डने बेलियलको स्काटलेण्डका सिंहासन दिलाया। सन् १२९२ ईस्वीकी २० वीं नवम्बरको बेलियल शपथ करके इङ्गलेण्डेश्वरके जागीरदार बनकर स्काटिश राज्यके मालिक बने। उसी महीनेकी ३० वीं तारीखको उन्होंने स्कोन नामक शिलापट्ट पर बैठ कर स्काटलेण्डका राजमुकुट पहना। २६ दिसम्बरको न्यूकैसलके किलेमें उन्हें भविष्यमें अपनी बात कायम रखनेके लिये एडवर्डके सामने दुबारा शपथ करना पड़ा।

किन्तु यह राजमुकुट उनके सिर पर कांटासा मालूम होने लगा। बात बातमें एडवर्ड उनको मामूली बैरनकी तरह इङ्गलेण्डके दरबारमें बुलाने लगे। राजसिंहासन बेलियलके कष्टका कारण होगया। अन्तमें जब उन्हें एडवर्डके साथ सेना लेकर युरोप जानेकी आज्ञा दी गई तब उनकी धीरता जाती रही। उक्त कायरके जीमें भी वीरताकी आग भड़क उठी। उन्होंने स्काटिश पार्लीमेंटसे सलाह करके १२९६ ईस्वीकी ५ वीं अप्रेलको आम दरबारमें एडवर्डकी अधीनता त्याग दी और फ्रांस नरेश फिलिपसे एक बड़ी सन्धि करली। इस कामका नतीजा सोच कर स्काटलेण्डवासियोंने एक स्वरसे इङ्गलेण्ड पर धावा करनेका मनसूबा बांधा। जातीय विपद जान कर जातीय स्वाधीनताकी रक्षाके लिये उन्होंने जीजानसे प्र [illegible] किया। इस खटकेसे कि कहीं एडवर्डकी अपार सेना आकर स्काटलेण्डको तहस नहस न करने लगे, उन लोगोंने पहलेहीसे इङ्गलेण्ड पर हमला करके उसीको लड़ाईका मैदान बनाना चाहा। जो चाहा वह बहुत जल्द कर दिखाया। उन्होंने कम्बर-

लेण्ड लांघ कर न्यूकैसलके किले पर हमला किया और उसमें आग लगा कर ८ अप्रैलको नारदम्बरलेण्ड प्रदेशमें पहुंच कर सेनाके किनारे और हैकसम नगरमें लूट पाट आरम्भ कर दी।

एडवर्डने यह खबर पातेही क्रोधसे अधीर हो बारविक नगरके निकट बड़ी भारी फौज जमा की। स्काटलेण्ड लार्गसकी लड़ाईके बाद फिर रणभूमिमें नहीं उतरा था। इसलिये स्काटिश सेना यद्यपि वीरता और साज सामानमें एडवर्डकी सेनासे किसी बातमें कम न थी तथापि शासन और बहुदर्शितामें युरोपके रणक्षेत्रमें वीर दर्पी एडवर्डकी सेनासे उसकी बराबरी नहीं हो सकती। तौ भी बारविक नगरके घेरेके समय स्काट सेनाने घेरा डालनेवाले एडवर्डके १६ जङ्गी जहाज बरबाद कर दिये। एडवर्डसे और सहा नहीं गया उन्होंने बड़े वेगसे नगरमें घुसनेकी चेष्टा की किन्तु उनकी चेष्टा व्यर्थ हुई। अङ्गरेजी बल जो काम नहीं कर सकता अङ्गरेजी हिकमत उसे पूरा करती है। एडवर्डने बलसे बारविक लेनेमें असमर्थ होकर हिकमत लड़ाई। अबके वह जीत गये। इस नगपरर अधिकार करके उन्होंने नगर निवासियों पर जैसा निष्ठुर आचरण किया था, अपने यम सदृश सिपाहियोंको लोगों पर जिस निर्दयताका व्यवहार करनेकी आज्ञा दी वह पढ़ कर हमारा खून सूख जाता है, उसके पढ़नेसे निर्दय पामरकाभी हृदय पिघलता है। अङ्गरेजोंने काली कोठरीकी हत्या लेकर सिराजुद्दौलाको नर पिशाच बनाया है किन्तु वह हत्या सिराजुद्दौलाकी इच्छासे नहीं हुई। वह उसकी असावधानीसे हुई। किन्तु एडवर्डके हुक्मसे उस दिन बारविकमेंके बालक बूढ़े बनिता तक भी तलवारके हाथसे न बची। एडवर्डके हुक्मसे बारविकमें सत्रह हजार निरस्त्र निरीह मनुष्य कतल किये गये। २८ वीं अप्रैलको सुप्रसिद्ध डनबरकी लड़ाईमें दोनों दलका घोर संग्राम हुआ। इसमें वारेन और सरके दो अर्ल इङ्गलेण्डकी बड़ी सेनाके नायकथे। उन्होंने अशिक्षित और बेतरतीब स्काटिश सेनाका असामयिक आक्रमण व्यर्थ करके उसे अच्छी तरह

हराया। वालिसके जीवनी लेखक अन्ध कवि हेनरीकी रायमें इन दोनों युद्धोंके पराजयका प्रधान कारण जातीय विश्वासघातकता है।

स्काटिश सिंहासनका प्रधान ग्राहक मार्चका अर्ल एडवर्डसे न जा मिलता और डनवर किलेका गवर्नर सर रिचार्ड सिवर्ड अङ्गरेज सेनापति वारेनके हाथमें डनवरका किला न सौंप देता तो न जाने इस युद्धका परिणाम क्या होता। यह विश्वासघातक सिवर्ड स्काट नरेशोंका एक आश्रित नार्मन जागीरदार था। इसलिये स्काटलेण्डके जातीय मान और जातीय स्वाधीनताकी इसे ज़रा भी परवा न थी। और मार्चका अर्ल यद्यपि एक खान्दानी स्काट जागीरदार था तो भी उसने नीचा देखकर बेलियलके अधीन रहनेसे इङ्गलण्डके बादशाहकी शरणमें जाना अधिक इज्जतका काम समझा। जो हो, इस जातीय विश्वासघातके कारण डनबरके मैदानमें दस हजार स्काट मारे गये। निर्लज्ज बेलियलने पिछले कामोंके लिये क्षमा मांग कर प्राण बचाया किन्तु पुत्र सहित लन्दन टावरके भयानक कैदखानेमें डाल दिया गया और अगणित स्काटिश जागीरदार जञ्जीरोंमें बांध कर इङ्गलण्ड भेजे गये।

ऐसा कहा जाताहै कि एडवर्डने ब्रूसके पुत्रको बागी बेलियलकी गद्दी देनेका लोभ देकर ब्रूस और उसके साथियोंको अपनी तरफ कर लिया था। इसी लालचसे डनबरकी लड़ाईमें ब्रूस और उसकी सेना जातीय दलसे लड़ी थी। लड़ाईके बाद ब्रूसने एडवर्डको प्रतिज्ञाका स्मरण कराया तो विजयी एडवर्ड कह बैठे "क्या! मुझे और कोई काम नहीं था कि मैं तुम्हारे लिये जातीय धन और जातीय रुधिरसे राज्य जीतने जाता?" ब्रूस अपनासा मुंह लेकर वहांसे चलदिये तबसे वह अपनी इङ्गलण्डकी जमीन्दारीमें चुप चाप रहने लगे! फिर उन्होंने किसी राजनीतिक काममें हाथ नहीं डाला। उनके पुत्र राबर्ट ब्रूस इसी समय माताके सम्बन्धसे कारिकके अर्ल कहलाये। इस समय उनकी उमर २३ से ज्यादा न थी। अब उन्होंने पिताके वैराग्यसे सन्तुष्ट न होकर उनसे अलग स्वाधीनता पूर्वक काम करना शुरू किया।

डनवर विजयके बाद वेल्स और आयर्लेण्डसे १५ हजार सेना एडवर्डसे आमिली। एडवर्ड उसे लेकर सवा पांच महीने समस्त स्काटलेण्डको रौंदते फिरे। सिर्फ लोगोंका जानो माल बरबाद करकेही बाज न आये। उन्होंने जातीयजीवनमें फिर प्राण डालनेवाले जोशीले पत्रादि जला डाले और जातीय राजभक्तिमें उत्तेजना देनेवाली स्कून नगरकी सुप्रसिद्ध अभिषेक शिला वेस्टमिनिस्टरमें भेज दी।

लौटते समय वह जान वारेन और सरके अर्लको स्काटलेण्डके शासनकर्त्ता, क्रेसिंहमको खजांची, अरमेसबाईको प्रधान विचारपति, वारेनके भानजे पर्सीको गालवे प्रदेशका रक्षक तथा आयरका शेरिफ और क्लिफोर्डको पूर्व स्काटलेण्डका निगहबान बना गये। मानो उन्होंने स्काटलेण्डको सब तरहसे कान बांध लिया। मानो वह जञ्जीर तोड़ कर स्काटलेण्ड फिर न उठेगा! मानो फिर कभी इसके भाग्याकाशमें सौभाग्य-सूर्य्य उदय न होगा!

चौथा अध्याय।

वालेसकी साधना।

लाउडनगिरिका युद्ध।

जिस समय वारविक और डनवरमें तुमल संग्राम चलता था उस समय साधकवर वालेस गहरी साधनामें निमग्न था। वह पहलेही समझ गया था कि एडवर्डकी सुशिक्षित और लड़ाकी सेनासे स्काटलेण्डकी अशिक्षित और नौसिख सेना सम्मुख समरमें कभी जीत न सकेगी। यह जान कर उसने दृढ़प्रतिज्ञ, कष्टसहिष्णु वीर जवानोंकी एक सेना बनानेका इरादा किया। इधर उसकी अलौकिक वीरता, अमानुषिक बल, अटल सहिष्णुता और सबसे

बढ़कर उसके अदम्य स्वजाति प्रेम और स्वदेशानुरागका यश सर्वत्र फैल गया था इससे झुण्डके झुण्ड वीरोंने आकर उसे अपना नायक बनाया। सचमुच एडवर्डके अत्याचारी सिपाहियोंके जुल्म से और अपने पिता भ्राताके मारे जानेसे वालेसके हृदयमें स्वजाति प्रेम और स्वदेशनुरागका भाव इतना बढ़गया था कि जबतक शत्रु दबाये नहीं जाते हैं तबतक यह जिन्दगी उसे भारी मालूम होने लगी। वह अपने क्रोधकी आगसे आप जलने लगा, स्वजातिके चरणोंमें प्राणन्योछावर करनेसेही, न्योछावर कियाप्राण स्वजातिके उद्धारमेंलगा देने की इच्छारखनेसेही वालेस अमर होगया था। इसीसे वह अकेले लाख आदमियोंकी ताकत रखता था। उस महाबली स्वदेशानुरागमें मस्त दैवशक्ति सम्पन्न वालेसके झण्डेके नीचे धीरे धीरे कुछ स्वजातिप्रेमी आ खड़े हुए। उसी दलको लेकर नरदेव वालेसने विपक्षियोंके साथ गेरिला युद्ध आरम्भ किया।

आयरकी दुर्घटनाके बाद वालेस रिकार्टनमें आकर माके साथ रहता था, वहीं उक्त वीर वृन्द आकर उससे मिले। उसमें सर रिचार्डके तीन पुत्र एडम, रिचार्ड और सायमन और रावर्ट बायड तथा नेलाण्ड मुख्य थे। वालेसने मातासे विदा लेकर इन कई साथियों सहित रिकार्टनसे सुविख्यात रणभूमि मकलिनमूरकी तरफ कूच किया।

सन् १२९६ ईस्वीमें गर्मीका मौसिम आना चाहता है। प्रकृति मानो चारों ओर हास्य फैला रही है। एक ओर स्काटलेण्डके बाशिन्दे दुर्भिक्षकी ज्वालासे तड़प रहे हैं, दूसरी ओर खान पानसे तृप्त एडवर्डकी सेना ऐशमें मस्त है। यह दृश्य जातीय दलको बड़ाही दुःखदायी हुआ। क्रोधसे वालेसका हृदय फड़क उठा। वह अवसर ढूंढ़ने लगा। बहुत जल्द अवसर भी आगया।

उनलोगोंके मेकलिन मूरमें पहुंचनेके कुछही दिन बाद समाचार मिला कि फेनविक नामका एक अंगरेज सैनिक आयरके शेरिफ

पर्सीके लिये कार्लाइल नगरसे सेना सहित कई गाड़ी सामान लेजा-रहा है। इसी आदमीके हाथसे वालेसका पिता मरा था। इस लिये वालेस इस खबरसे बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उसी वक्त उसपर हमला करनेका बिचार किया। वह लाउडनकी ओर चला। सिर्फ पचास उसके बीर साथ थे। शामको वह लोग पासके एक जंगलमें छिपरहे। रातभर वहीं रहकर सुना कि वह सेना निकट आगई है।

इधर उषादेवी पूर्व दिशा लाल करके गगन पटपर आरही है उस पवित्र समयमें उस छोटेसे देशभक्त दलने घुटना टेककर भक्ति पूर्वक ईश्वरकी उपासना की और उसका पवित्र नाम लेकर प्रतिज्ञा की कि यातो उस युद्धमें जय प्राप्त करेंगे या प्राणदेंगे। भारतमें भी स्वजाति प्रेमके ऐसे चमकते हुए दृष्टान्तका अभाव नहीं है। चिलियान वालेकी लड़ाई शुरू होनेसे पहले बीर चूड़ामणि सिख अपना अपना श्राद्ध तर्पण आप करके मैदानमें आये थे। उन्होंने भी उस युद्धमें जीतेंगे या मरेंगे—इनमेंसे पिछली बात स्थिर कर ली थी।

वालेसने फेनविकके हाथसे अपने पिताके मारे जानेकी घटना बयान करके साथियोंका जोश चौगुना करदिया। वह बीर दल बड़े आग्रहसे अंगरेजी सेनाकी बाट देखने लगा। फेनविक दो सौ अंगरेजी सवारोंके साथ आरहा था। वह सबेरेकी सुनहली किरणोंमें दूरसे वालेसको पहचानकर प्रसन्न हुआ। सोचा यही दुष्ट हमलोगोंके कैदखानेसे बच गया है, अबके मैं इसको कैद करके पर्सीके पास लेजाऊंगा। इसी आशासे फड़क कर फेनविकने लदीहुई गाड़ियोंको बीस सैनिकोंके जिम्मे रखकर बाकी १८० सवारों सहित उस क्षुद्र देशभक्त दलपर आक्रमण किया।

वालेसका सर्वाङ्ग बख्तरसे ढका है मस्तकपर लाल सिंह अङ्कित हेलमेट शोभायमान है, हाथमें एक तिकोनो ढाल, दुहत्थी तलवार, गदा और बर्छा और कमरमें तेज छुरा है। उसके सहचरोंके पास

भी ऐसेही अस्त्र शस्त्र हैं। वह सब अंगरेजों पर जोरसे टूट पड़े। फेनविकने सोचा था कि तेजीसे घोड़े दौड़ाकर उस बीर दलको दलमल डालेंगे किन्तु बात उलटी हुई देखकर वह बहुत बिस्मित हुआ।

स्काटोंका आक्रमण बड़ा भयानक हुआ। वह व्यूह तोड़कर बड़ेबेगसे सेनामें आ घुसे। तितर बितर अंगरेज सवारोंने झट उन्हे घेर लिया। परन्तु वालेसके बर्छे और तलवारसे अनगिनत सवार जमीन पर गिरने लगे। अन्तमें उसकी नजर सबसे ऊंचे घोड़े पर सवार फेनविक पर पड़ी। वह बीचके सैनिकोंको मारता काटता क्रुद्ध सिंहकी तरह गर्जता फेनविकके सामने आया। उसकी तलवारसे फेनविक घोड़ेसे नीचे गिरा और उसी वक्त बायडने पहुंच कर उसके शरीरमें तलवार घुसेड़ दी। फेनविककी यह दशा देखकर अंगरेजी सेना चारोंओरसे बायड पर टूट पड़ी। वालेसने आकर उसका उद्धार किया। दोनों बीर केसरी घेरनेवालोंको मारते काटते व्यूहसे बाहर होगये। अंगरेज सवार नायककी मृत्युसे उदास होकर भी दूसरे सेना नायक बोमण्डका उत्साह पाकर बड़ी तेजीसे लड़ने लगे। अन्तमें रिकार्टनके युवक वालेसके हाथमें बोमण्ड भी धरती पर आगिरा। अंगरेजी तेज इससे भी घटनेवाला नहीं। अंगरेज सवार घोड़ेसे उतर कर पैदल सिपाहीकी तरह घमासान युद्ध करने लगे। किन्तु वालेस और उसके बीरोंकी असाधारण बीरताके सामने सब हार गये। मैदानमें सौसे अधिक अंगरेजोंकी लाशें छोड़कर बाकी अंगरेज इधर उधर भाग गये। जातीय दलके केवल तीन आदमी काम आये थे।

फेनविकके साथ जो कुछ माल मता था सब उन स्काटोंके हाथ लगा। कई छकड़े, कोई सवासौ सजे सजाये घोड़े, सोना शराब् और खाने पीनेकी बहुतसी चीजें उन्हें मिलीं। यह सब चीजें उन्होंने क्लाइडेसडेल बनमें छिपा रखीं। जो अस्सी अंगरेज सैनिक लड़ाईसे भाग गये थे वही सबसे पहले आयरके गवर्नर पर्सीके पास यह शोकसमाचार लेगये।

कर उसके सिरपर ऐसी मारी कि उसका सिर कटकर गले पर लटक आया। वालेस बेधड़क धीरे धीरे अपने दलमें आगया। सिर्फ १६ आदमी उसके साथ आये थे। उसी वक्त बहुतसे हथियार बन्द सैनिकोंने आकर उसे घेर लिया। दोनों दलमें तुमुल युद्ध होने लगा। यद्यपि वालेसके दलमें बहुत आदमी न थे तथापि जितने थे सब विशेष परीचित और अस्त्रशस्त्र चलानेमें सिद्धहस्त थे। इसलिये उनकी तलवारोंसे बहुतसे अङ्गरेजोंको धूल चाटनी पड़ी। जल्दही पराजित अङ्गरेज सेनाकी मददके लिये किलेसे एक टुकड़ी सेना पहुंच गई। वालेस अब वहां ठहरना उचित न समझकर दलबल सहित चल दिया। कोई २८ अङ्गरेजोंकी लाशें जमीन पर गिराकर वह छोटा मोटा वीरदल आत्मरक्षाके लिये लांगलन बनकी तरफ चला गया।

सबने खयाल किया कि यह वही छलिया वालेस है। नहीं तो और कौन इतने थोड़े साथियोंको लेकर ऐसा गजब कर सकता है? इस युद्धमें यद्यपि पर्सीके तीन रिश्तेदार मारे गये तथापि अपनेही लोगोंको इसका कारण समझकर पर्सी वालेस पर सन्धि तोड़नेका दोष न लगा सके। उन्होंने सर रेनाल्डको इस किस्म की चिट्ठी लिखी—"तुम वालेसको किसी आमबाजार या मेलेमें जानेसे मना करदो क्योंकि ऐसी जगहोंमें उनके जानेसे दोनों दलोंमें ऐसा फसाद हुआही करेगा।" यह चिट्ठी पाकर रेनाल्ड करस्बी में गये, वालेस उस समय लांगलन बनसे आकर वहीं रहता था। उन्होंने वालेसको वह पत्र दिखाया। रेनाल्ड पर वालेसकी बडी भक्ति थी इसलिये उसने उनको यह कहकर तसल्ली दी कि जबतक मैं आपके आश्रयमें रहूंगा तबतक ऐसा कोई काम नहीं करूंगा जिससे आपका कुछ नुकसान हो।

पांचवां अध्याय ।

ग्लासगोमें सभा ।

पर्सीके नौकरोंकी हत्या—अर्ल मलकमसे वालेसकी मुलाकात—गार्गुनक और किर्क वेडन किले पर अधिकार—शार्टउडशा का युद्ध—सैन्टजानस्टनका शत्रुके हाथमें पड़ना ।

सन् १२९६ ईस्वीमें सितम्बरका महीना है। स्काटलैण्डके शासनके लिये कुछ कानून बनानेको ग्लासगो नगरमें अङ्गरेजोंकी एक बड़ी भारी सभा जुडी। डरहमके पादरीने उसके सभापतिका आसन ग्रहण किया। सब प्रदेशोंके शेरिफ इस सभामें बुलाये गये थे। इस लिये आयरके खान्दानी शेरिफ सर रेनाल्डके पास भी बुलावा गया। वह वालेस और दो सहचरों सहित ग्लासगो जारहे हैं। एक लड़का रेनाल्डका सुन्दर घोड़ा लेकर आगे रवाना हो चुका है, वालेसने दो साथियों सहित उस लड़केको आ लिया है, बूढ़े रेनाल्ड पीछे पीछे आते हैं। रास्तेमें पर्सीके कुछ नौकरोंसे भेंट होगई। कीमती चीजोंसे लदे एक छकड़ेकी रखवालीमें पर्सीके पांच प्यादे और तीन सवार ग्लासगोकी तरफ जाते थे। गाड़ीका घोड़ा बहुत थक गया था इससे उन्होंने रेनाल्डका घोड़ा उसमें जोत लेना चाहा। वालेसने मना किया। कहा सन्धिकी हालतमें ऐसी राहजनी क्षमाके योग्य नहीं है। मगर उन्होंने न माना घोड़ेको गाड़ीमें जोत दिया। वालेस गुस्से से लाल होकर ऐसे लुटेरेपनका बदला देनेके लिये रेनाल्डकी राय लेनेको पीछे लौटा। रेनाल्ड म्यूरसाइड तक आगये थे। उन्होंने वालेसको चुप रह जानेके लिये कहा। वालेसने इससे बहुत नाराज होकर उनकी अधीनता छोड़ दी और बदला लेनेका इरादा करके घोड़ेपर चढ़ा वहां आपहुंचा। सर रेनाल्ड वालेसका बेतरह गुस्सा देखकर बहुत

सोचमें पड़े और इस डरसे कि पीछे पर्सी इस मामलेमें उन्हें भी न फंसावें म्यूरसाइडसे एक कदम आगे न बढ़े। उन्होंने वहीं सारी रात वालेसका परिणाम सोचते सोचते बिताई।

इधर वालेस अपने दोनों साथियोंको लेकर जहांसे लौटा था वहां आया। इस बीचमें पर्सीके आदमी कैथकार्टसे जरा आगे बढ़ गये थे। वालेसने खोजखाज कर उन्हें जा पकड़ा। बिना कुछ कहे उन पर टूट पड़ा और कई नौकरोंको मार कर सब चीजों सहित दोनों घोड़े लेकर रातों रात पेड़ोंका पुल बांधकर क्लाइड नदी पार होगया। ग्लासगोके इतने पास रहना किसी तरह उचित न समझा वह साथियों सहित लेनाक्सकी ओर चला। अर्ल मेलकम उस समय उस किलेके अध्यक्ष थे उन्होंने अभी तक एडवर्डकी अधीनता स्वीकार नहीं कीथी इसलिये वालेसके साथियों सहित वहां जाने पर बड़ी खातिर होनेकी सम्भावना थी। किन्तु वह एक बारगी उससे मुलाकात न करके दो चार दिन वहां एक होटलमें ठहरा। इधर पर्सीने यह समाचार सुनकर समझा कि वालेसकाही यह काम है। यह ख्याल करके उन्होंने उसी वक्त सर रेनाल्डके पास दूत भेजा। दूतने आकर देखा कि सर रेनाल्ड मियार्नसमें ठहरे हैं। किन्तु पर्सीके नौकरोंके मारे जानेकी वारदात ग्लासगोसे कुछही दूर पर हुई थी। रेनाल्ड विचारालयमें हाजिर किये गये। परन्तु साबित हुआ कि वह इसमें बिल्कुल निर्दोष हैं और भतीजेकी उस काररवाईकी उन्हें खबर तक न थी।

तीन चार दिन तक ग्लासगोमें सभाका अधिवेशन होता रहा। उस समय वालेस लेनक्समें ठहरा था। उसे खबर मिली कि सभा ने उसकी गिरिफ्तारीके लिये कानून जारी किया है। राबर्ट बायड नेलान्ड वगैरह सभाकी बैठकके समय ग्लासगोमें थे। वह अपने सरदारकी इस विपदसे बहुत फिक्रमन्द हुए। वालेसकी खोजमें वहांसे चुपचाप निकल आये। वालेसके दूसरे साथियोंमेंसे

कौन कहां था इसका ठिकाना न था। ऐसे वक्त वालेसको घबराहट बहुत बढ़ गई।

वह होटल छोड़कर अर्ल मलकमके पास पहुंचा। मलकमने बड़ेही आदरसे उसे लिया। लेनक्स उन दिनों रणबांकुरे वीरोंसे भरापुरा था वह आज भी एडवर्डके प्रतापकी उपेक्षा करताथा। अर्ल ने कहा—"अगर आप लेनक्समें रहना मंजूर करें तो मेरे सब वीर सहचर आपके हुक्म पर चलेंगे।" किन्तु वालेसने नामंजूर किया। जो महात्मा समूचे स्काटलेण्डको शत्रुके हाथसे उबारनेके लिये प्राण की बाजी लगा चुका है वह भला ऐसे छोटे प्रस्तावको क्योंकर मंजूर करता? वालेसने अपना दिली इरादा प्रगट न करके मलकमसे उत्तरकी ओर जानेकी इच्छा प्रगट की।

उत्तर जानेसे पहले उसने गेरिला युद्धके लिये एक छोटी सेना बनानेका विचार किया। रोमिउलस्ने रोमकी नींव डालते समय और शिवाजीने महाराष्ट्र-साम्राज्यकी प्रतिष्ठा करते समय अपना दल बनानेका जो उपाय किया था वालेसने भी ठीक वही उपाय किया। स्काटलेण्डकी स्वाधीनताके लिये जो प्राण देनेको मुस्तैद थे उन सबको उनके दोषोंका कुछ ख्याल न करके वह अपने दलमें मिलाने लगा। यहांतक कि बहुतसे आयर्लेण्डवासियोंको भी शामिल करनेसे न हिचका। जिनलोगोंने वालेसको अपना मन्त्रगुरु बनाया उन सबको उसके सामने शपथ करना पड़ा। यह छोटीसी सेना लेकर वालेस उत्तरकी ओर चलनेको तय्यार हुआ। अर्ल मलकमने बड़े सम्मान सहित उसको विदा किया। उसने उसको बहुतसा धन देना चाहा किन्तु वालेसने नहीं लिया। वह धनका लोभी न था। पर्सीका लूटा हुआ धन निबट नहीं गया था इसीसे उसने मलकमसे धन नहीं लिया बल्कि चलते वक्त गरीब दुखियोंको अपनी तरफसे कुछ कुछ दान कर गया।

स्टर्लिंग सायरसे कुछ दूर अङ्गरेजोंने गार्गुनक नामका एक नया किला बनाया था। १२९६ ई० के दिसम्बर महीनेमें वालेसके साथ

६० जवान उस किलेकी तरफ आये। उस समय कप्तान थरवाल नामके एक फौजी आदमीके ऊपर इस किलेका भार था। किलेकी हालत देखनेके लिये दो जासूस रातको वहां भेजे गये। वह देख आये कि किलेकी खाई पर पुल पड़ा है; यद्यपि दरवाजा बन्द है तथापि प्रहरी बेखबर सोरहे हैं। वालेस उसी वक्त अपने दल सहित पुल पार होकर दरवाजे पर आपहुंचा। दरवाजा मजबूत फाटकोंसे बन्द था। फाटक तोड़कर दरवाजा खोलनेकी बहुत कोशिश कीगई परन्तु फल कुछ न हुआ। अन्तमें स्वयं वालेस उसके पास आया। उसने एकही बारके जोरमें दीवारके कुछ हिस्से सहित फाटक उखाड़लिया। यह देखकर सब विस्मित हुए। वास्तव में शारीरिक बलमें हमारे देशके भीमके साथ सिर्फ वालेसकी ही तुलना होसकती थी। आवाजसे किलेके रखवालोंकी नीन्द टूटी। द्वाररक्षकने झट उठकर वालेसके मुंह पर सोटा मारा। वालेसने उसके हाथके सोटा छीनकर उसीसे उसे यमलोक भेज दिया। फिर उसी सोटेसे कप्तानका भी काम तमाम किया। उसके वीर साथी उसकी मददको पहुंच गये और किलेके सब लोग मारे गये। वालेसके किसी आदमीने बालक या स्त्रीका शरीर नहीं छूआ। पुल उखाड़कर वालेस चार दिन तक उसी किलेमें मौज करता रहा। इस किले पर आक्रमण और अधिकार ऐसी बेखबरीमें हुआ था कि कई दिन तक किलेके बाहर किसीको कुछ मालूम नहीं हुआ। वह लोग किलेदारकी स्त्री और लड़कोंको विदा करके वहांकी कीमती चीजें लूटकर किलेके सब घरोंमें आग लगा, रातको फोर्थ पार हो निकटके जङ्गलमें चले गये।

यह मेथबेनका जङ्गल कहलाता था। यह सेन्ट और जानस्टन पार्थ शहरसे थोड़ी दूरपर था। वालेस बड़ा शिकारी था। उसने यहां आकर एक तीरसे एक बढ़िया हरन मारा और उसका मांस अपने साथियोंको खूब खिलाया। रात वहां बिताकर वह सवेरे अकेले भेष बदलकर सेन्टजानस्टन नगरकी तरफ चला। नगरके निकट

पहुंचकर उसने एक आदमीसे कोतवालके पास खबर भेजी। कोतवालकी आज्ञा लेकर वह नगरके दरवाजे पर आया। कोतवाल ने स्वागत करके उसका नाम धाम पूछा। उसने नाम बदल कर कहा—"साहब! मेरा नाम विल मालकमसन और मेरे पिताका नाम मालकम है। मैं एड्रिक वनसे आता हूं। रहने लायक जगह ढूढ़नेके लिये उत्तर प्रदेशसे इधर आगया हूं।" कोतवालने कहा— "महाशय! मैं किसी और ख्यालसे आपसे नहीं पूछता हालमें पश्चिम प्रदेशसे वालेस नामके एक पापीने आकर इंगलेण्डके महाराजके सब आदमी मारडाले। ऐसी बुरी खबर आई है इसीसे पूछना पड़ता है।" वालेसने इस ढङ्गसे उत्तर दिया कि कोतवालको कुछ शक न रहा। उसने उसको खुशीसे शहरमें जाने दिया।

सेण्टजानष्टन कैसे कब्जे में आसकता है इसका ठीक करनेके लिये ही वह आया था। किन्तु उसने देखा कि किलेका द्वार बड़ाही मजबूत और दीवार बड़ी मोटी है। यह देखकर उसने फिलहाल उसपर अधिकार करनेका ख्याल छोड़ दिया। यहां सुना कि पर्थ सायरमें अंगरेजोंका किंक्लेवन नामका एक किला है। सर जेम्स बटलर नामका एक निर्दयी नाइट उन दिनों उसका अफसर था। वालेसने सुना कि उसी दिन सेण्टजानष्टनसे एक टुकड़ी अङ्गरेजसेना वहां जायगी। यह सुनतेही उसने उस पर रास्ते में हमला करने का विचार किया और मकान मालिकसे विदा होकर मेथवनकी तरफ चला गया। वह अतिवक्त किसीसे कुछ कहकर नहीं आया था इससे उसके साथियोंको बड़ी फिक्र हुई थी। दूरसे वालेसका बिगुल सुनकर उनकी जानमें जान आई। वालेस बिगुल बजाते बजाते ज्योंहीं जंगलमें घुसा त्योंहीं चारों ओरसे उसके साथी आ पहुंचे। उसने उनसे अपना इरादा जाहिर कर दिया। वह लोग झट तय्यार होकर कटार बांध जंगलसे निकले।

वह लोग टे नदीके किनारे सघन वनमें छिपकर अङ्गरेजोंका रास्ता देखने लगे। पहले तीन सवार आये इसके बाद हथियारबन्द

नया अङ्गरेज रिसाला दिखाई दिया। वालेस और उसके साथी शेरकी तरह उछल कर उस पर आपड़े। इस अचानकके आक्रमणसे अङ्गरेज पहले तो चकरा गये पीछे उन पर बर्छा चलाने लगे और बड़ी फुर्तीसे अस्त्र चलाकर उनको गिरानेका इरादा कर रहे थे कि इतनेमें वालेसने गर्ज कर उनपर आक्रमण किया। इस आक्रमणका जोर अङ्गरेजोंसे बरदाश्त न हो सका। पहले आक्रमणमेंही बहुतसे अङ्गरेज मारेगये। वालेसका बर्छा एक बएक टूट गया तब वह गदा लेकर शत्रुओंपर दौड़ा। मस्त हाथी जैसे सूंड़से सामनेकी सब चीजें तोड़ फोड़ डालता है वैसेही वालेस अपनी प्रचण्ड गदासे अङ्गरेजोंको घोड़ों सहित गिराने लगा। सर जेम्स बटलर इस सेनाके नायक थे। वह घोड़ेसे उतर कर बड़ीही बहादुरीसे लड़ने लगे। किन्तु वालेसकी गजबकी तलवार उनके सिरके बीचमें पड़ी और उनकी देहको दो टूक कर डाला। तो भी अङ्गरेजसेना लड़ती रही। परन्तु स्वजातिप्रेम और स्वदेशानुरागके जोशमें मस्त वीरोंका वेग किसकी ताकत है जो सह सके? अङ्गरेज अन्तमें हारकर मैदानमें ६० साथियोंकी लाशें छोड़कर किर्कविन किलेको भागे। किलेके भीतर हथियारबन्द पुरुष बहुत थोड़े थे। वहां स्त्रियों और पादरियोंकी संख्या ज्यादा थी। वह लोग किलेको दीवार परसे यह लड़ाई देखते थे, अब पुल लटका कर और दरवाजा खोलकर भागते हुए सैनिकोंको आश्रय दिया। किन्तु जब तक पुल लटकाया और द्वार खोला गया तबतक शत्रु मित्र दोनों मिलकर किलेमें घुस आये। वालेस और उसके विजयी सहचरोंने किलेमें पैठकर लड़के स्त्रियों और दो पादरियोंको छोड़ बाकी सबको मार डाला। इस युद्धमें वालेसके सिर्फ ५ साथी मारे गये। किलेके बाहर और भीतर जो लाशें पड़ी थीं वालेसने उनसबको दफन करके पुल उठा लिया और द्वार बन्द करके बेखटके किलेमें रहने लगा।

किलेकी सब कीमती चीजें लूटकर रातको पासके साटँउडसा नामक बनमें छिपा आया। लौटकर कैदियोंको रिहाई देकर किलेमें आग लगा दी और फिर उसी बनमें चला गया। अब किलेकी आग भभक उठी तब अड़ोस पड़ोसके लोगोंको असली भेद मालूम हुआ। इधर कप्तान बटलरकी विधवा स्त्रीने रिहाई पाकर सेन्ट जानस्टन किलेके अफसर सर जिरार्ड हिरेनके पास जाकर सब हाल कहा। हिरेन समझ गये कि दगाबाज वालेसकाही यह काम है, वह तुरन्त एक हजार सवार लेकर उसे ढूंढ़ने निकले।

इधर वालेसने हमलेके खटकेसे जङ्गलमें एक सुन्दर लकड़ियोंका किला बनाया; छः गोलाकार लकड़ियोंकी दीवारोंसे किलेको घेरदिया हर दीवारमें दो गुप्त दरवाजे इस गरजसे रखे कि अगर एक दीवार शत्रुके हाथमें चली जायगी तो यह लोग गुप्तद्वारसे क्रमसे पीछे बढ़ते जायंगे, सब दीवारोंपर शत्रुओंका अधिकार होजानेपर अन्तिमद्वार से सघन बनमें निकल जायंगे।

किन्तु वन युद्धमें सरजेम्स बटलरके मारे जानेसे उनके पुत्र सर जान बटलर पिताका बदला लेनेके लिये धावा करनेवाली सेनाके नायक हुए हैं। वह दो सौ सवार साथ लेकर बनमें घुसे। बाकी सेनासे सर जिरार्डने बन घेर रखा। बटलरके आनेतक वालेसका किला तय्यार नहीं हुआ था। वालेस बहुतसे साथियोंको किला बनाने पर तैनात करके थोड़ेसे आदमियों सहित बाहर आया। अङ्गरेजोंके साथ १४० तीरन्दाज और ८० बर्छेबरदार थे वालेसके साथ सिर्फ २० तीरन्दाज थे। उसके हाथमें एक बड़ा भारी धनुष था जिसे उसके सिवा दूसरा कोई नहीं चढ़ा सकता था। वह पेड़ोंकी डालियोंसे बने नकली किलेसे इस धनुष पर बाण चढ़ा कर अङ्गरेजोंको मारने लगा। किन्तु अपने तीरन्दाजोंको अङ्गरेजी तीरन्दाजोंसे घायल होते देखकर उसने उन्हें हुक्मदिया कि पेड़ों की डालियोंमें छिपकर बाण चलाओ। आप वैसेही धनुष खेंचनेलगा। अन्तमें उसके गलेमें भी एक बाण आलगा किन्तु भाग्यसे उसने गलेमें

लोहेका कालर पहन रखा था इससे घाव गहरा नहीं लगा। उसकी तेज निगाह उसी वक्त तीर चलानेवाले पर पड़ी। उसने झट किले से बाहर निकलकर उस भागते हुए अपराधीका गला तलवारसे काट डाला। वह स्वयं तो असाधारण वीरता दिखाने लगा, उसके अमोघ वाणोंसे पन्द्रह अङ्गरेज मरे किन्तु उसके तीरन्दाज अङ्ग-रेजी वाणोंसे विकल होगये। ऐसीही दशामें चारोंओरसे अङ्गरेजी सेनाने आकर उन लोगोंको घेर लिया। 'या तो, लड़ाईमें जीतेंगे या मरेंगे' इस जोशीले वाक्यसे हतोत्साह स्काट सेनामें नया उत्साह आगया। दोपहर होचली है। असंख्य अङ्गरेजी सेनाका सामना करनेके लिये उसके पास सिर्फ १५ वीर खड़े हैं इतनेमें मृत बटलर के भानजे विलियम लोरेनने एक बएक तीन सौ सेना सहित वनके एक किनारेसे आकर स्काटों पर हमला किया। बटलरका बेटा सर जान लोरेनसे आमिला। इधर सर जिराड हिरनने इस तरह वन घेर लिया कि वालेस बाहर भी नहीं भाग सकता। वह लोग बड़ी चालाकीसे उस अङ्गरेजी सेनासे लड़ने लगे। पर इस तरह रहना अब बेहतर न समझकर वालेस एक और सहमें चला गया। एक करके उसके अधिकांश साथी मारे गये। अन्तमें वह युद्धस्थलमें जीतेजी पकड़े जानेकी अपेक्षा युद्ध करते करते मर जाना अच्छा समझकर बचे खुचे साथियों सहित रणभूमिमें उतर आया। भयङ्कर शेरकी तरह एक झपट्टे में बटलरके सामने आकर बड़े जोर से उस पर तलवार चलाई। उसका जोर एक डालीसे रुक जानेके कारण वार पूरा नहीं लगा पर बटलर घायल होकर जमीन पर गिर पड़ा। फौरन बहुतसे अङ्गरेज आकर अपने सेनापतिको वहांसे उठा लेगये। यह देख लोरेनने बहुत दुःखित और क्रोधित होकर बड़े वेगसे आकर वालेस और उसके बहादुरोंको घेर लिया। वालेसकी तीक्ष्ण दृष्टि लोरेन पर पड़ी। वह उछलकर उसके सामने आया। मदद पहुंचनेसे पहलेही वालेसकी तलवारने लोरेन का सिर धड़से अलग कर दिया। वालेसके १५ आदमियोंमेंसे

७ वीर मारे गये किन्तु अङ्गरेजोंकी तरफके कोई १२० आदमियोंने प्राणत्याग किये। अब वालेस उन आठ साथियों सहित जंगलसे बाहर निकलकर पासके किलेमें घुसकर अङ्गरेजोंका मुकाबला करने लगा। उधर लीरेनकी मृत्युसे अङ्गरेजी सेनामें खलबली पड़ गई। हिरेनने एक जङ्गी सभा की। उस सभामें उस दिन लड़ाई बन्द रखनेकी सलाह हुई। उन लोगोंने बनमें जगह जगह खोद कर गड़े धनका पता लगानेकी चेष्टा की पर कुछ फल न हुआ। अन्तमें वह लोग दुःखित चित्तसे सेन्ट जानस्टन नगरको लौट आये। युद्धके दूसरे दिन रातको स्काट लोग किलेसे निकलकर सार्टउडसा बनसे गड़ा धन खोदकर मेथवेन बनमें लेगये। वहां दो दिन रह कर एलको पार्ककी तरफ चल दिये। वहां कुछ दिन रहनेका विचार किया।

ऐसी अफवाह थी कि सेन्टजानस्टनमें एक बड़ी सुन्दर स्त्री वालेस की प्रेमिका थी। उसको देखनेके लिये वालेस पादरीकी पोशाक पहनकर सेन्ट जाजस्टनको आया। स्त्रीने बहुत दिनके वियोगके बाद बड़े आदरसे नायकको ग्रहण किया। रात होने पर फिर तीसरे दिन आनेका वादा करके वालेस एलकोपार्कको विदा होगया।

वालेस भेष बदलनेमें विशेष चतुर और घोड़ा छिपानेमें बहुत सावधान था तो भी उसके एक शत्रुने उसे पहचान लिया और हिरेन और बटलरको इसकी खबर दी। उन्होंने उस स्त्रीको अपने यहां बुलवाया और कहा—"अगर सच बात न बताओगी तो तुम्हें जीतेजी जलती चिता पर चढ़ना होगा और अगर साफ साफ कह दो तो तुम्हें धन और खिताब दिया जायगा और एक अच्छे नाइट से तुम्हारा व्याह करा दिया जायगा।" भय और लालचसे वह स्त्री वालेससे विश्वासघात करनेको राजी हुई। उसने ठीक ठीक बता दिया कि वालेस फिर किस समय आवेगा। उस समय उसके घर के बाहर किसी गुप्त स्थानमें हथियारबन्द आदमी आकर छिपे रहे। वालेसको देखनेके लिये उन लोगोंका मन प्रफुल्ल होगया।

वालेसको इस साजिशकी कुछ खबर न थी वह वादेपर प्रेमिका के पास आपहुंचा। विश्वासघातिनीने उससे बड़ा प्यार दिखाया। वालेस कुछही देर ठहरकर चलने लगा। पिशाचीने रातभर रहने को कहा। वालेसने कहा—"साथियोंको एकबार देखे बिना नींद न आवेगी।" पापिनीने देखा कि काम न बनने पर मैं मारी जाऊंगी इस लिये रो गाकर उसे रात भर ठहरनेके लिये जिद की। जब वालेस किसी तरह राजी न हुआ तो वह जोरसे रो उठी। अपनी मृत्यु स्थिर जानकर पछताने लगी कि "मैं मृत्युसे बचनेके लिये प्राणसे भी प्यारेको मौतके हवाले करना चाहती थी अब कहां जान बचती है? इस जन्ममें जो होना था वह तो हुआ अब परलोकमें मेरी क्या गति होगी?" इस पश्चात्तापसे उसका हृदय जलने लगा। वह रह न सकी, सब हाल कहकर उसने वालेससे क्षमा मांगी। वालेसने उसका पश्चात्ताप हृदयसे समझकर उसे क्षमा किया और उसीकी पोशाक पहनकर स्त्रीके भेषमें दक्षिणी द्वारसे झटपट बाहर आया। "मैं वालेसको भीतर बन्द कर आई हूं तुम लोग जल्द मेरे घरमें जाकर उसे गिरफतार करो।" यह कहकर वालेस हथियारबन्द जवानोंका शक मिटाकर और उनको दूसरे काममें लगाकर एलकोपार्ककी तरफ नौ दो ग्यारह हुआ। उसको दौड़ते देखकर किसी किसीको सन्देह हुआ। उन्होंने उसका पीछा किया। वालेसने शेरकी तरह झपटकर दो को मार डाला बाकी भाग गये। वह निर्विघ्न अपने स्थान पर आगया।

छठा अध्याय ।

वालेसका पीछा—उसके हाथसे फडनका सिर कटना ।

कार्लके हाथसे हिरेनका मरना—गास्कविला—फडनकी प्रेतमूर्ति—वालेसकी तलवारसे बटलरकी मृत्यु—वालेसका टरउडमें विधवा स्त्रीके घर टिकना—चाचासे मुलाकात—डनडफ और गिलबंकमें जाना ।

१२८६ ईस्वीके नवम्बर महीनेकी अन्धेरी रातमें वालेसने सेन्ट जानस्टनसे भागकर बड़ी मुश्किलसे जान बचाई । उसके भागते समय जो हल्ला हुआ उसीमें उसकी प्रेमिका गायब होगई । वालेस अपने भागनेके रास्तेमें जो लाशें डाल गया था शत्रु उसीके सहारे एलकोपार्कमें आपहुंचे । उनके साथ एक शिकारी कुत्ता था। उन्होंने वालेसका गुप्त स्थान ढूँढ़नेके लिये उसे वहां छोड़ दिया। उसके पीछे पीछे एक सौ हथियारबन्द जवान जाने लगे । इधर सेनापति बटलर ३०० सेना लेकर पार्क घेरकर बैठे और सेनापति हिरेन दो सौ सेना लेकर अन्तमें उनकी मदद करनेके इरादेसे कुछ दूर पर ठहरे रहे । सिर्फ ४० स्काटिश वीर उस दस गुनी अङ्गरेजी सेनाके सामने उपस्थित हुए । चारोंओरसे घेरा है भागनेका रास्ता नहीं इससे लड़नेके सिवा दूसरा उपाय न था। अतएव उन्होंने युद्धकी ठानली । उस थोड़ीसी वीरसेनाने इस जोरसे अङ्गरेजों पर आक्रमण किया कि पहले ही वारमें ४० अङ्गरेज गिरे। बटलरकी सेना धीरे धीरे हताश होचली । उसकी शिथिलता देख कर वालेस दलबल सहित व्यूह तोड़कर अपने किलेकी तरफ दौड़ा । टे नदीके उस पार किला था । सोचा था कि टे नदी पार होजायंगे पर आकर देखा कि नदी बड़ी गहरी है । बिना तैरे पार नहीं होसकते । वालेसके साथियोंमेंसे ज्यादा आदमी

ऐसा मालूम होने लगा मानो शत्रु यह विगुल बजा रहे हैं। वह तलवार निकालकर जिधरसे आवाज आती थी उधर दौड़ा। किले की दालानसे आगे पैर रखना चाहता था कि ऐसा जान पड़ा मानो दालानके दरवाजे पर फडन अपना सिर हाथमें लिये खड़ा है। वालेसको देखकर उसने वह सिर उसके पैरकी तरफ फेंका। उठा कर मानो फिर फेंका। डरके मारे वालेसका खून जमने लगा। उसको विश्वास होगया कि यह फडनका भूत है आदमी नहीं। भयसे व्याकुल होकर वहांसे भागना चाहा। दरवाजे पर फडनकी प्रेतमूर्ति खड़ी है इससे उधरसे जानेकी हिम्मत न करके एक बन्द खिड़कीका किवाड़ पैरसे तोड़कर दस हाथ नीचे कूद पड़ा और वहांसे उठकर बेतहाशा भागा।

कुछ दूर पर नदी थी जब नदी पार हुआ तब वालेसकी जानमें जान आई। तब उसने उस किलेकी तरफ दृष्टि फेरी। उसे जान पड़ा कि मानो किला जल रहा है। उसने फडनके भूतको ही इस का कारण समझा। उसे यह भी विश्वास होगया कि उसी भूतने विगुल बजाकर उसके साथियोंको मार डाला है। उन दिनों भूत का भय और भूतका विश्वास बहुतोंको था। वालेस इस भौतिक उत्पातसे डरा और उदास हुआ। वह नदीके किनारे टहलते टह-लते भगवानकी स्तुति करने लगा, पागलकी तरह रोते रोते उसने भगवानसे उनका अभिप्राय पूछा।

इतनेमें उषादेवी पूर्व आकाशमें हंसी उठी। रातका अन्धकार सूर्यके भयसे भागकर पहाड़की गुफामें जा छिपा। इतनेमें बटलरने दूरसे वालेसको देखा। वह स्काटोंकी चाल रोकनेकी गरजसे उसी नदीके किनारे घोड़े पर टहलते थे वालेसको देखतेही उधर घोड़ा दौड़ाया और पास आकर उससे नामधाम पूछा। वालेसने नाम छिपाकर कहा कि मैं सर जान स्टुआर्टके पास एक खबर लेजा रहा हूं। बटलरने कहा—"तू झूठ बोलता है तू जरूर वालेसका आदमी है।" यह कहकर तलवार निकालकर उस पर

दौड़े। वालेसकी तलवारने झट म्यानसे निकलकर बटलरकी टांग काट डाली। लङ्गड़े सेनापति उसी वक्त घोड़े से गिर पड़े। वालेस ने उनके घोड़ेका गला पकड़कर बटलरका सिर काट डाला। एक अङ्गरेज सैनिक दूरसे दौड़ा हुआ आया। वालेसने उसका बर्छा छीन लिया और बटलरके घोड़े पर सवार हो डालरियककी तरफ चला। अङ्गरेज सेनाने उसका पीछा किया। जो उसके पास आने लगे उन्हें वह मारने लगा। इस तरह अङ्गरेजोंका खून बहाते वालेस तेजीसे जाने लगा। बटलरका तेज घोड़ा भी इस तरह दौड़ते दौड़ते थक गया। वालेस घोड़ा छोड़कर आध कोस पैदल गया। आगे फिर एक घोड़ा मिला। वालेसने उस पर चढ़कर ज्योंही बाग छोड़ी त्योंही अङ्गरेज सेना उसके पास पहुंच गई। उसने सरपट घोड़ा दौड़ाया तो भी कोई कोई पास पहुंचने लगे उन्हें वह तलवारसे काटने लगा। इस तरह २० अङ्गरेज मारेगये। अन्तमें वालेस एक दलदलके सामने आपहुंचा मगर यहां उसका घोड़ा गिर पड़ा और फिर नहीं उठ सका। उसे लाचार होकर फिर पैदल चलना पड़ा। बड़ी फुर्तीसे दौड़कर शत्रुओंकी नजरसे बचा; अन्तमें उसने फोर्थके किनारे आकर केम्बकस नगरके पास नदी पार होकर शत्रुओंके हाथसे जान बचाई।

यों पीछा करनेवालोंके हाथसे पीछा छुड़ाकर वालेस डरउडकी तरफ चला। दूसरे दिन सूर्योदयसे पहले वहां एक परिचित विधवा स्त्रीके घर आया। उसका थका मांदा शरीर विश्राम चाहता था यहां आकर पूर्ण विश्राम पाया। विधवा खुद वालेसके लिये भोजन बनाने लगी। उसकी झोपड़ी वालेसके लिये बेहतर नहीं थी इस लिये उसने पासके बनमें एक पेड़के नीचे वालेसके लिये बिस्तर जमा दिया। स्त्रीके दो लड़के उसके पैर दाबने लगे। इधर उसने वालेसके साथियोंका पता लेनेके लिये एक औरतको गास्क किले की तरफ भेजा और वालेसकी खबर देनेके लिये तीसरे लड़केको दुनिपेसमें उसके चाचाके पास भेजा।

खबर पातेही उसके चाचा वहां आये। वालेससे चाचाकी बहुत बातें हुईं। उन्होंने वालेसके कामको पागलपन बताकर हंसी की और कहा—"तुम अकेले एडवर्डके सेनासमुद्रमें कूदकर आप डूबोगे, डूबे हुए स्वदेशको हरगिज निकाल न सकोगे। इसलिये मेरा कहना मानो और इस असम्भव आशाको छोड़कर एडवर्डके अधीन कहींके लाट बनकर सुख चैन करो। एकबार कहनेसे एडवर्ड मान लेंगे इसमें मुझे शक नहीं है।" यह वाक्य वालेसके कानोंको बहुत बुरे लगे। उसने जवाब दिया—"मैं या तो स्काटलेण्डमें फिर शान्ति स्थापित करूंगा नहीं तो उसी काममें जीवन देदूंगा, स्काट-लेण्डके पराधीन रहते मैं कोई सुख नहीं चाहता।" धन्य वालेस ! धन्य तुम्हारा स्वजातिप्रेम ! तुम्हारे जैसे राजनीतिक सन्यासीकी चरणरज जिस देशमें पड़ती है उस देशकी सदाकी पराधीनता भी दूर होजाती है।

वालेसकी मोहिनीशक्तिसे चाचाकी राय बदल गई। उन्होंने हृदयसे वालेसके उदारसंकल्पका अनुमोदन किया। उन लोगोंकी बातचीत कार्ल और स्टिफिनके अचानक आजानेसे रुक गई। अध्यक्ष वालेसको सकुशल देखकर उनके आनन्दकी सीमा न रही। वह लोग किस लिये वालेसका साथ छोड़कर रास्तेमें छिप गये थे और उसके बाद क्या क्या किया सब उन्होंने वालेसको कह सुनाया। वालेसने सबसे पहले उन्हींकी जबानी सुना कि अङ्गरेज सेनापति सर जिरार्ड उनकी तलवारसे मारे गये। वह लोग वहां आनन्दसे वार्तालाप कर रहे थे इतनेमें जो स्त्री गास्क किलेमें भेजी गई थी वह लौट आई। वह कहने लगी—मैं देख आई कि गास्क किलेको जानेका रास्ता अङ्गरेज सैनिकोंकी लाशोंसे भरा पड़ा है। (पाठकों को याद होगा कि वालेसने अपने पीछा करनेवालोंको मारकर उन की लाशोंसे गास्कका रास्ता श्मशान बना दिया था) वह किला और उसकी दालान ज्योंकी त्यों है उसका एक पत्थरभी इधर उधर नहीं हुआ है किन्तु बिगुलकी आवाज सुनकर जो लोग गये थे उनका

कुछ पता न पाया।" इस खबरसे वालेसका फडनकी प्रेतमूर्तिका विश्वास और पक्का होगया।

वालेस उस जङ्गलमें अब अधिक दिन ठहरनेको राजी न हुआ तब उस स्त्रीने उदारतापूर्वक उसे बहुतसा रुपया दिया और अपने बड़े और मझले बेटेको उसके साथ कर दिया। उसके चाचाने उन लोगोंको बढ़िया घोड़े और वीरोंकी पोशाकें दीं। उसी रातको वालेसने कार्ले, स्टिफिन और उस स्त्रीके दोनों लड़कोंसहित डनडफ की तरफ कूच किया। सर जान ग्रेहम नामका एक बूढ़ा नाइट— जिसने लार्गसकी लड़ाईमें बड़ी बहादुरी दिखाई थी—यहांका मालिक था। उसने बुढ़ापेमें शान्तिसे रहनेके लिये लाचार होकर एडवर्डसे सन्धिकी थी किन्तु उनकी अधीनता स्वीकार नहीं की। वालेसको पाकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ। वालेस बड़े आदरसे उसके क़िलेमें तीन दिन रहा। ग्रेहमके डेवीके नामका एक पुत्र था। उसने यौवनावस्थामेंही प्रान्तिक युद्धमें स्काटराज अलकजेण्डरकी बड़ी मदद की थी इस लिये उन्होंने उसे "वारविकका नाइट" की उपाधि दी। इस वीर युवकसे वालेसकी बड़ी मित्रता होगई। यह मित्रता मरते दम तक न टूटी। ग्रेहमने जीतेजी वालेसका साथ न छोड़ा। बनमें किलेमें रास्तेमें लड़ाईमें जहां वालेस जाता वहां ग्रेहम छायाकी तरह उसके पीछे पीछे रहताथा। वालेसके कष्ट दन्त्रणामय जीवनमें ग्रेहम उसका प्रधान शान्तिस्थल था।

वालेस वहांसे चलने लगा तो ग्रेहम उसके साथ चलनेको तय्यार हुआ किन्तु वालेसने मना किया, कहा—ऐसी आफतकी जिन्दगी में कूदनेसे पहले तुम्हें खूब खबरदारी सीखनी होगी, तब मैं तुम्हें लेजाऊंगा। इस बीचमें उसने उसको यथाशक्ति सेना संग्रह करने का अनुरोध किया। ग्रेहमने यह प्रस्ताव मान लिया और कहा कि तुम्हारी खबर पातेही मैं सेना सहित मददको पहुंचूँगा।

इधर आयरमें पर्सीके पास वालेसकी अलौकिक क्षमताकी खबर पहुंची। अङ्गरेजी सेनामें हलचल मच गई। सबके चेहरे

पर गम्भीरता छागई। किसी किसीने यह कहकर मनको प्रबोध दिया कि जब वालेसको स्टर्लिङ्ग पुल पार होते किसीने नहीं देखा तो मालूम होता है कि वह फोर्थमें डूब गया। किन्तु पर्सीको यह विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने सोचा कि वालेस बड़ा बली और चतुर है सम्भव नहीं कि वह जलमें डूब गया हो। इस लिये उनका मन आगेकी बात सोचकर घबराया। इस समय सर जान स्टुअर्ट सेन्ट जानस्टनके शेरिफ बनाये गये।

वालेसने गिलबंकमें पहुंचकरही करसबीमें चाचा सर रेनाल्डको, रिकार्टनमें भाई एडम वालेसको और दोनों मित्र बायड और क्लेयर को अपना हाल बतानेके लिये कार्लेको भेजा। वालेसकी सफलता का समाचार सुनकर वह लोग बेहद खुश हुए और उसी वक्त उस की मददके लिये बहुतसा रुपया भेजा।

जिन दिनों वालेस गिलबङ्कमें था उन दिनों कौतूहलमें आकर कभी कभी लेनार्कशायरकी तरफ जाया करता था। उसकी तल-वार अकसर अङ्गरेजोंका खून पीती थी। वह रास्तेमें जहां तितर बितर अङ्गरेजी सेना देखता उस पर हमला करता। उसकी तेज तलवारसे किसीकी रक्षा न होती, यहांतक कि खबर देनेके लिये भी कोई लौटने नहीं पाता था। हेसिलरीग लेनार्कसायरके शेरिफ थे। उनका मिजाज बड़ा कड़ा और स्वाधीन था प्रजा उनको यम के समान समझती थी। उनको इस बातका बड़ा आश्चर्य हुआ कि कौन इस तरह मेरी सेना बरबाद कर रहा है। उन्होंने अपने सैनिकोंको हुक्म दिया कि कहीं जाओ तो आत्मरक्षाके लिये इकट्ठे होकर जाओ। वालेस जब शत्रु सेना अधिक देखता तब कुछ छेड़ छाड़ न करता। उसके चारों साथी छाया तरह उसके पीछे पीछे रहते थे।

सातवां अध्याय

वालेसका प्र य—लाकमेबेन और क्राफोर्ड किले पर अधिकार।

वीरका हृदय भी प्रणयसे खाली नहीं है। ऐसा कोई हृदय नहीं देखा जाता जहां प्रणयकी अमलदारी न हो। राजाकी अटारी से लेकर दरिद्रकी झोपड़ी तक सर्वत्र प्रणय विराजमान है। अनुराग संसारत्यागी संन्यासियोंके हृदयमें भी प्रवेश करता है। वालेस राजनीतिक संन्यासी होकर भी इसके हाथसे न बच सका। परमयोगी दिगम्बर भी इसके हाथसे नहीं बचे। जिसका हृदय स्वदेश की दुर्दशासे शोकाकुल था, जिसने प्रण किया था कि स्वदेशका उद्धार किये बिना किसी तरहका दुनियावी सुख नहीं करूंगा वह आज प्रेमका जोर रोक न सका। उसने इसको जातीयव्रतमें खलल डालनेवाला बताकर हृदयको बहुत समझाया किन्तु हृदयने कुछ ख्याल नहीं किया। लेनार्कशायरकी कोई अलौकिक सुन्दरी मनोमोहिनी उच्च-वंशोद्भवा कोमलस्वभावा रमणी उसके चित्तविकारका कारण थी।

लेनार्कशायरमें लेमिङ्गटन नामका एक शहर है। वहां ह्यूग-ब्राडफुट नामका एक धनी आदमी रहता था। यह स्त्री उसीकी लड़की थी। लड़कपनमेंही पिता माता और भ्राताके वियोगसे अपार धनकी स्वामिनी हुई थी। हेसिलरीगके हाथसेही उसके एक मात्र भाईकी मृत्यु हुई। असहाया बालिकाको आश्रय देनेके बदले उसने उससे बहुतसा रुपया लिया। ऐसा भी कहते हैं कि हेसिलरीगने उस अपार धनकी स्वामिनीको अपने बड़े पुत्रसे व्याह देनेका इरादा किया था। स्त्री दूसरा उपाय न देखकर वालेसकी शरणमें गई। उसने अपनी दासीसे वालेसको बुला भेजा। दासी के साथ वालेस बागीचेकी खिड़कीसे स्त्रीके घर पहुंचा। उसकी

मेहमानदारीके लिये कई प्रकारके भोजन बनाये गये थे। युवती युवक पहलेही मुलाकातमें एक दूसरे पर प्रेमासक्त होगये। युवती ने कहा—"मैंने आजसे आपके चरणोंमें आत्मसमर्पण कर दिया। जलथल, बन जङ्गल, रणभूमि या शान्तिनिकेतन—आप जब जहां रहेंगे, दासी छायाकी भांति आपके पीछे पीछे रहेगी, मैं प्रतिज्ञा करतीहूं कि आपके सिवा और किसी पुरुषकी पत्नी न हूंगी। अब प्रार्थना यही है कि दासीको अपनाइये।" वालेसका हृदय रमणी के प्रेमसे पिघल गया किन्तु वह बिलफेल विवाह करनेको राजी न हुआ। कहा—"जितने दिन स्काटलेण्ड शत्रुके हाथमें रहेगा उतने दिन विवाहमें मेरा अधिकार नहीं है। जिस दिन स्वदेशको शत्रु रूपी कांटेसे अलग कर सकूंगा उसी दिन तुम्हारा पाणिग्रहण करूंगा। मैं भी प्रतिज्ञा करता हूं कि तुम्हें छोड़कर और किसी स्त्रीको पत्नी नहीं बनाऊंगा।" इसी तरह दोनों प्रतिज्ञा करके एक प्रकार नैतिकदम्पती होगये। उसी दिनसे वह दोनों परस्पर पति पत्नीकासा व्यवहार करने लगे। नैतिक विवाह करके दोनोंने बड़े आनन्दसे भोजन किया।

वालेस दूसरे दिन तड़के चारों साथियोंसहित गिलबंक छोड़कर कर्हौंडकी तरफ रवानाहोगया। कर्हौंडमें उसका भतीजा टाम हालिडे और भाई एडवर्ड लीटल रहते थे। उन्होंने समझ लिया था कि वालेस लड़ाईमेंमारागया। आजअचानक उसे देखकर आनन्दसेउछल वालेस वहां तीन दिन रहा। चौथे दिन लाकमेबेनकी तरफ चला। वह सब मिलाकर १६ सवार होगये हैं। शहरसे कुछ दूर नाकउड नामक बनमें सबको छोड़कर वालेस लीटल कार्ले और हालिडेको ले कर शहरमें पैठा। वहां किसी सरायमें भोजन बनानेका हुक्म दे कर घोड़ोंको वहीं बांध दिया और आप पासके गिरजेमें जा कर भजन सुनने लगे। उनकी गैरहाजिरीमें क्लिफोर्डने चार सह-चरों सहित उस सरायमें आकर पूछा—"यह किसके घोड़े बंधेहैं?" भठियारीने कहा—"हुजूर! पश्चिमसे चार भले आदमी आकर मेरे

यहां ठहरे हैं उन्हींके चारों घोड़े हैं।" घमण्डी क्लिफोर्डने कहा— "वह भूत ऐसे सुन्दर घोड़े लेकर क्या करेंगे ?"—यह कहकर उसने चारोंकी दुम काट डाली। भठियारी चिल्ला उठी। उसकी आवाज सुनकर वालेस और उसके साथी आपहुंचे। इधर क्लिफोर्ड दुम काटकर रफूचक्कर हुआ। वालेस असली हाल सुनकर क्रोधसे लाल होगया तो भी इस दिल्लगीकी बातसे उसकी हंसी न रुकी। उसने साथियों सहित क्लिफोर्डका पीछाकिया और पुकारकर हंसीसे कहने लगा—"यार! मालूम होगया कि तुम एक चतुर हजाम हो, मैं भी एक हजाम हूं पश्चिमसे अच्छे रोजगारकी तलाशमें आया हूं। दिल बहुत चाहता है कि तुम्हें अपना इल्म दिखाऊं।" यह कहते कहते वालेस क्लिफोर्डके पास पहुंच गया। पहुंचनेके साथ उसकी भीम तलवारने क्लिफोर्डको दो टुकड़े कर डाला। एक औरको भी मारा। वालेसके साथियोंने बाकी तीनको मार डाला।

वह लोग क्लिफोर्डका घोड़ा लेकर डेरे पर लौट आये और रसोईकी तय्यारी तक न ठहरे। भठियारीको भोजनका दाम चुका अपने दुमकटे घोड़ों और क्लिफोर्डके सुन्दर घोड़ेको लेकर चलदिये।

क्लिफोर्डके मारे जानेकी खबर नगरमें फैलतेही अङ्गरेजी किले से २७ सवार वालेस और उसके साथियोंकी खोजमें निकले।

वालेस शहरसे निकलकर अपने दलमें मिलनेके लिये फुर्तीसे नाकउड बनकी तरफ चला। वह बन बहुत छोटा था इसलिये वहां शत्रुओंसे बचाव न देखकर पहाड़ पर चढ़नेकी तय्यारी की। सब घोड़ेसे उतरकर धीरे धीरे पहाड़पर चढ़ने लगे। इतनेमें दूरसे अङ्ग-रेजी घोड़ोंकी टाप सुनाई दी, तेज घोड़ों पर अङ्गरेज सैनिक सवार हैं उनकी नङ्गी तलवारों पर सूर्य्यकी किरणें पड़कर आंखोंमें चका-चौंध लगा रही हैं। वालेसने सबको घोड़े पर सवार होकर ईस्टर मूरकी तरफ जानेका हुक्म दिया किन्तु उसे खटका हुआ कि जखमी घोड़े जवाब न देदें। अङ्गरेजी सेनाने सामने आकरही वाणसे दो स्काटोंको घायल किया। वालेस दो साथियोंके बदमसे

खून बहते देखकर क्रोधसे मत्त हाथीकी तरह अकेले अङ्गरेजों पर टूट पड़ा। क्षण भरमें उसकी तलवारने पन्द्रह सवारोंको जमीन पर सुला दिया। बाकी सवार यह बेढब मामला देखकर किलेकी तरफ सरके। स्काटोंने भागती हुई अङ्गरेजी सेनाका पीछा किया। राहमें हालिडेने देखा कि दो सौ अङ्गरेजी सेना पासके जङ्गलमें छिपी हुई है तब उसने चाचाको लौटनेकी सलाह दी।

जङ्गलकी अङ्गरेज सेनाने जब देखा कि स्काट कर्वींडकी तरफ भागा चाहते हैं तब वहांसे निकलकर उनका पीछा किया। सर ह्यू नामके एक प्रवीण अङ्गरेज सेनापति इस सेनाके नायक थे। वह बख्तर पहने हुए एक खूबसूरत घोड़े पर सवार थे। वालेस एक पेड़से पीठ सटाये सर ह्यूकी बाट देखता था। ज्योंही वह उसके सामने आये उसकी कराल तलवार उनके सिरके दो टुकड़े करके गले पर आकर ठहरी। वालेस चट ह्यूके घोड़े पर सवार होगया। सेनापतिकी मृत्यु देखकर अङ्गरेजोंने उसे घेर लिया। उसी वक्त उसके साथी भी सहायताको आपहुंचे। दोनों ओरसे घोर संग्राम होने लगा। हालिडे पैदलही विलक्षण वीरता दिखाने लगा। वालेस घोड़े पर चढ़ा हाथमें बर्छा लिये शेरकी तरह शत्रुओंका मथन करने लगा। मानो चारोंओर मौत फैलाने लगा। अन्तमें अङ्गरेज हताश और बलहीन होकर भाग चले। इस लड़ाईमें सेनापतिके सिवा बीस अङ्गरेज मारे गये और बहुतसे घायल हुए। स्काटोंमेंसे एक भी नहीं मारा गया सिर्फ पांच आदमी जखमी हुए।

ग्रेस्टाक नामका एक अङ्गरेज सैनिक सर ह्यूके नीचे अफसर था। उसने मुट्ठी भर स्काटोंके सामने पीठ दिखानेवाले अङ्गरेजोंको धिक्कार देकर तीनसौ सेना लेकर आक्रमण किया। वालेस और उसके सब साथी अब घोड़ों पर सवार थे। वह लोग धीरे धीरे शत्रुओंको एक तंग दर्रेमें लेआये। वालेसने इतनी थोड़ी सेना लेकर इतनी बड़ी सेनाके सामने खुले मैदानमें उतरनेका साहस नहीं किया इसीलिये हिकमतसे उसे तंग जगहमें लेगया। वह जानता

था कि इस तंग जगहमें संख्या ज्यादा होनेसे कुछ मुआका नहीं है। अङ्गरेज अपनी भूल समझकर पीछे हटे। वालेसने उनका पीछा करनेकी हिम्मत न की।

इसी हालतमें दोनों पक्षकी सेना पड़ी है इतनेमें वालेसके प्यारे मित्र ग्रेहम और कर्कपेट्रिक सेना सहित वालेसको ढूँढ़ते हुए वहां आपहुंचे। ग्रेहमके साथ तीस और कर्कपेट्रिकके साथ पचास चुने हुए योद्धा थे। दूरसे मित्रोंकी सेना देखकर वालेसने आक्रमणका इरादा किया। उसका जो इरादा था वही काम था। भयानक शेरकी तरह अङ्गरेजी सेना पर टूट पड़ा। दैवीशक्तिसम्पन्न स्वजाति प्रेमी वीरदलका वेग किसकी ताकत है जो बरदाश्त कर सके? पलक भरमें अंगरेज सैनिकोंकी लाशोंसे मैदान भर गया। यह बिजलीकासा तेज अङ्गरेजोंसे बरदाश्त न होसका। वह पीठ दिखाकर भागे। सेनापति ग्रेस्टाक सौ सिपाहियोंके घेरेमें घोड़ेपर सवार होकर भागा। किन्तु उसके सामने ग्रेहम और कार्कपेट्रिक चले आये। उधर वालेसने उसका पीछा किया। उसने दूरसे ग्रेहमको देखकर ग्रेस्टाक पर आक्रमण करनेका चिल्लाकर हुक्म दिया। ग्रेहम ने झट अङ्गरेज सेनापतिके पास पहुंचकर तलवारसे उसका सिर काट डाला। सेनापतिके मारे जाने पर अङ्गरेजी सेना भयसे इधर उधर भागी। कितनेही सिपाही पीछा करनेवाले स्काटोंके हाथ मारे गये। खबर पहुंचानेके लिये बहुत थोड़े आदमी जीते बचे। जो बचे उन्होंने भागते भागते अङ्गरेजी खेमेमें पहुंचकरही दमलिया।

युद्ध समाप्त होजाने पर विजयी स्काट सेनानायक परस्पर मिले। आज उनके आनन्दकी सीमा नहीं है। बहुत दिनके बाद मुलाकात हुई है फिर ऐसी विजयके साथ। सोनेमें सुगन्ध है। लड़ाईमें कड़ी आवाजसे हुक्म देनेके लिये वालेसने स्वाभाविक उदारतावश ग्रेहमसे क्षमा मांगी।

इधर सूर्य्यदेव अस्ताचलको पहुंचे और रातरानी धीरे धीरे आकाशमें आई। सलाह होने लगी कि अब क्या करना चाहिये।

वालेसने उसी रातको लाकमेबेन किले पर आक्रमण करनेका इरादा जाहिर किया। कहा—लड़ाईमें जितनी सेना मारी गई है उससे मालूम होता है कि किलेकी रक्षाके लिये बहुत थोड़ेही आदमी हैं। सबने उसके इस इरादेका अनुमोदन किया और फौरन उसके अनुसार काम किया गया। उसी कालीरातको उस वीरदलने लकमेबेन किलेकी तरफ कूच किया। टाम हालिडे उस प्रदेशसे ज्यादा वाकिफ था इस लिये वही उस दलका पथप्रदर्शक बना। हालिडे के प्रधान सहचरोंमेंसे वाटसनको कुछ दिन उस किलेमें रहना पड़ा था। उसकी किलेके सब लोगोंसे मुलाकात बात थी। वह अकेले आगे आकर दरवाजे पर खड़ा हुआ। दुर्गद्वाररक्षकने पूछा—"वाटसन! क्या खबर है?" वाटसनने कहा—"सेनापति स्वयं आरहे हैं शीघ्र द्वार खोल दीजिये।" बिना कुछ सोचे बिचारे उसने उसके कहनेसे दरवाजा खोलदिया। हालिडेउसके पीछे छिपा था। रक्षकने ज्योंही दरवाजा खोला हालिडेकी तलवारने उसे काट डाला। उसके हाथमें चाबियोंका गुच्छा था, वाटसन उसे लेकर आगे आगे चलने लगा और हालिडे तथा दूसरे लोग उसके पीछे पीछे। किसीने उन्हें नहीं रोका। किलेमें ऐसा कोई था ही नहीं जो उन को रोकता। सिर्फ दो नौकर और कई स्त्रियां थीं। इसलिये वह लोग बेधड़क चारों ओर घूमने लगे मानो वही किलेके मालिक थे। किला देखभाल कर सब भूख प्याससे विकल होगये थे, लड़ाईमें गये हुए अङ्गरेजोंके लिये जो खानपानका सरञ्जाम रखा था उससे अपनी भूख प्यास बुझाने लगे, केवल वाटसन दरवाजे पर पहरा देने लगा। इतनेमें मैदानसे भागी हुई अङ्गरेजी सेना आकर दरवाजे पर खड़ी हुई। उन लोगोंको जरा खबर न थी कि किला दुश्मनोंके हाथ आगया है। इस लिये उन्होंने बेखटके भीतर घुसना चाहा। वाटसनने कुछ रोकटोक न की। वह लोग ज्योंही भीतर पहुंचे विजयी स्काटसेनाने सबका काम तमाम कर दिया। एक भी योधा न बचा।

दूसरे दिन तड़के स्काटिश सरदार, वाटसनके हाथमें किलेका

भार और अङ्गरेज औरतोंको स्वदेश चले जानेका हुक्म देकर कहींड की तरफ रवाना हुए। उस दिन वहां रहकर दूसरे दिन नहाने खानेके बाद क्राफोर्ड मूरकी तरफ कूच कर गये। यहां आकर वह कई दल होगये। टाम हालिडे कर्हल किलेको लौट गया। अङ्ग-रेजोंको मालूम नहीं हुआ कि वह इस लड़ाईमें शामिल था। वह बेखटके वहां रहने लगा। कार्कपेट्रिक एस्कडेल बनमें जारहा यहां अङ्गरेजोंसे उसको कुछ डर न था।

वालेस और ग्रेहम चालीस साथियों सहित क्राफोर्ड किलेको रवाना हुए। वालेस उसी रातको उस किले पर आक्रमण करना चाहता था। इस समय मार्टिण्डल नामका एक कम्बरलेण्ड निवासी अङ्गरेज किलेका अफसर था। वालेस पासकी क्लाइड नदीके किनारे सब सेना छोड़ एडवर्ड लीटल नामके सिर्फ एक साथीको लेकर शहरमें पैठा। एक होटलके पास जाकर उसने एक स्काट स्त्रीसे सुना कि इस समय अङ्गरेजसेना उसी होटलमें खापीकर मस्त हो रही है। स्त्रीने कहा—"अगर तुम स्काट हो तो जल्द भागो, क्यों कि वह लोग वालेस नामके एक स्काट और उसके लाकमेबेन किला लेलेनेकी चर्चा करते थे; इसलिये उधरसे होकर जाना तुम्हारे लिये खतरेसे खाली नहीं है।" वालेसने स्त्रीको अपना सच्चा हित चाहनेवाली समझा किन्तु उसकी सलाहके बखिलाफ काम करनेपर मुस्तेद हुआ। वीरहृदय वालेसने उसी वक्त होटलमें अङ्गरेजी सेना पर हमला करनेका विचार किया। दूरसे ग्रेहमको किलेमें घुसने का इशारा करके आप होटलमें गया। एडवर्ड लीटल दरवाजे पर रहा। मकानके अन्दर पहुंचकर उसने व्यंग करके कहा—"मैं आशी-र्वाद करता हूं आप लोगोंका भला हो।" अङ्गरेज सेनापतिने उस को स्काट समझकर पूछा—"तुम कौन हो जी! किस साहससे यहां तक चले आये?" सेनापतिका सवाल पूरा भी न होने पाया था कि वालेसकी नङ्गी तलवारने बदमस्त अङ्गरेजों पर उसका इरादा प्रगट करदिया। वह लोग कुछदेर भौचकसे होरहे। शराबने

उनके होश हवास बेठिकाने कर दिये थे। वालेसने सबको मार डाला। हाररचक लीटलने भी पांच सिर गिराये। इधर ग्रेहम वालेसकी आज्ञानुसार किलेके दरवाजे पर पहुंचा। किवाड़ बन्द देखकर उसने उसमें आग लगा दी। अग्निलीला देखकर वालेस उधर दौड़ा। देखतेही देखते किवाड़ जलकर भस्म होगया वह लोग भीतर घुसे। वहां सिर्फ कई औरतें थीं इस लिये यह लोग चारोंओर घूमने लगे। खानेको कोई चीज न मिली। पीछे उन्होंने होटलसे खाना मंगाकर भूख बुझाई और रात वहीं बिताई। सवेरे औरतोंको रिहाई देकर किलेमें आग लगाई और डनडफको कूच कर दिया। वह रात उन लोगोंने डनडफमें बड़े आनन्दसे बिताई।

आठवां अध्याय।

लेमिङ्गटनकी उत्तराधिकारिणीसे वालेसका विवाह—अङ्गरेजोंसे घिरकर वालेसका कार्टलेन क्रेगसमें आश्रय लेना—हेसिल रीगके हाथसे उसको नवोढ़ा पत्नीकी मृत्यु—वालेसकी प्रतिज्ञा—उसके हाथसे हेसिलरीगकी हत्या—बीगरका प्रसिद्ध युद्ध—वालेसका स्काटलेण्डका अभिभावक चुना जाना—क्री नदीके किनारेके किले और टरमबरी किले पर अधिकार—अंगरेजों से सन्धि—वालेसका कमनकनगर में निवास।

सन् १२९७ ईस्वीके मार्च महीनेमें वालेस डनडफसे गिलबंकको रवाना हुआ। वसन्त ऋतु आई है। वृक्षावली हरे हरे सुन्दर पत्तोंसे शोभायमान है चारों ओर चिड़ियोंकी मीठी तान उड़ रही है प्रकृति नई सजधजसे जगतका मन मोह रही है। ऐसे समयमें

किस प्रणयीका चित्त ठिकाने रह सकता है? वालेसका उदार-हृदय भी वसन्ती वायुसे प्रणयानलमें पिघलने लगा। इतने दिन लड़ाई भिड़ाईमें लगे रहनेसे प्रणयिनी स्त्रीका ख्याल नहीं रहा। किन्तु आज इस विश्रामागारमें वसन्तके झकोरेसे उस अनुपम रूप-वती निराश्रया युवतीके लिये उसका मनमतङ्ग मतवाला होगया। विरह सह न सका और उसके घर जापहुंचा। कई दिनके आवा-गमनसे और प्रणय-परिणय और सामरिकजीवनसे उचित अनुचित सम्बन्धके विषयमें अनेक तर्क वितर्क करनेके बाद वालेस उससे खुल्लमखुल्ला विवाह करनेको राजी हुआ। वालेसके प्रियमित्र पादरी ब्लेयरने इस विवाहकी पुरोहिताई की। नवीन दम्पतीने कुछ दिन आनन्दपूर्वक मधुचन्द्रिमा (Honey Moon) बिताई। कुछही दिन बाद युवती गर्भवती हुई और समय पाकर एक लड़की पैदा हुई।

इस प्रकार वालेस यद्यपि मनके सुखसे प्यारीके साथ रहने लगा तथापि उस सुखके समय भी देशकी दुर्गति याद करके उसे शोक होने लगा। जबतक अङ्गरेज स्काटलेण्डमें शासन करते हैं तबतक वालेसके चित्तको सच्चे सुखकी आशा कहां?

इसी सुख:दुःखमेंदिन बीत रहे हैं इसी बीचमें एक दिन वालेस शहरके बाहरवाले गिरजेसे ईश्वरोपासना करके लौट रहा था। उसका प्यारा मित्र ग्रेहम साथ था। उन दोनोंके साथ कुल २४ आदमी थे। हेसिलरीग और सर राबर्टथार्न नामके एक नाइट ने राहमें उन पर जबरदस्त हमला किया। लेमिङ्गटनकी उत्तराधि-कारिणीसे व्याह करके वालेस हेसिलरीगकी आंखोंका कांटा बनगया था। व्याहके दिनसेही हेसिलरीगने वालेसको मारडालनेकी प्रतिज्ञा की थी। इतने दिन मौका ढूँढ़ता था आज वह मौका मिल गयाहै।

हेसिलरीगका प्रधान सैनिक तानेतिश्नेसे वालेसको युद्धके लिये भड़काने लगा। वालेस ऐसे तानेतिश्ने सुनकर कभी एक पल भी देर नहीं करता था किन्तु आज वह राजनीतिक संन्यासी होकर भी आश्रमी है। स्त्री और लड़कीकी मायासे आज उसे प्राणका मोह

हुआ है। इसलिये उसने एक बएक जान पर खेलना नहीं चाहा। झगड़ा बचाने लगा। अटल अचलकी भांति चुपचाप छेड़छाड़ सहने लगा। किन्तु जब देखा कि अङ्गरेज सामने आरहे हैं तब देर करना उचित न समझकर यह लोग जबरदस्त शेरकी तरह उछलकर उन पर आटूटे। पल भरमें लाशों और रक्तकी धारासे रणभूमि डूब गई। किन्तु इतनी अङ्गरेज सेनाने आकर उन्हें घेर लिया कि पचास अङ्गरेजोंको जमीन पर सुलाकर और व्यूह तोड़कर उन्हें मैदानसे भागना पड़ा। वालेस दलबल सहित प्यारीके घरकी तरफ दौड़ा। अंगरेजोंने पीछा किया। वालेस की पत्नीने पति और उसके साथियोंकी विपद देखकर सिंहद्वार खोल देनेका हुक्म दिया। स्काटलोग उस रास्तेसे भीतर चले गये। जबतक सब स्काट सेना खिड़कीकी राह किसी बेखतर जगहमें न पहुंची तबतक वालेस और ग्रेहम अद्भुत वीरतासे सिंहद्वारकी रक्षा करते रहे! इधर स्काट कार्टलेनक्रेग नामकी गुफामें जाछिपे। यह गुफा अब भी "वालेस गुफा" कहलाती है। साथियोंके निरापद स्थानमें पहुंच जानेकी खबर पाकर वालेस और ग्रेहम सिंहद्वार छोड़कर उधरही चले।

प्रणय स्त्रीको देवी बना देता है। प्रणय उसे अपना स्वार्थ भूल जानेकी शिक्षा देता है। पतिके ऊपर आफत देखकर अपने भविष्य का विचार न करके वालेसकी पत्नीने अपने महलका सिंहद्वार खोल दिया। पति और उसके साथियोंको खिड़कीसे भाग कर जान बचानेकी सलाह दी। स्वदेशका उद्धार करके प्राणसे भी प्यारी स्त्रीको सुख देनेकी आशासे आज वालेसने पत्नीकी सलाह मान ली। उन लोगोंके चले जाने पर प्यारीकी क्या गति होगी वह इस बातको ख्यालमें नहीं लाया। वह स्वयं शत्रुओंकी स्त्रियोंसे जैसा सुलूक करता था शायद समझा था कि अंगरेज सेनापति भी उसकी स्त्रीसे वैसाही सुलूक करेंगे। किन्तु उसकी यह आशा दुराशा मात्र हुई। सती पतिका प्राण बचानेके अपराधमें

अङ्गरेज सेनापतिकी आज्ञासे पकड़ीगई और उसीवक्त तलवारसेकाट डाली गई। वालेससे नाता तोड़कर सतीने प्राणत्याग तो किया किन्तु उसके आत्मोत्सर्गका चमकताहुआ दृष्टान्त सदाके लिये स्काट-स्त्रियोंको आदर्श बन गया।

पत्नीके मारे जानेकी खबर उसकी खास दाईने वालेस तक पहुंचाई। इस शोचनीय समाचारसे उसके, उसके प्रियमित्र ग्रेहम और दूसरे स्काटोंके शोककी सीमा न रही। वालेसका हृदय यद्यपि शोकसे विह्वल होगया था तथापि वह वीरोचित धैर्यसे शोक सम्हालकर रोतेहुए प्रियमित्र और दूसरे साथियोंको इस तरह उत्तेजित करने लगा—

"वीरो! शोक छोड़ो। इस शोकसे अब कुछ फायदा नहीं है, तुम लोग रोकरके अब उसे जिला नहीं सकोगे (यह कहते कहते उसकी आंखोंसे आंसुओंकीझड़ी लगगई) भाइयो! प्रतिज्ञाकरो कि जबतक इस शोचनीय हत्याका बदला न लोगे तबतक न सोओगे; और मैं आज ईश्वरको साक्षी करके तुम्हारे सामने प्रतिज्ञा करता हूं कि इस शोचनीय स्त्रीवधका पूरा बदला लूंगा, मेरी यह तलवार अङ्गरेजोंके बूढ़े बच्चे स्त्री किसीको यहांतक कि पादरियोंको भी क्षमा नहीं करेगी; प्यारे भाइयो! मेरी प्रार्थना यही है कि अगर मैं मरूं तो मेरी यह प्रतिज्ञा तुम लोग पालन करना, भाई सर जान! शोक छोड़ो। अब शोकका समय नहीं है, चलो हम लोग दस हजार अङ्गरेजोंके खूनसे प्यारी की शोकाग्नि बुझावें। कायर पुरुषही आंसूसे शोक मिटाते हैं, आंसूसे वीरका साहस घट जाता है। अपकारका बदला लेनेके लिये हृदयको उभाड़नेवाला जो क्रोध है वह आंसूके जलमें घुल जाता है।"

सेनापतिकी इस जोशदार बातसे सब स्काटोंका खून गर्म हो गया। सबने एक स्वरसे प्रतिज्ञा की कि खूनके बदले खून करके शोककी आग बुझावेंगे। चाचा अचिंगलेक वालेसकी यह दुर्घटना सुनकर दलबल सहित कार्टलेन बनमें उससे आमिला।

समूचा वीरदल बदला लेनेकी इच्छासे मत्त होकर रातको लानार्क की तरफ रवाना हुआ। अंगरेजोंको उनके आक्रमणका शक न था वह बेफिक्र सोते थे। शहरमें जाकर उस दलके दो टुकड़े हुए। एक टुकड़ेको लेकर वालेस हेसिलरीगके महलको चला और दूसरे को लेकर ग्रेहम सर राबर्ट थार्नको ढूँढ़ने लगा। शेरिफ हेसिल-रीग ऊंची अटारी पर बेखबर सो रहे थे इतनेमें वालेस उनके शय-नागारके दरवाजे पर पहुंचा। उसके लात मारनेसे दरवाजा टूट गया। झन्नाटेकी आवाजसे हेसिलरीगकी आंखें खुलीं। वह डरके मारे सीढ़ियोंकी तरफ भागना चाहते थे कि वालेसने उनका गला पकड़ लिया और तलवारसे काट डाला। अचिंगलेकका शक दूर नहीं हुआ उसने हेसिलरीगको अब भी जीता समझकर तलवार की नोक उनके बदनमें दोबार गड़ाई। हेसिलरीगका पुत्र पिताकी सहायताको दौड़ा पर वह भी पार हुआ। महलमें कुहराम पड़गया। रोनेकी आवाज सुनकर सड़कमें बहुत लोग जमा होगये। उधर ग्रेहमने सर राबर्टथार्नके मकानमें आग लगा दी वह उसीमें जलकर भस्म होगये। और भी कितनेही नगरनिवासी जल गये। वहांके बाशिन्दोंमें अधिकतर स्काट थे इसलिये वालेससे उनको आपसे आप सहानुभूति हुई। सबने आकर वालेसका साथ दिया। सैकड़ों अङ्गरेज मारे गये। लानार्क पर स्काटोंका पूरा अधिकार होगया। जल्द यह खबर स्काटलेण्डमें सर्वत्र फैल गई। झुण्डके झुण्ड स्काट आकर वालेसके झण्डेके नीचे खड़े हुए। सबने एक वाक्यसे वालेस को सरदार और नेता माना। वालेसने अब अपने हृदयका भाव छिपा नहीं रखा, आज सबके सामने साफ कह दिया कि स्काटलेंड को अंगरेजोंकी गुलामीसे छुड़ानाही मेरे जीवनका एकमात्र व्रत है।

लानार्क विजयके बादही वालेसका नाम पहले पहल इतिहासमें आया। यहींसे जातीय ऐतिहासिक उसको समूचे जातीयदलका नेता मानने लगी। महात्मा शिवाजी जैसे पहले डाकू कहलाये थे उसी तरह वालेस भी पहले

डाकू बताया गया था। सच पूछिये तो मामूली आदमी महात्माओं के अलौकिक कार्य्योंका कारण समझनेमें असमर्थ होकर उनकी निन्दा किया करते हैं * हरेक समाज सुधारक, हरेक धर्मसुधारक और हरेक राजनीतिक संन्यासीका जीवन ऐसीही अनुचित निन्दा के तीरोंसे जखमी हुआ करता है। वह लोग जिनका दुःख दूर करनेके लिये अपना सुख छोड़ देते हैं अपना जीवन उत्सर्ग कर देते हैं वही उनके उद्देश्य पर सन्देह करते हैं और हर तरहसे उनके काममें विघ्न डालते हैं। खासकर राजनीतिक संन्यासीकी जिन्दगी बड़े खतरेमें होती है। वह शत्रु, मित्र, स्वजाति विजाति सबसे सताये जाते हैं। जबतक सफलकाम न हों तबतक वह शत्रुओंके सामने बागी और स्वजातिके सामने अशान्ति फैलानेवाले डाकू हैं। अगर सफलमनोरथ हुए बिना वह मरजायं या यह काम छोड़ दें तो इतिहासमें उनका ऐसाही चित्र खींचा जाता है। सफल मनोरथ होने पर वह स्वदेश और स्वजातिके उपास्यदेवता और विपक्षी—विजातिके लिये भय और विस्मय उपजानेवाले होते हैं। वालेस लानार्ककी इस विजयके बाद स्वदेश और स्वजातिका आराध्यदेवता और अंगरेजोंको भय और विस्मय उपजानेवाला होगया। अंगरेजों ने पहलेहीसे उसकी अद्भुत वीरताका बहुत कुछ परिचय पाया था किन्तु तब उसे राजनीतिक प्रतिद्वन्द्वी नहीं समझा था। आज चारों ओरसे अनगिनत आदमी खुल्लमखुल्ला आकर उसके झण्डेके नीचे खड़े होते हैं, आज स्काटलेंडवालोंने खुल्लमखुल्ला उस को नेता बनाया है। आज उसने सबके सामने अंगरेजोंकी जड़ काटना अपने जीवनका एक मात्र व्रत कहकर घोषणा की है। यह सब सुनकर उन लोगोंकी आंखें खुलीं। वह समझ गये कि वालेस अब बागी या डाकू नहीं है, स्काटलेंडवालोंका प्रतिनिधि, स्काटप्रजातन्त्रका सभापति और अंगरेजोंका प्रतिद्वन्द्वी है।

---

* अलोकसामान्यमचिन्त्यहेतुकम्।
द्विषन्ति मन्दाश्चरितं महात्मनाम्॥ (कुमारसम्भव)

स्काटलेण्डके भाग्याकाशमें इस तरह जो फेर बदल होरहा था उसकी खबर रथवेलके अध्यक्ष सर आमेर डी वालेसने एडवर्डके पास भेजी। यह आदमी स्काटलेण्डका होकर भी जातीय स्वाधीनता एडवर्डके चरणोंमें बेचनेकी कल बन गया था। इस जातीय विश्वासघातके इनाममें एडवर्डने रथवेलके असली अध्यक्ष मरेको हटाकर उसकी जगह इसको बिठाया। इसीकी चिट्ठीसे एडवर्डको सबसे पहले यह मालूम हुआ कि स्काट लोग स्वदेशको अंगरेजोंकी बेड़ीसे छुड़ाने पर मुस्तैद हैं। एडवर्ड स्काटलेण्डको फिर कब्जेमें करनेके लिये बड़ी भारी सेना लेकर उधर रवाना हुए। उनकी छावनीमें रिकर्टनवासी जाप नामका एक काला स्काट था। अंगरेज उसे ग्रिमस्बीके नामसे पुकारते थे। वह वालेसका नाम और गुणावली सुनकर उसकी खोजमें निकला। खोजते खोजते काइल प्रदेशमें जापहुंचा। वहां स्काटिश अधिनायकसे भेंट हुई। वालेस सेना जमा करनेके इरादेसे वहां गया था। उसने जापकी जबानी इङ्गलेण्डकी भीतरी हालत और एडवर्डकी इच्छा मालूम की। कार्य्यदक्षता और विश्वासकी खातिरसे इस आदमीको स्काटोंने स्काटलेण्डका अस्त्रधारक बनाया।

आयरशायरसे लौटकर वालेसने झटपट सेना इकट्ठी की। उसने पहलेका क़ुसूर माफ करके कैदियोंको रिहाई दी। वही लोग उसकी सेनामें विशेष करके थे। उसके चाचा सर रेनाल्डसे अङ्गरेजोंकी जो सन्धि हुई थी उसका समय बीत गया है। तोभी अंगरेजोंने उनकी जायदाद इस लिये जब्त कर रखी कि वह स्वयं खुल्लमखुल्ला लड़ाईमें अंगरेजोंके मुकाबले खड़े न हों। इससे वह खुल्लमखुल्ला तो वालेसका साथ न देसके मगर छिपे छिपे उसे धन और जनसे बहुत कुछ सहायता देने लगे। इधर कनिंहम और काइलसे एडम वालेस और रावर्ट वायड एक हजार हथियारबन्द पुरुषों सहित लानार्कमें आकर वालेसके झण्डेके नीचे खड़े हुए। सर जान ग्रेहम और उसका चुनाहुआ रिसाला और दूसरे बहुतसे

स्काट देशभक्त वालेससे आमिले। सब मिलाकर कोई तीन हजार सवार और असंख्य पैदल सेना जातीय पताकाके नीचे आजमी। सेनाकी संख्या तो बहुत बढ़ गई किन्तु उसमें अधिकतर सिपाही अस्त्रशस्त्रसे सुसज्जित न थे इससे मौके पर इस अधिकतासे उतना फायदा नहीं हुआ।

इधर इङ्गलेण्डनरेश एडवर्ड या उनके प्रतिनिधि साठ हजार सुसज्जित सेना लेकर लंकशायरके वीगर नामक गांव तक आपहुंचे। वहांसे उन्होंने दो दूतों सहित अपने भानजे फौङ्गको वालेसके पास भेजकर यह कहलायाकि अगर वालेस अपने पिछले अपराधोंके लिये अब भी क्षमा मांगले तो उसे क्षमा कीजायगी और बहुत कुछ इनाम दिया जायगा। नहीं तो वह राजविद्रोही समझा जायगा और गिरफतार करके फांसी पर लटकाया जायगा। वालेसने बड़ी नफरत दिखाकर चिट्ठीमें इसका जवाब दिया और अपनी शक्ति दिखानेके लिये दोनों दूतों और भानजेको मार डाला!

वालेस एडवर्डकी सेनाका अन्दाजा करनेकी गरजसे रातको विना किसीसे कुछ कहे भेष बदलकर उनकी छावनीमें घुस गया। सर जान टिन्टो सिर्फ थोड़ी दूर तक उसके साथ गया था। सिर्फ उसीको वालेसकी बात मालूम थी। वालेस अंगरेज सैनिकों की बहुत कुछ छेड़छाड़ सहकर छावनीकी हालत देखकर जल्द भाग आया। जल्द नहीं भागता तो वह जरूर पकड़ा जाता। क्योंकि कोई कोई उसे वालेस समझकर कानाफूसी करने लगे थे। इधर जल्द न आनेसे स्काटिश छावनीमें भी आफत थी। सर जान ग्रेहम बहुत देरसे वालेसको न देखकर घबराया। उसे टिन्टो पर विश्वासघातका सन्देह हुआ। वह उसके हाथ पैर बांधकर जलाने या फांसी पर लटकानेका हुक्म देनाही चाहता था कि इतनेमें वालेस आपहुंचा। उसने फौरन टिन्टोकी रस्सी खोल डालनेका हुक्म देकर अपने गायब होनेका कारण बताया। ग्रेहम इससे सन्तुष्ट नहीं हुआ। उसने कहा कि सेनापतिको ऐसे जानजोखोंके

काममें हाथ नहीं देना चाहिये। वालेसने उत्तर दिया कि स्काटलेण्डको शत्रुके पंजेसे छुड़ानेके लिये इससे भी बढ़कर भयंकर काम करना होगा।'

एडवर्डकी छावनीसे लौटकर वालेसने सवेरे तक आराम किया। खूब तड़के समस्त जातीय सेना एडवर्डका मुकाबला करनेको तय्यार हुई। वालेस स्वयं वायड और अचिंगलेकके साथ रिसालेके आगे हुआ। जान ग्रेहम, एडम और समविल सहित बीचमें रहा। सर वालटर और उसका पुत्र डेविड तथा सर जान टिन्टो रिसालेके पीछे रहे। रिसालेके इन तीन स्तम्भोंके पीछे वालेसने पैदल सेना रखी और उसे हुक्म दिया कि तुम लोग जल्द मत लड़ने लगना। क्योंकि उनके पास न तो बढ़िया हथियार थे और न हारने पर भागनेके लिये सजेसजाये घोड़े। इसके बाद उसने सब सैनिकोंको सम्बोधन करके कहा कि जबतक रणमें विजयलक्ष्मी प्राप्त न हो तबतक कोई लूटपाट न मचावे।

इस तरह तय्यार होकर वह लोग एक मन और एक वाक्यसे धीरे धीरे अङ्गरेजी मोर्चेकी तरफ जाने लगे। राहमें टाम हालिडे दो पुत्रों सहित और जार्डन कार्कपेट्रिक तीन सौ सेना सहित आमिले। उनके अचानक आजानेसे स्काटिश सेनाके आनन्द की सीमा न रही।

वालेस अङ्गरेजी छावनी अच्छी तरह देख आया था इस लिये जिधर इङ्गलेण्डनरेश या उनके प्रतिनिधिका खेमा था उसने अपनी सेना उधरही चलाई। मानो सुनसान कन्दरेमें जोर शोरका जलप्रपात आपड़ा। अङ्गरेजी सेनाको इतना खयाल न था कि यहां पर हमला होगा इससे वह तय्यार न थी। सो पहले तो बड़ीही गड़बड़ मची पीछे अङ्गरेजोंके धैर्य्यगुणसे उनकी छावनीमें फिर सिलसिला बंधा। पहली मुठभेड़ बड़ी भयानक हुई। अङ्गरेज-सेनानायक अर्ल आफ केन्ट पांच सौ सेना लेकर रातको घूमने गये थे वह झटपट आकर शिविरकी रक्षाके लिये जीजानसे चेष्टा करने लगे। उधर ग्रेहम प्रभृति स्काटिशसेना-नायक वालेसकी बगलमें आडटे।

बड़ी तेजीसे स्काटिश सवार और पैदल सेना अर्ल आफ केन्टकी तरफ दौड़ी। उक्त अर्ल अद्भुत वीरतासे राजाके चन्दोवेकी रक्षा करते थे। किन्तु वालेसकी तलवारने जल्दही उनकी देहके दो खण्ड कर दिये। सेनानायकके मारे जानेसे सब अङ्गरेजी सेना मैदान छोड़कर भागी। मैदानमें चार हजार और भागते वक्त सात हजार अङ्गरेजी सेना मारी गई। बीस हजार भाग गई। स्काटों ने कल्टर होप तक उसका पीछा किया। फिर सेनानायकके हुक्म से लौट आये।

इधर सूर्य्यदेव मध्याकाशमें आकर अपनी उज्वल किरणें बरसाने लगे। स्काटोंने लौटकर शत्रु शिविरमें जा तरह तरहकी चीजें खा पीकर विजयोत्सव मनाया। कुछ देर आराम करके वहां जो हीरे मोती वगैरह पाये सब लूट लिये। वालेसने ऐसे चौरस मैदानमें दूसरी बार अंगरेजी सेनाका मुकाबला करनेका साहस न करके और अंगरेजी सेनाके फिर लौटकर हमला करनेके सन्देहसे वहांसे चल देनेका बिचार किया। उसने लूटका माल रोपिसबेग नामके स्थानमें गाड़कर डेविडसाकी तरफ सेना चलाई। वहां दिन भर छिपा रहा।

स्काटोंके कल्टर होपसे लौट आने पर अंगरेज सेनापति अपनी बिखरी हुई सेना बटोरकर जान ग्रीन स्थानमें विश्राम करने लगा। अपने बहुतसे सैनिकोंके मारे जानेसे उसको बड़ा भारी शोक हुआ। मारे गये वीरोंमें राजभ्राता, राजाके दो भानजे और अर्ल आफ केन्ट विशेष उल्लेखके योग्य थे।

अङ्गरेजसेना यों उदास पड़ी है इतनेमें बीगरके शिविरसे दो अङ्गरेज बावर्चियोंने आकर खबर दी कि स्काटसेना वहां शराब वगैरह पी कर बदहवास पड़ी है, इस समय अङ्गरेज बातकी बातमें उसको खतम कर सकते हैं। सेनापतिने इस बात पर विश्वास नहीं किया क्योंकि वह जानता था कि वालेसका सा बुद्धिमान सेनापति कभी स्काटसेनाको इस तरह दावमें नहीं आने देगा। तथापि

परीक्षाके लिये लांगकैसलके ड्यूकको दस हजार सेना लेकर वीगर जानेका हुकुम दिया। वेस्टमोरलेण्ड और पिकार्डीके जमींदार भी एक एक हजार घुड़सवार लेकर उनके पीछे चले। राल्फवेम वारविक, सर राल्फ ग्रे, आयमके डिवालेन्स प्रभृति भी अपनी अपनी फौज लेकर ड्यूकके साथ हुए। यह समूची अङ्गरेज सेना जब वीगरके मैदानमें पहुंची तो सामने सिर्फ अङ्गरेजोंकी लाशें देखीं, स्काट एक भी न देखा। किन्तु तुरन्तही स्काटसेनाका गुप्त स्थान मालूम होगया। अङ्गरेजोंके आनेकी खबर पातेही वालेस समस्त जातीय सेनासहित रोपिश नामक एक दलदलके किनारे आया। अपने घोड़े पीछे रखकर घुड़सवार, पैदलसेनाके शामिल कतारबन्द होकर दलदलके किनारे खड़े हुए। अङ्गरेजी रिसाला और पैदल सेना दलदलके दूसरे किनारे थी। अपने सेनापतिके हुक्मसे अङ्गरेजी रिसाला दलदलमें चला। ज्योंही आगे बढ़ा त्योंही घोड़ोंके पैर कीचड़में ऐसे फंस गये कि निकल न सके। स्काटसेना आक्रमणकी बाट देखती थी अब शेरकी तरह उछलकर दलदलमें फंसे शत्रुओं पर टूट पड़ी। एक एक करके सब अङ्गरेज स्काट वीरोंकी तलवारोंसे मारे गये। पिकार्डीका जमींदार सर ग्रेहमके हाथसे और ड्यूक आफ वेस्टमोरलेण्ड वालेसके हाथसे मारे गये। दोनों सेनापतियोंके मारे जानेसे बाकी अङ्गरेज सेना इधर उधर भागने लगी। उसके मुंहसे इस दूसरी हारका समाचार सुनकर अङ्गरेज सेनापति बड़ाही शोकाकुल हुआ और साल्वे पार होकर इङ्गलेण्ड चला गया।

विजयलक्ष्मी प्राप्त करके वालेसने कार्कमर्में एक महती जातीय सभा की। उस सभामें वह एक स्वरसे जातीय अभिभावक बनाया गया। सबने उसकी अधीनता स्वीकार की।

इसकेबादही वालेसने दक्षिणस्काटलेण्डकी यात्राकी। वहांके अङ्गरेज कप्तान और शेरिफोंको निकालकर उनकी जगह स्काच कप्तान और शेरिफ बहाल किये। वीगरकी अद्भुत विजय बिना यह रद्दोबदल सहजमें न होने पाता।

इस विजयके बाद स्काटलेण्डके पहाड़ी किले एक एक करके वालेसके हस्तगत होने लगे। क्री नदीके किनारे एक बड़ी चट्टान पर क्रगलटन कैसल नामका एक किला था। क्री नदीसे सागरका संगम होनेसे तिकोनी भूमि पर यह किला बना था। इसकी रक्षा के लिये ६० अङ्गरेज चौकीदार थे। उसके अन्दर जानेका सिर्फ एक रास्ता था। वालेस सब सेना नीचे छोड़कर सिर्फ दो आदमियों सहित दरवाजे पर आया। चौकीदार बेखबर थे शत्रुओंके अचानक आजानेसे भौचकसे रह गये। वालेसकी जबरदस्त ठोकरसे दरवाजा खुल गया। दरवान, प्रहरी सब एक करके तलवारके शिकार हुए। ६० अङ्गरेज मारे गये। खबर देनेके लिये सिर्फ एक बूढ़ा पादरी और दो औरतें रह गईं। जितने दिन किलेकी रसद न निबटी उतने दिन वालेस सेना सहित वहां रहा। रसद खतम होजाने पर किलेका दरवाजा तोड़कर चला गया।

इसके बाद उन लोगोंने कारिक किलेको कूच किया। किलेदार उस वक्त किलेमें मौजूद न था। स्काटोंने दरवाजेमें आग लगा दी। भीतर सिर्फ एक पादरी और कई औरतें थीं उन्होंने फौरन वालेस को किला सौंप दिया। वालेस किलेका माल असबाब लूटकर दूसरे दिन कमनकको गया। वहांसे लानार्क पहुंचा। यहां उसने विचारासन पर बैठकर दुष्कर्मियोंको दण्ड दिया। अपने भाईको पुश्तैनी जायदादका मालिक बनाकर वालेस ब्लैकक्राग किलेकी तरफ चला गया। वहां सेना सहित तीन महीने किलेमें आराम किया।

अब सब दक्षिणी स्काटलैण्ड और गालवे वालेसकी अमलदारी में आगया है। इंगलेण्डकी मातहतीमें यद्यपि पर्सी आयरमें, आमेर डी वालेंस रथवेलमें और विशपबेक ग्लासगोमें अब भी हुकूमत करते थे किन्तु एडवर्डकी अमलदारी बड़ी विपदमें देखकर लाचार उन्हें वालेससे कुछ दिनके लिये सन्धि की प्रार्थना करना पड़ी थी। इंगलेंडके प्रधानमन्त्री अर्ल आफ स्टाफोर्ड राजप्रतिनिधि होकर स्काटलेण्डमें आये। सर आमेर डी वालेंसने वालेससे उनका परिचय

कराया। स्काटलेण्डका शत्रु समझकर वालेसने उन्हें नमस्कार नहीं किया और बिना शिष्टाचार किये एक बारही उनके आनेका कारण पूछा। प्रधानमन्त्रीने उत्तर दिया—"इंगलेण्डके महाराजने इस वक्त कुछ दिनके लिये सन्धि करनेके इरादेसे मुझे आपके पास भेजा है। आपका क्या इरादा है?"

वालेसको अङ्गरेजोंका बहुत विश्वास न था, तथापि उसने लाचार होकर सन्धि करना स्वीकार किया। सन्धि हुई कि एक वर्षतक इंगलेंड और स्काटलेण्डमें कोई झगड़ा न होगा। सन्धिकेदिन जो स्थान जिसके दखलमें है वह उसीके दखलमें रहेगा। १२९७ईस्वीके फरवरी महीनेमें यह सन्धिपत्र लिखा गया और दोनों तरफसे सही की गई। इस सन्धिके बाद वालेस कामनक किलेमें जाकर रहने लगा। अङ्गरेजोंकी बातों और कामों पर उसे बहुत विश्वास न था इसलिये उसे बहुत बेखबरीमें रहनेका साहस न हुआ।

सन् १२९७ ईस्वीसे पहले वालेसका नाम इतिहासमें नहीं आया था। स्वदेशके लिये जीवन समर्पण करके लगातार अङ्गरेजोंसे लड़ते भिड़ते रहने और कदम कदम पर विजयलक्ष्मी प्राप्त करनेसे बहुत जल्द उसका नाम समस्त स्काटलेण्डमें मशहूर होगया। बीगरकी लड़ाई जीतने पर वह स्काटलेण्डका रक्षक माना गया। इंगलेण्डके महाराज गर्वित एडवर्डको भी उससे सन्धि करनी पड़ी। किन्तु इस छोटीसी विजयसे उसका चित्त फूलकर कुप्पा होनेवाला नहीं था। वह स्काटलेण्डको एक दम स्वाधीन बनाना चाहता था इस लिये एक अङ्गरेजका चरण भी स्काटलेण्डकी छाती पर रहते उसे विश्रामकी आशा कहां?

नवां अध्याय ।

वालेसका स्वप्न—अङ्गरेजोंका विश्वासघात और आयर बारिकका हत्याकाण्ड ।

वालेसने जो आशंका की थी वही हुई। अङ्गरेजोंके विश्वास-घातके लक्षण बहुत जल्द मालूम होगये। अप्रैल महीनेके आरम्भ मेंही एडवर्डने कारलाइलमें एक सभाकी। इस सभामें सब अङ्गरेज सेनापति बुलाये गये। विश्वासघातक आमेर डि वालेंसके सिवा और कोई स्काट नहीं बुलाया गया। इस सभामें यह बात तै हुई कि १२९७ ई०की १८वीं जूनको आयरनगरके बारिकमें एक महती सभाका अधिवेशन होगा। सब बड़े आदमियोंको उसमें आनेके लिये न्योता दिया गया। आयरके गवर्नर पर्सी साजिशको बात पहलेहीसे जानते थे इसलिये उन्होंने यह कहकर वहां जानेसे अस्वीकार किया कि मैं इस विश्वासघातका अनुमोदन नहीं करूंगा। इससे एडवर्डने उनको बरखास्त करके अरनुल्फको उस पद पर नियत किया। जिससे वालेस किसी तरह न बचने पावे इसके लिये उसी तारीखको ग्लासगोमें भी एक सभा हुई।

स्काट लोग यह देखकर विस्मित हुए कि अङ्गरेज सन्धिका समय पूरा हुए विनाही ऐसा आन्दोलन क्यों कर रहे हैं।

स्काटलेण्डके खान्दानी शेरिफ सर रेनाल्डने आयरकी सभासे पहलेही मंकटनकार्कमें जातीय दलकी एक सभा की। वालेस इस सभामें आया था।

इस समय वालेसके एक अजीब स्वप्नकी बात कही जाती है। कहते हैं कि उस मंकटनकार्कमें पहुंचनेसे पहले वालेस रास्तेकी थकावटसे कहीं सोगया। उसने सोते समय एक अद्भुत स्वप्न देखा। देखा—एक बूढ़ेने आकर उसका हाथ पकड़कर कहा—'पुत्र! यह लो तुम्हारे लिये विशाल शत्रुसंहारिणी असि लेआया हूं—

इसे लो।' तलवारकी चमकसे दसोंदिशाएं प्रकाशमान हो गईं। वह बूढ़ा वालेसको एक पर्वतकी घाटीमें लेजाकर अन्तर्धान होगया। वालेसकी आंखोंने बहुत दूर तक उसका पीछा किया फिर रुक गईं। वालेस उसका विशेष हाल जाननेके लिये व्याकुल हुआ। उसने देखा कि सामने कुछही दूर पर मेघमालासे एक बड़ा भारी अङ्गारा निकलकर राससे सालवे सैण्ड तक समस्त स्काटलेण्डमें फैल गया। उसी अग्निकुण्डसे एक स्वर्णमयी देवीका आविर्भाव हुआ। देवीकी देहकी आभासे दसोंदिशाएं चमक उठीं। यहांतक कि भगवान सूर्य्यदेव भी मलिन होगये। देवी मूर्ति धीरे धीरे वालेसकी तरफ उतरने लगी। उसने वालेसके पास आकर कहा—"वत्स! यह लाल हरा दण्ड ग्रहण करो, ईश्वरने निपीड़ित जातिका उद्धार करनेके लिये तुमको अधिनायक बनाया है। हृदय में साहस करके उसका यह बड़ा काम पूरा करो। इस पृथिवीमें तुम्हें पुरस्कारकी आशा बहुत कम है किन्तु वैजयन्ती-धाममें तुम्हारे लिये सिंहासन तय्यार है।" यह कहकर देवी वालेसके हाथमें एक पुस्तक देकर जिस मेघमालासे निकली थी एकाएक आकाश की ओर जाकर उसीमें लिप्त गई। स्वप्नमें वालेसने पुस्तक खोल कर देखा कि उसका पहला भाग जस्तेके अक्षरोंसे, दूसरा सोनेसे और तीसरा चांदी के अक्षरों से लिखा है। लिखा हुआ पढ़नेकी चेष्टा करनेमें वालेसकी नींद टूटगई। वह झट बेंचसे उठकर गिर्जेके बाहर आया और पादरीने स्वप्नका पूरा हाल कह सुनाया। पादरीने यथाशक्ति उसका मतलब निकालनेकी कोशिश की। कहा—महात्मा सेन्टएण्ड्रूने तुम्हें यह तलवार दी है। जिस पहाड़के पास वह तुम्हें ले गये वह अत्याचारोंका तूदा था तुम्हें इन अत्याचारोंका बदला लेनेका इशारा किया है। वह आग स्काटलेण्डके अशुभकी सूचना है। वह देवी स्वयं कुमारी मेरी हैं। इस दण्डसे तुम्हें स्काटलेण्डका शासन और शत्रुका दमन करना होगा दण्डके लाल रंगसे युद्ध और खून-खराबी जाहिर होती है वह तीन भागोंमें बटी हुई पुस्तक तुम्हारे

खण्ड खण्ड हुए देशकी सूचना करती है। देवीने यह पुस्तक तुम्हारे हाथमें देकर इस छिन्न भिन्न देशको एक करके उसका उद्धार करने का भार तुम्हारे कन्धे पर दिया है। जस्तेका अक्षर अत्याचारका स्वर्णाक्षर इज्जत और अत्याचारका और चांदीका अक्षर पवित्र जीवन और स्वर्गीय सुखका सूचक है। इस स्वप्नसे वालेसको बड़ी चिन्ता हुई।

वालेसने मकन्टन गिर्जेसे चाचा सहित करसबीकी यात्रा की। वहां रात बिताकर दूसरे दिन सवेरे आयर नगरको रवाना हुआ। वहलोग घोड़े पर सवार होकर किंङ्गस कील अस्पताल तक गये थे कि इतनेमें सन्धिपत्रकी बात वालेसको याद आई। अङ्गरेजों पर विश्वास नहीं था इसीसे उसने सन्धिपत्रको अपने पास रखना उचित समझा था वह करसबीमें एक बड़ेही गुप्तस्थानमें रखा था। वालेस और उसके चाचा सर रेनाल्डके सिवा और किसीको उस का पता मालूम न था इसलिये वालेसने खुद तीन सहचरों सहित करसबीको कूचकिया। सर रेनाल्डके मनमें अशुभकी कुछ आशङ्का न हुई। इससे उन्होंने वालेसकी इन्तजारी न करके अकेले आयर की सभाके लिये कूच किया आयरमें एडवर्डकी सेनाके आरामके लिये एक छावनी बनाई गई थी। उसीमें सभाका अधिवेशन हुआ। सररेनाल्ड सबसे पहले सभामेंपहुंचे। अंगरेजोंने उनकेलिये फांसीका फन्दा लगा रखाथा। सररेनाल्ड ज्योंही पहुचेत्योंही एकरस्सी उनके गलेमें फंस गई और वह लकड़ीपर झूलने लगे। एक एक करके ब्रूयर सर नील मान्टगोमरी वगैरहकी भी यही दशा हुई। वालेसके परम मित्र क्राफोर्ड, केम्बल, बायड, बार्क्ली, स्टुआर्ट वगैरहने इसी पैशाचिक जालमें फंसकर प्राण गंवाये। इस दुर्दिनमें स्काटलेण्ड के करीब चारसौ वीर बिना लड़ाई कुत्ते गीदड़की तरह मारे गये। इस शोचनीय हत्याकाण्डका वर्णन करनेसे जी कांपता है आंखोंमें आंसू सूख जाते हैं। सभा करनेवालोंने इससे भी सन्तुष्ट न होकर उन वीरोंकी नंगी लाशें इधर उधर फेंकदीं।

रावर्ट बायड, सर रेनाल्डके पीछेही पीछे आये थे उन्होंने रेनाल्ड की शोचनीय हत्याकी खबर पाकर वालेसके बीस साथियों सहित एक होटलकी शरण ली। वालेसका एक और सहचर आयर्लेण्डका ष्टीफन आयरकी सभामें जाता था राहमें वालेसके रिश्तेकी किसी औरतने रेनाल्ड आदिकी हत्याका हाल उससे कहा। इसलिये वह भी उसी होटलमें जाकर बायडसे मिला और वहांसे सब लांगलन बनकी तरफ चल दिये।

इधर वालेस करसबीसे सन्धिपत्र लेकर आयरकी छावनीकी तरफ चला। रास्तेमें उसी स्त्रीसे भेट हुई। उसने उस भयंकर हत्या-काण्डकी बात उससे कही और उससे इसका बदला लेनेका अनुरोध किया। वालेस यह समाचार सुनकर हक्कावक्का और शोकाकुल हो गया। उसने एडमवालेस और विलियम कार्फोर्डके निकट यह खबर भेजनेका भार उस स्त्रीको देकर बायड और ष्टीफनसे मिलनेकेलिये लांगलनकी यात्रा की।

उधर उसको जबर्दस्ती सभामें लानेके लिये सोलह अङ्गरेज सैनिक भेजे गये। राहमें वालेससे उनकी भेट हुई। वह वालेस को पहचानते नहीं थे। किन्तु उसकी अद्भुत वीरताने जल्दही उसका परिचय देदिया। उसने और उसके साथियोंने क्षणभरमें दस अङ्ग-रेजोंको मार डाला। बाकी ६ जान लेकर भाग गये।

आयरके नये गवर्नर आरनल्फने उस सभामें जितने अङ्गरेज आये थे उनका उत्साह बढ़ानेके लिये सबको नाइटका खिताब दिया। उस सभामें कोई ४ हजार अङ्गरेज जमा हुए थे। गवर्नरने वादा किया कि मृत स्काट बैरनोंकी जायदाद उन लोगोंमें बांट दी जायगी। सभूसी सभ्य मण्डलीके सम्वर्द्धनार्थ एक बड़ाभारी भोज हुआ। अङ्गरेज खान पानके रेलपेलसे बदमस्त होगये। वही विश्वासिनी स्वजातिप्रेमिका स्त्री यह खबर लांगलेनबनमें वालेसके पास लेगई। इस बीचमें वालेस के पास बहुतसे आदमी जमा होगये थे। उसने आज उनको आयर की भीषण हत्याकाण्डका बदला लेनेका जोश दिलाया। यद्यपि वह

पहलेसे स्काटलेण्डका अधिनायक बनाया गया था तथापि उस समय यहसब लोग मौजूद न थे इससे उसने नये चुनावके लिये पांच आदमी चुननेका अनुरोध किया। उसके अनुसार वालेस बायड क्राफोर्ड एडम और अचिङ्गलेकचुनेगये। इन पांचोंने चिट्ठी डालकर अपने अपने भाग्यकी परीक्षा करना चाही। तीन बार चिट्ठी डाली गई तीनोंबार वालेसकेही नाम निकली। तब उसने सेनापतिका पदग्रहण किया और तलवार छूकर प्रतिज्ञाकी कि जबतक आयरकी हत्याका बदला न लूँगा तबतक पानी न पीऊंगा।

उसी दम वालेस की कार्य प्रणाली स्थिर हुई। उसने स्थिर किया कि आयर की बारक और शहर के जिन जिन मकानोंमें आज रातको अङ्गरेज ठहरे हैं उनमें आग लगादेंगे। उसने उस विश्वासिनी स्त्रीको और आयरके कुछ आदमियोंको हुक्म दिया कि तुम लोग जिन मकानोंमें अंगरेज़ हैं उनपर खड़ियासे दाग दे आओ और बीस आदमियोंको भेजा कि वह उनसब मकानोंके दरवाजोंपर जलनेवाली चीजें रख आवें। राबर्ट बायडको पचास आदमियोंसहित किलेके दरवाजे पर इसलिये तैनात किया कि जब चारों ओर आग लगे तब नगरकी रक्षाके लिये किलेसे सेना बाहर न निकलने पावे। बाकी आदमियों सहित वह स्वयं छावनी की तरफ चला और दागवाले सब मकानों के दरवाजों पर आदमी तैनात कर दिये। एकही वक्त बारक और दागवाले मकानों में आग लगा दी गई। जलनेवाली चीजोंके संयोगसे आग लगते ही चारों ओर धधक उठी मतवाले अङ्गरेज जहांजहां थे वहीं जलकर भस्म होगये। उसरातको किलेमें सिर्फ थोड़ीसी सेना थी क्योंकि प्रायः सब सेना सभामें आगई थी। जो लोग किलेमें थे उनमेंसे बहुतेरोंने अग्निकी ज्वाला देखकर किलेसे बाहर आनेकी कोशिश की बायडने कुछ रोक टोक न की। लेकिन किले में घुस कर जोलोग वहां छिपे थे उन सबको मारकर किला लेलिया। वहां उसकी रक्षाके लिये २०आदमी छोड़कर नगर की शान्ति रक्षामें वालेसकी मदद करनेके लिये बाकी साथियों

सहित बाहर आया। उस रात आयरमें सब मिलाकर ५ हजार अङ्गरेज अपने घोर विश्वासघातका प्रायश्चित्त करने के लिये काल के गाल में गये। १२९७ ईस्वी की ग्रीष्मऋतुमें यह घटना हुई।

यथासमय सब आकर मिले, तब वालेसने बिना बिलम्ब ग्लासगो की यात्रा करनेका सङ्कल्प किया। क्योंकि वहां भी ऐसी एक सभा होनेकी बात थी और वालेसको खटका हुआ कि कहीं हमारे हित मित्रों पर वहां कोई विपद न पड़ी हो। उसने आयर के मुख्य मुख्य लोगोंको बुलाया। उनके हाथमें लौटने तक किले और शहरकी रक्षाका भार देकर तीन सौ सवारों सहित ग्लासगो को कूच किया। उनके पास घोड़े न थे इसलिये उन्होंने हत अङ्ग-रेज सैनिकोंके घोड़ोंसे अपने अपने लायक ३०० घोड़े चुन लिये। ३०१ सवार बड़े वेगसे बातकी बातमें ग्लासगोके तोरणद्वार पर जा पहुंचे। अङ्गरेज डरके मारे अधीर हुए। विशपवेकके हाथ नगर और किलेकी रक्षाका भार था उन्होंने झट एक हजार सेना इकट्ठी की। वालेसने अपनी सेनाके दो टुकड़े करके एक भाग अचिंगलेक को दिया और एक भागका सेनापति स्वयं हुआ। दोनोंने दो तरफसे शहर पर हमला करनेका प्रस्ताव किया। अङ्गरेज वालेस की सेना थोड़ीसी देखकर ताज्जुबमें आये। फौरनही दोनोंदलोंमें लड़ाई छिड़ गई। यद्यपि अङ्गरेजोंकी ओर प्रायः चौगुनी सेना थी तथापि वालेस और उसके वीरवृन्द अदंमित तेजसे अङ्गरेज सवारोंको भूमि पर गिराने लगे। इधर अचिंगलेककी सेनाने उत्तर की तरफसे नगर पर आक्रमण किया। तब अंगरेज सेना दो हिस्सोंमें बंट गई। अचिंगलेककी सेनाने बड़े वेगसे टूटकर शत्रुसेना को तितर बितर कर दिया। इसी बीचमें वालेसने भी आगे बढ़कर एक तलवारसे अङ्गरेजी झण्डेवालेका सिर काट डाला। झण्डेके गिरतेही अङ्गरेजी सेनाके हृदयका बल टूट गया। चारसौ अङ्गरेज विशपवेकको लेकर दक्षिण जंगलकी तरफ भागे। वालेसने दलबल सहित पीछा करके बहुतोंको पछाड़ा। सर आमेर डी

वालेसकी मददसे बेक थोड़ेसे साथियों सहित जान लेकर भागने पाये थे।

जातीयदलकी इस बहादुरीसे संतुष्ट होकर स्काटलेन्डके बहुतेरे जमीन्दार (लार्ड) धीरे धीरे एडवर्डके विरुद्ध सिर उठाने लगे। बूकल, आथोल, मेनटीथ, लोरन, सर नील केम्बल डङ्कन प्रभृति पुराने खान्दानी लोग एडवर्डकी अधीनता छोड़कर जातीयदलके साथ सहानुभूति दिखाने लगे।

मेकफेडियन और सिर्फ ४ और जमीन्दार अङ्गरेजोंकी तरफ रहे। उन्होंने १५ हज़ार सेना लेकर सर नील केम्बलके नगरको कूच किया। यह शहर खाईसे घिरा हुआ था जिस पर सिर्फ एक पुल लटक रहा था। केम्बलने वह पुल फेंक दिया। शत्रु सेना को खाई पार होनेका साहस न हुआ वह इसी पार बैठी रही। इधर केम्बेलने वालेसको खबर देनेके लिये दूत भेजा। केम्बेल और वालेस दोनों डण्डीके स्कूलमें एकही साथ पढ़े थे। स्वदेशानुरागका भाव दोनोंके दिलमें उसी समय बढ़ा। अर्ल डङ्कन दूत बने उन्होंने ढूँढ़ते ढूँढ़ते अन्तमें डनडफ किलेमें वालेसको पाया। वह सुनतेही सर जान ग्रेहमको लेकर केम्बेलकी मददको रवाना हुआ।

इस समय एडवर्डके पक्षपाती अर्ल रोकबी असंख्य सेनासहित स्टर्लिंग कैसल नामक किलेमें थे। वालेस उसी राहसे आता था उसने उस किले पर भी अधिकार जमानेकी ठान ली। जब वालेस उसके दरवाजे पर पहुंचा तब अर्ल मलकम ससैन्य उससे आमिला। उसने मिलित सेनाके दो भाग करके पहला भाग मलकमके जिम्मे छोड़कर एक सौ हट्टे कट्टे और लड़ाके वीरोंको लेकर ग्रेहम सहित किलेमें प्रवेश किया। रोकबीने उस थोड़ीसी स्काटसेनाकी परवा न करके १४० तीरन्दाजोंसे उसका मुकाबला किया। दोनोंमें घमासान युद्ध हुआ।

ग्रेहम ज्योंही आगे बढ़ा त्योंही एक अङ्गरेजी तीरन्दाजका तीर उसके घोड़ेको लगा। ग्रेहम कूदकर जमीन पर

आया। यह देख वालेस भी घोड़ा छोड़कर पैदल हुआ। दोनों पांव-प्यादे घोर युद्ध करने लगे। इतनेमें मलकमने बाकी सेना लेकर किलेमें प्रवेश किया। अङ्गरेज सेनाके अब कान खड़े हुए। वह भागनेकी फिक्रमें लगी मगर राह न मिली। हाथापाई करते वालेस रोकबीके सामने आ पहुंचा। झट उसकी तलवार ने रोकबीको काट डाला। धीरे धीरे स्काटवीरोंके अव्यर्थ अस्त्रोंसे सब अङ्गरेजी सेना मारी गई। सिर्फ रोकबीके दो पुत्र और २० सैनिक रहे। उनके आत्मसमर्पण करनेसे स्टर्लिंगकैसल स्काटोंके हाथ आगया। इस दुर्गकी रक्षाका भार मलकमको देकर वालेस केम्बलकी सहायताको चला।

मेकफेडियन स्काट लोगों पर बड़ा भारी जुल्म करने लगा था उसके रक्तके प्यासे सैनिक वालक और स्त्रीको मारनेमें भी नहीं सकुचातेथे इससेवालेसने प्रतिज्ञा कीकि यातो उसे उसके पापका पूरा दण्ड दूंगा या लड़ाईमें प्रान दूंगा। उसने दो हजार सेना लेकर केम्बलकी तरफ कूच किया। केम्बल उस समय आर्गाइलशायरमें वालेसकी बाट देखते थे। डंकन वालेसका पथप्रदर्शक होकर उसे आर्गाइलशायरको ले चला।

वालेसकी सेना चलते चलते थक गई। विशेषकर नाटे शरीरके कुछ सैनिक बहुत पिछड़ गये। आक्रमणमें विलम्ब करना या तितर बितर होकर आक्रमणकरना—दोनोंको हारकीजड़समझ कर वालेसने अपनी सेनाके पांच भाग किये। छांट छांटकर सर्वोत्कृष्ट एक सौ सवार स्वयं लिये, एक सौ सर जान ग्रेहमको दिये और सर रिचार्ड लन्डिन और एडम वालेसको पांच पांच सौ दिये। यह बारहसौ चुनी हुई सेना लेकर वह लोग आगे बढ़े। बाकी सेनाको धीरे धीरे आगे बढ़नेका हुक्म देगये।

इस तरह कतार बांधकर वह लोग ग्लान्डोकार्टमें आपहुंचे। यहां सर नील केम्बलसे मुलाकात हुई। केम्बल वालेससे मिलने के लिये कुछ आगे बढ़ आये थे। वालेसको पाकर उनके आनन्द

की सीमा न रही। केम्बलकी तीन सौ सेना सहित गिल माइ-केल नामका एक आदमी शत्रुसेनाका हालचाल लेनेके लिये भेजा गया। उसने एक शत्रु दूतसे सुना कि अङ्गरेजसेना उसीदिन ग्रेसमो-रसे चली जायगी। पीछे ऐसा न हो कि वह दूत जाकर मेकफेडियन को हमारी खबर दे इस खटकेसे स्काटदूतने अङ्गरेज दूतको मार डाला। फिर उसने आकर वालेसको यह खबर दी।

केम्बलकी सेना लेकर अब वालेसके पास अठारह सौ सेना हो गई है। बीहड़ रास्तेका ख्याल करके वह लोग घोड़े छोड़कर पैदल शत्रुसेनाके सामने चले। मूसलधार वृष्टिकी तरह शत्रु सेना पर टूट पड़े। शत्रु सेना तितर बितर होगई। संख्याकी अधिकतासे फिर उसका सिलसिला बंध गया। वालेस, ग्रेहम, केम्बल, लन्डिन एडम वालेस और राबर्ट बायड—इन छः वीरोंका अद्भुत रणपा-ण्डित्य और अमानुषी शक्ति देखकर शत्रु सेना चकित और भय-भीत हुई।

निराशाके जोशमें मेकफेडियन और उसकी आइरिश सेना लड़ाईमें जान पर खेलने लगी। दो घण्टे तक घोर युद्ध किया। किन्तु स्काटिश जातीय दलका समस्त वेग अन्तमें मेकफेडियनकी आइरिश सेना पर जापड़ा। वह उसे सम्हाल न सकी और लड़ाई छोड़कर भागी। कुछ पहाड़ पर चढ़ गई किन्तु ज्यादातर हथि-यारोंसे बचनेके लिये जलमें कूद पड़ी। दो हजार आइरिश जलमें कूदे और फिर न निकल सके। आपही जलमें डूब गये। मेकफेडियनकी स्काटिश सेना अन्ततक लड़ी अन्तमें उसने हथियार डालकर वालेससे क्षमा मांगी। वालेसने हुक्म दिया कि हरगिज स्वजातिका खून न गिरने पावे। मेकफेडियनने भागकर एक कन्दरे की शरण ली थी। डंकनने वहां जाकर उसको मार डाला और उसका सिर लाकर वालेसको उपहार दिया।

जिन्होंने वालेससे शान्तिकी भीख मांगी उसने उन सबको उनकी जमीन लौटादी। लोरेनमें सर्वत्र अभूतपूर्व शान्ति

बिराजने लगी। स्वदेशानुरागके पुरस्कारके तौर पर वालेसने डंकनके हाथमें लोरेनका किला सौंप दिया।

धीरे धीरे असंख्य स्वजातिप्रेमी स्काट वालेसके झण्डेके नीचे आखड़े हुए। सर जान रामजे, पुरोहित सिनक्लेयर, लार्डस् आर्ट आदि उनमें मुख्य थे। इधर वालेसकी जो सेना पिछड़ गई थी वह भी विजयक्षेत्रमें आपहुंची। मैदानमें मरी हुई शत्रुसेनाके शरीरमें जो हथियार और सामान अब भी मौजूद थे वह सब इसने लेलिये। अब स्काटसेनाकी संख्या बहुत बढ़ गई और वह विजयके उल्लासमें मस्त होगई।

वालेसने सुना कि स्कोन नगरमें आर्मेस बी नामक एक अङ्गरेज जज है। वह सर विलियम डगलसको लेकर वहां पहुंचा। उसके अचानक आक्रमणसे घबराकर वहांवाले भागनेलगे। आर्मेसबी कुछ आदमियों सहित निकल गया। बाकी सब इन दोनोंके हाथ मारे गये। वालेस और डगलस कीमती चीजें लूटकर जातीय छावनीको लौट आये।

सुविख्यात ब्रूसके ससैन्य आजानेसे इस समय जातीय दलका बल बहुत बढ़ गया था। जिस जातीय स्वाधीनताका यज्ञ वालेसने आरम्भ किया है सुप्रसिद्ध वैनकबरन रणक्षेत्रमें वीरवर ब्रूस उस यज्ञको समाप्त करेंगे।

स्काटलेन्डके विद्रोहने ऐसा भीषण आकार धारण किया कि एडवर्ड अपनी फ्लैन्डर्सकी युद्धयात्रा रोक देनेको लाचार हुए। उन्होंने भानजे लार्ड हेनरी, पर्सी और राबर्ट डी क्लीफोर्डके अधीन चालीस हजार पैदल और तीन सौ सवार सेना स्काटलेन्डको भेजी। जब यह महती अङ्गरेजसेना एनमडेलसे होकर जारही थी उसी वक्त रातको कुछ स्काटोंने उस पर आक्रमण किया। इसमें अङ्गरेजोंका नुकसान बहुत हुआ परन्तु स्काट उन्हें रोक न सके।

इस अङ्गरेज सेनासे स्काटसेनाकी इरविङ्गमें भेट हुई। स्काट लड़नेकेइरादेसे एक ऊंचेखेतमें सजेसजाये अङ्गरेजोंकी राहदेखतेथे।

स्काटोंका दल बड़ा जबरदस्त था उसको लेकर लड़ना बहुत मुश्किल न था किन्तु स्काटलेन्डके दुर्भाग्यसे जातीयदलमें इसी समय सेनापतित्वको लेकर बड़ा फसाद खड़ा होगया। जिस जातिका भाग्य फूटता है वह ऐसीही धड़ाबन्दीमें पागल होकर जातीय कर्तव्य भूल जातीहै। जातीय कर्तव्य भूलकर इस समय लुन्डिन; स्टूआर्ट, राबर्ट ब्रूस, सर विलियम डगलस, अलकजेन्डर डी लिनसे और वालेसकी बहाल किये हुए नये विशप विसार्ट प्रभृति जातीय नेता अपने साथियों सहित जातीय दल छोडकर अङ्गरेजी छावनीमें चले गये। १२९७ ई० की तारीख ९ वीं जुलाईको इन विश्वासघातक जातीय नेताओंसे एडवर्डकी सन्धि हुई। एडवर्डने इस सन्धिके फैसलेमें जातीय नेताओंकी पूरी स्वाधीनता और जमानत ली। अङ्गरेजोंने समझा था कि चारोंओरसे निराश होकर वालेस अन्तमें इसी सुलहनामे पर सही करेगा। किन्तु उन लोगों की आशा पूरी नहीं हुई। जिसने स्वजातिके चरणोंमें अपना जीवन समर्पण कर दिया है, जिसने अपना स्वार्थ स्वजातिके स्वार्थ पर न्योछावर कर दिया है वह क्या जातीय मर्य्यादाके बदले शत्रुसे अपना प्राण भीख मांग सकता है? नहीं—हरगिज नहीं। वह स्काटकेसरी सर जान ग्रेहम, सर एन्ड्रू मरे और दूसरे हितमित्रों और सहचरों सहित मनमलीन करके पहाड़की ऊंची चोटियोंकी तरफ चला गया। इधर अङ्गरेज सेनापति पर्सी और क्लीफोर्ड स्काट लोगोंमें फूट डालकर और शरणागत स्काट बैरनोंको अधीनताकी बेड़ी पहनाकर झटपट इङ्गलेन्डको चलदिये।

राहमें जाते जाते स्काटोंके जीमें आया कि सेन्ट जानस्टन किले पर दखल करना चाहिये। यह किला खाई और दीवारोंसे घिरा था। दीवारें बहुत ऊंची न थीं इससे खाई पर तख्ते बिछाकर झट एक हजार सैनिक खाई पार करके और दीवार फांदकर किले के भीतर घुस गये और दरवाजा खोल दिया। समूची स्काट सेना भीतर चली गई। अङ्गरेज अचानकके आक्रमणसे घबरा गये।

किलेदार सर जान स्त्रिवार्थ मुख्य मुख्य ६० सैनिक लेकर नाव पर सवार हो डन्डीनगरको भाग गये। किले पर हमला करनेके समय रथवेन नामके एक स्क्वायरने तीस साथियों सहित पहुंचकर वालेस को बड़ी सहायता की। तीन दिन वालेस किलेमें लूटपाट करता रहा फिर रथवेनको किला सौंपकर उत्तरको चला गया।

उसने एवर्डीनमें एक जातीय सभा की। उसके आनेसे एबट काउपर नगर छोड़कर भागगये। उत्तरको तरफ जाते जाते ग्लासिस नगरमें वालेस विशप सिनक्लेयरसे मिला। सिनक्लेयर उस के साथ होलिये। ब्रेचिनमें आकर उन्होंने रात बिताई। सवेरे तय्यार होकर स्काटलेण्डका झण्डा उड़ाया और इङ्गलेण्डके विरुद्ध खुल्लम-खुल्ला युद्ध की घोषणा की। मियरन्स जिलेसे होकर वहलोग गये। अगरेज चारोओर डरकर भागने लगे। अन्तमें ४ हजार अङ्गरेजोंने केन शहरके गिर्जेमें आकर शरणली। उस गिर्जेके विशपने इङ्गलेण्ड जानेकी आज्ञाचाही। किन्तु वालेस आयरका विश्वासघात यादकरके बदला लेनेको तयार हुआ। उसने गिर्जेमें आग लगा दी। देखते ही देखते चार हजार अङ्गरेज जलकर राख होगये।

इसके बाद वह लोग एवर्डीनमें गये वहां एक सौ अङ्गरेजी जंगी जहाज माल असबाबसे लदे समुद्रमें खड़े थे। वालेस सेनासहित उन पर टूटपड़ा और लूटपाटकर अन्तमें आग लगादी। पुरोहित स्त्रियों और बालकोंके सिवा और किसीको भागने नहीं दिया। जहाजके बाकी अङ्गरेज जल मरे जो किनारे थे वह वालेसकी तलवारके शिकार हुए।

वालेसने विजयीसेनासहित इसके बाद बूकनके लार्ड वोमिण्टकीतरफ कूच किया। अंङ्गरेज लार्ड उनके आनेकी खबर सुनतेही शहर छोड़ कर समुद्रके रास्ते भागगये। इसके बाद उसने डन्डी किलेपरहमला करनेका विचारकिया। इसको छोड़कर फोर्थके और सब किले इस समय वालेसके हाथ आगये हैं। उसका आगमन सुनकर विश्वाघातक सर आयर डि वालेन्स इस जन्मके लिये जन्मभूमि छोड़कर

इङ्गलेण्ड भाग गया। वालेसकी विजयवार्ता उसने औरोंकी मार्फत एडवर्डके कानतक पहुंचाई एडवर्ड बहुत काममें फसेरहनेसे स्वयं तो न जासके मगर साठ हजार सेनासहित खजानची क्रेसिंहम और और अर्लवारिनको स्काटलेण्डपर भेजा। स्टर्लिंग किलेपर फिर दखल और स्काटलेण्डको अच्छीतरहसे पराजय करना इस चढ़ाईका मुख्य उद्देश्य था। विश्वासघातक अर्ल डनवर इस अङ्गरेज सेनाके साथ टुइ नदीके किनारे आकर मिल गये। यह विराट सेना स्टर्लिंग महलके सिंह दरवाजे पर आपहुंची, आतेही किला घेर लिया। अर्ल मलकम जातीय दलके प्रतिनिधि होकर इस किलेकी रक्षा करते थे।

यह सुनकर वालेस डन्डीके घेरेमें एक हजार सेना छोड़कर बाकी सेना सहित स्टर्लिंग कैसलको चला। राहमें जापको सेना लानेका भार सौंपकर और उसको मंगलके दिन ससैन्य स्टर्लिंगकैसल के सामने उपस्थित होनेका हुक्म देकर रामजे और ग्रेहमके साथ वालेस शनिवारको उस किलेकी तरफ रवाना हुआ।

एक लकड़ीके पुलसे किलेके भीतर जाना पड़ता था। वालेसने एक चतुर बढ़ईसे पुलको बीचोंबीचसे चिरवा दिया और उसपर इस तरह मट्टी दिलवाई कि किसीको उसका दो खण्ड होना मालूम न होसके। कटावके बीचमें इस तरह काठकी थूनियां दीं कि चाहे जितनी सेना पुलसे बेखटके पार होजाय। थूनियां इस ढङ्गसे लगाई गईं कि एकके हटानेसे सब गिर पड़ें और पुल दो टूक होकर नदी में डूब जाय।

वालेसने उस बढ़ईको हुक्म दिया कि तुम लड़ाईके दिन यहां छिपे रहना। जब मैं शंख बजाऊं उसी समय थूनी हटाकर सरक जाना।

उस भयानक मुठभेड़का दिन आगया। अङ्गरेज सेना स्काट-सेनासे पचास गुनी ज्यादा थी। वालेस वह थोड़ीसी सेना किलेमें लेआया। अङ्गरेज सेनाके दो भाग होकर बीस हजार क्रेसिंहमके

अधीन आगे गई और ३ हजार वारेनके अधिपतित्वमें पीछेपीछे आने लगी। क्रेसिंहमकी सेनापुलपार होगई शंख नहीं बजा। स्काट डरे। पलभरमें वारेनकी सब सेना पुलके ऊपर आगई। तब शंख बजा। उसके साथ साथ वह लम्बा चौड़ा लकड़ीका पुल वारेनकी सेना सहित जलमें धस गया। अंगरेज सेनामें भारी हाहाकार मचा। गिरते हुए घोड़ों और घुड़सवारोंकी चीखसे आकाश फटने लगा। इधर वालेस, ग्रेहम, बायड रामजे प्रभृति मस्त शेरकी तरह क्रेसिंहमकी सेना पर आटूटे। वालेस क्रेसिंहमको लक्ष्य करके बड़ी दिलेरीसे उधरही दौड़ा। उसकी यह रण चण्डीमूर्त्ति देखकर शत्रुसेनाको रोकनेका साहस न हुआ। उसने बेधड़क क्रेसिंहमके सामने जाकर एकही तलवारमें घोड़े और घुड़सवारको काट गिराया। सेनापतिके पतनसे अङ्गरेज सेनाका साहस टूट गया। तथापि उसने असीम साहसके साथ कुछ देर युद्ध किया। मगर जब देखा कि दस हजार सेना सेनापतिके साथ सिधार गई तब वह डरसे तितर बितर होकर भागगई किन्तु शत्रुसेनाके पीछा करनेसे कोई न बचा। जो जलमें कूद पड़ेथे वह डूब गये। जिन्हें जलमें कूदनेका साहस न हुआ वह स्काटोंकी तलवारोंके नीचे आगये। इसतरह जो बीस हजार अङ्गरेज सेना पुल पार हुई थी उसमेंसे एकभी सैनिक अपने देशको न लौट सका। वारेनकी सेनामेंसे जो पुलके उसपार थे वह यह हाल देखकर एकदम डनबरकी तरफ भागे। किन्तु वहभी पीछा करनेवाले स्काटोंके हाथसे न बचे। वालेस और ग्रेहमने शत्रुओंको हेडिंगन नगरमें जा पकड़ा। उनके हथियारोंसे कितनेही मारे गये। यहां रामजे, बयिड, लन्डिन एडम वालेस और अर्लमलकम सहचरों सहित उससे आमिले। १२८७ ईस्वीकी ११वीं सितम्बरको यह प्रसिद्ध युद्ध हुआ। इसमें बहुत थोड़े स्काट मारे गये जिनमें एन्ड्रू मरेके सिवा और किसी सेनापतिकी मृत्यु नहीं हुई। मगर उस बेशुमार अङ्गरेज सेनामेंसे बहुतही थोड़े आदमी भागकर बचे थे। क्रेसिंहम प्रभृति सरदार

लोग उसी मैदानमें बेसमय मारे गये। इतने दिनमें स्काटोंने वारविक डनवर आयर आदिकी भयानक हत्याका बदला लिया। इतने दिन पीछे उनके हृदयकी दाह बुझी।

स्काटलेन्डके रक्तसे जो अङ्गरेज शरीर मोटा ताजा हुआ था उसी अङ्गरेज शरीरके रक्त मांससे आज स्काटलेन्डकी भूमि उपजाऊ हुई।

वालेस सहचरों सहित वह रात हेडिङ्गटन नगरमें बिताकर दूसरे दिन स्टर्लिङ्ग कैसलमें आपहुंचा। बिना विलम्ब उसने घोषणा की कि स्काटलेन्डके सब बैरन आकर जातीय स्वाधीनता फिरसे कायम करने और जातीय शान्तिकी रक्षाके लिये मेरी मातहती स्वीकार करें। जिन्होंने इससे इनकार किया वालेसने उनके दर्पका उचित दण्ड दिया। सरजान मेन्टीथ आदि पुराने खान्दानी बैरनोंने एकएक करके उसकी मातहती स्वीकार की।

इधर वारेन अपनी अपार सेना स्टर्लिङ्ग कैसलके रणक्षेत्रमें खोकर बड़ी फुर्तीसे वारविककी तरफ भागे। स्वदेश वासियोंसे उस अङ्गरेज सैन्यदलका समाचार सबसे पहले उन्हींको कहना पड़ा। इस समाचारसे स्काटलेन्डके अङ्गरेज इतने डरे कि एक घड़ी भी स्काटलेन्डमें रहनेका उन्हें साहस न हुआ। उन्होंने अपना अपना किला छोड़कर झटपट इङ्गलेन्डका रास्ता लिया।

इसप्रकार स्टर्लिङ्ग युद्धके बाद दस दिनमें वारविक और रक्सबराके सिवा स्काटलेन्डके और सब किले वालेसके हस्तगत होगये। बहुत दिनके बाद फिर स्काटलेन्डकी जातीय पताका फहराने लगी। इतने दिनपर स्काटलेन्ड स्वाधीन हुआ। आज जातीय दलके हृदयमें आनन्द नहीं समाता। पतित जातिके सिवा इस आनन्दका अन्दाज और कौन कर सकता है?

वालेस स्काटलेन्डका गवर्नर बनाया गया। उसने विलियम क्राफोर्डको एडिनबराका किला सौंप दिया।

यह शोक सम्बाद समुद्र पार होकर फ्लेन्डर्समें एडवर्डके पास पहुंचा। उनके सिरसे मानो ताज खस पड़ा।

दसवां अध्याय।

स्टिरमूर और लेमरमूरका युद्ध।

स्टरलिंग ब्रिजकी लड़ाईके बाद स्काटलेण्डमें पांच महीने शान्ति रही। पांच महीने अङ्गरेजोंको स्काटलेण्डकी शान्ति भङ्ग करनेका साहस न हुआ। उसी भीतरी शान्तिके समय वालेसने पर्थनगरमें एक जातीय सभा बुलाई। स्काटलेण्डके सब जागीरदार और बड़ेआदमी उस सभामें जमा हुए। सिर्फ बिश्वासघातक कसपेट्रिकने आना अस्वीकार किया। उसने अपने किलेमें बैठकर उस जातीय बलको नीचा दिखाया और उस जातीय बुलावे पर बहुत व्यंग बाण छोड़े। सभाके सब लोगोंने उसी वक्त उसपर सेना भेजनेके लिये वालेसको सलाहदी। किन्तु वालेसने यह न करके पहले उसे कहला भेजा कि अगर आप अपने पिछले अपराधके लिये क्षमा मांगें और आगे बिश्वास दिलावें तो इस बार आप माफ किये जायंगे। यह बात सुनकर कसपेट्रिक बहुत हंसा और उसनेदूतके द्वारा उत्तरभेजाकि अपने जङ्गली राजासे जाकर कहना कि कसपेट्रिक इस जिन्दगीमें उसकी अधीनता न मानेगा और अपने राज्यमें शासन करनेसे भी न डरेगा।

इस हेकड़ी पर समस्त जातीय सभा कसपेट्रिकसे बिगड़ गई। क्रोधसे वालेसकी आंखोंसे चिंगारियां निकलने लगीं। उसने प्रतिज्ञा की कि कसपेट्रिक और मैं दोनों एक साथ स्काटलेण्डमें हुकूमत नहीं कर सकते एक म्यानमें दो तलवार नहीं रह सकतीं। यह प्रतिज्ञा करके वहमस्तहाथीकी तरह सभासे निकला। वालेसकी जो प्रतिज्ञा थी वही काम। उसने उसी वक्त दो सौ सवार सेना लेकर डनबरको कूच किया। रास्ते में उसकी सेना दूनी होगई।

अर्लपेट्रिकने नौ सौ सेना लेकर उस प्रवाहिनीकी चाल रोकना चाहा किन्तु प्रवलप्रवाहिनी तिनकोंकी तरह पेट्रिककी सेनाको चीर कर डनबरके दरवाजे पर आपहुंची। जिस तेजीसे आई उसी

तेजीसे किलेपर अधिकार करके उसे सीटनके सपुर्द कर दिया। कसपेट्रिक जान लेकर किला छोड़ इङ्गलेण्डकी तरफ भागा जाता था। वालेसने तीनसौ सेनासे उसका पीछा किया और उसे भगाता भगाता एट्रिकबन तक लेगया। आगे जाना बेफायदा समझकर लौट आया।

इधर भगोड़े जागीरदारकी दलसे ब्रूस और विशप वेक् प्रभृति जागीरदार आमिले। ब्रूस इनमें जल्द शामिल न होता किन्तु उन लोगोंने उसे यह कह कर राजी किया कि वालेस स्वयं स्काटलेन्डकी राजगद्दी चाहता है। अर्लपेट्रिकने बीस हजार सेना लेकर स्वयं उनबर घेर लिया और जहाजी सेनासे तरीके रास्ते रसद आना रोक दिया। विशपबेक दस हजार सेना लेकर डर्हममें रहे।

वालेस यह खबर पातेही पांच हजार सेना लेकर सीटनकी मददको दौड़ा। सीटन ज्यादा सिपाहियोंको किलेकी निगरानीमें तैनात करके थोड़ेसे साथियों सहित वालेससे आमिला। विशपबेक दस हजार सेना सहित स्पिटमूरमें छिपकर वालेसकी चाल देखते थे। इस बीचमें पेट्रिक भी किलेका घेरा उठाकर अपनी समूची सेना सहित स्पिटमूरमें बेकसे आमिला। इससे शत्रुसेनाका जोर तीस हजार या उससेभी ज्यादा होगया। वालेस केवल पांच या छः हजार सेना लेकर उस भारी सेना पर चढ़ दौड़ा। प्रचण्ड झरना जैसे नदीमें गिरकर उसके जलमें खलबलाहट डाल देता है वैसेही वालेस शत्रुसेनाको उथल पुथल करने लगा। किसे ताकत है जो वालेस और उसके वीरोंकी गति रोकसके? वालेस तलवार हाथमें लेकर धड़ल्लेसे अकेले शत्रुसेनाके व्यूहमें घुस गया। असंख्य शत्रुसेनाने उसे घेर लिया। मानो सप्तरथी मिलकर अभिमन्युको मारने चले। कसपेट्रिकने उसे जरा जखमी किया। घोड़ेके मारे जानेसे उसे पांवप्यादे लड़ना पड़ा। इधर उसके सैनिक उसे न देखकर वहुत घबराये कितनेही वहांसे सरक गये। उन्हें उसकी यह हालत नहीं मालूम हुई। कसपेट्रिकने घोड़ेपर सवार होकर

पांवप्यादे वालेसको पर्छेसे मारना चाहा किन्तु वालेसकी असाधारण रण कुशलतासे उसकी सब कोशिशें व्यर्थ होने लगीं। इधर ग्रेहम बोयड, लायल, है, रामजे, लुंडिन, बायड, सीटन आदि जागीरदार वालेसको न देखकर पांच हजार सेनासहित शत्रुके व्यूहमें घुसगये। उनको रोकने जाकर विशपबेकको मुंहकी खानी पड़ी। जैसे हाथियोंका झुण्ड केलेके बनमें जाकर सामनेके पेड़ोंको उखाड़ कर पैरों तले रौंदता है उसी तरह उस वीरदलने सामना करनेवाले अङ्गरेजोंको रौंद पटककर वालेसका उद्धार किया। वालेस घोड़े पर सवार होकर पीछा करनेवाले शत्रुओंका हमला व्यर्थ करके अपनी छावनीमें लौट आया। इस बीचमें वहां उसके चार हजार साथी आजुटे थे। स्काटिश योद्धाओंके मैदानसे चले जानेसे कर्कपेट्रिककी ही जय हुई किन्तु वह जय उसे बहुत बड़े दाम पर खरीदना पड़ी थी। इस मैदानमें सात हजार अङ्गरेज-सेनाकी समाधि हुई। इधर स्काटिशदल पांचसौसे अधिक मौतें नहीं हुईं और कोई स्काटिश कर्मचारी मारा नहीं गया। विजय लाभ करके भी कर्कपेट्रिक सुखी नहीं हुआ, क्योंकि अगणित सेनाके मारे और वालेस के भाग जानेसे उसको बहुत अफसोस हुआ था।

बिशपबेक स्काटिश सेनाके फिर हमलेके डरसे लैमरमूरको तरफ चलदिये। इधर स्काटिशसेनाकी हारकी खबर चारों ओर फैलनेसे स्काटलेण्डके वाशिन्दे डरकर स्काटिश जातीय झण्डेके नीचे आकर खड़ेहुए। सब मिलाकर दो हजार नईसेना आकर जमाहुई। इसीको लेकर वालेस बिशपबेकका पीछा करने लैमरमूरकी तरफ चला। सवेरे वहलोग एकबएक अंगरेजी छावनीके सामने जापहुंचे। अंगरेज सेनाको पहलेसे इसकी कुछ खबर न थी इसलिये वह शान्तिदायिनीनिद्राकी गोदमें आराम कर रही थी। स्काटिश सेनाने दो हिस्सोंमें बटकर दोतरफसे हमला किया। बहुतसे सैनिक सदाके लिये सोगये, जो उठे वह किधर भागे कुछ पता नहीं। किन्तु बिशपबेक अपनी जगहसे एकपैरभी इधर उधर न हुए वह लुन्डिनकी तलवारसे

घायल हुए तथापि बहादुरीसे लड़ते रहे। किन्तु जब शरीर शिथिल होगया तबवह मैदान छोड़करभागे। कसपेट्रिक और ब्रूसनेभी पांच हजार सेनासहित वही रास्ता लिया। भागते भागते अङ्गरेज अन्तमें डर्हम किलेमें जाकर छिपे। विजयी स्काटसेनाने टुइड नदीतक अंगरेज सेनाका पीछा किया था लड़ाईके मैदानमें और भागते समय बीस हजार अङ्गरेज मारे गये। स्टिरलिङ्गकी लड़ाईमें अङ्गरेजोंने विजय पाकरभी ७ हजार सेना खोई थी इस लेमरसूरकी लड़ाईमें हारकर बीस हजार सेना खोई। इससे उनके मनमें उत्साह न रहा। वह विराट अङ्गरेज सेना तितर बितर होकर भाग गई। वालेस मौका पाकर कसपेट्रिकका किला उखाड़ने और खेत तहस-नहस करने लगा सिर्फ डनबरका किला साबित छोड़ा।

लड़ाई शुरू होनेके अठारहवें दिन वालेस पर्थनगरमें लौट आया उस समयभी वहां जातीय सभाका अधिवेशन होरहाथा। वालेसका विजय समाचार सुनकर सबलोग आनन्दित हुए। जातीयसभाने उसे समूचे स्काटलेण्डका गवर्नर बनादिया। जागीरदारोंने अबकी एक वाक्यसे उसकी अधीनता स्वीकारकी। वालेस स्टर्लिंग समरकी विजयके बाद अपने हितमित्रों और सेनाद्वारा गवर्नर बनाया गयाथा किन्तु इसबार समस्त जातिने एक वाक्यसे उसे उस गौरवके पद पर अभिषिक्त किया। इसी समयसे वह वास्तवमें स्काटलेण्डका प्रतिनिधि और शासनकर्ता कहा जासकता है।

स्काटलेण्डका गवर्नर मुकर्रर होनेपर सेनाविभाग पर वालेसकी पहली और पूरी निगाह पड़ी। ग्रन्थके आरम्भमें कहा गया है कि सामन्त तन्त्रमें राजाको भी सब तरहसे सहायता मिलनी मुशकिल होती थी। जागीरदारोंकी ईर्षा और अहङ्कारका बुरा नतीजा वालेस पहलेही भोग चुका था। इसलिये विपद पड़ने पर उसे उनसे कुछ सहायताकी आशा न थी। किसानों और गुलामोंका स्वार्थ जागीरदारोंके स्वार्थसे ऐसा मिला हुआ था कि उनसे भी किसी तरहकी सहायताकी उम्मेद न थी। इसलिये वालेसने स्थायीढंगा

रखनेका विचार किया। किन्तु एक दम नया ढङ्ग चलानेसे जागीरदारोंकी नाराजीका खटका था इसलिये उसने पहले बीचका रास्ता लिया। तनखाहदार स्थायी सेना न कायम करके उसने वर्तमान मिलशिया (अस्थायी सेना) की नींव डाली। समूचे स्काट लेन्डको कई जिलोंमें बांटा। सोलह और साठ वर्षके अन्दर जिन की उमर थी उनमें जो हथियार बांधने योग्य थे उनकी एक फिहरिस्त तय्यार की। इस अस्थायी सेनामें एक तरहका नया ढङ्ग चलाया। हर चार आदमियों पर पांचवें, हर नौ आदमियों पर दसवें, हर उन्नीस पर बीसवें इत्यादि इसी हिसाबसे हर ९९९ पर पर हजारवें आदमीको सेनापति मुकर्रर किया। उसके हुक्मकी पूरी तामील हो इसके लिये हर गांवमें फांसीकी एक टिकठी रखी गई। जो डरपोक कायर पुरुष स्वदेशरक्षाके लिये बुलाने पर भी हथियार उठानेसे नाहीं करता, दृष्टान्तसे दूसरोंकी 'नहीं' छुड़ानेके लिये वह फांसी पर लटका दिया जाता। जो जागीरदार अपनी प्रजाको देशहितैषीदलमें शामिल होनेसे रोकता वह कैदखाने भेजा जाता या उसकी जायदाद जातीयभाण्डारमें जब्त करली जाती। यों उसकी अस्थायी सेना बनी। इन लोगोंको हमेशा हाजिर रहना नहीं पड़ता, अपने अपने दलपतिके अधीन रहकर विद्या सीखना पड़ती और बुलाये जाने पर जातीय झण्डेके नीचे आकर खड़ा होना पड़ता था।

वालेस और उसके सहकारी मरे ने यों जातीय सेना बनाकर पीछे जातीय वाणिज्यकी उन्नतिकी ओर ध्यान दिया। वालेस केवल असाधारण वीरही नहीं था, राज्यको धनधान्य पूर्ण करने और बन्दोबस्त रखनेमें भी वह बहुत प्रवीण था। उसने हमबर्ग और लूबेकनगरसे स्वाधीन वाणिज्यकी सन्धि की। उस सन्धिपत्रसे वालेसकी राजनीतिज्ञताका बहुत कुछ पता लगता है।

वालेस इस समय प्रभुत्वकी चरमसीमा पर पहुंच गया है। उसकी प्रभुताका कोई मुकाबला करनेवाला नहीं है। इतने पर भी

वह स्वयं भोगविलाससे परे राजनीतिक संन्यासी था। "आदानं हि विसर्गाय"¶ दूसरेसे धन लेना केवल दानके लिये है—इस नीति पर चलकर उस वीर संन्यासीने विजयप्राप्त भूमि और धन सब अनुचरोंको बांट दिया। राज्यके सब ऊंचेऊंचे पदों पर उन्हें नियत किया। जो लोग स्वदेशके उद्धारमें जीवन विसर्जन करनेके लिये उसके झण्डेके नीचे आखड़े हुए थे उन अनुचरोंको वह प्राणसे भी प्यारा जानता था। इसीसे आज उसके इखतियारमें जो कुछ था सब उन्हें देकर अपने हृदयको परितृप्त किया। उसने अपने सगे सम्बन्धियोंको एक कौड़ी नहीं दी और न कोई मामूली ओहदाही दिया। क्योंकि अपनेको या अपने सगे सम्बन्धियोंको मालदार बनाना उसके जीवनका उद्देश्य नहीं था। वह सर्वत्यागी था और अपने सगे सम्बन्धियोंको भी सर्वत्यागी होकर जातीयव्रतमें जीवन उत्सर्ग करनेका उपदेश देता था।

वह चाहता तो इस समय बेखटके स्काटलेन्डका सिंहासन ले लेता। क्योंकि उस समय स्काटलेन्डमें ऐसा एक आदमी भी न था जो उसकी मर्जीके खिलाफ चलता। किन्तु वह अङ्गरेजोंके यहां कैद हुए स्काटलेन्डनरेश बेलियलका ताज स्काटिश सिंहासन पर रखकर उसके प्रतिनिधिके तौरपर काम करता था। इच्छा थी कि बेलियलको अङ्गरेजोंके पंजेसे निकाल करके स्काटिश सिंहासन पर बिठावे और आप झोंपड़ेमें जाकर रहे। अपने अभ्युदयकी लालसाने वालेसके हृदयको कभी कलंक नहीं लगाया। तथापि "द्विषन्ति मन्दाश्चरितं महात्मानाम्"* मतिमन्द लोग महात्माओंके चरित्रको दूषते हैं। अधिक क्या कहें वीरवर ब्रूस भी वालेसके देवतुल्य चरित पर सन्देह करके विपक्षियोंसे जामिला था। आपसका विश्वास न होनाही जातीय पतनकी जड़ है। वैसेही परस्परका अटल विश्वासही जातीय अभ्युदयका अद्वितीय सामान है। उसीके बिना आज भारतकी यह दुर्दशा है!

¶ रघुवंश * कुमारसम्भव।

ग्यारहवां अध्याय।

वालेसकी इङ्गलेन्ड पर चढ़ाई—सेन्ट अलबनकी सन्धि।

१२९७ ईस्वीके अक्टोबर महीनेमें खबर आई कि एडवर्ड कसपेट्रिककी सलाहसे स्काटलेन्ड पर दूसरी चढ़ाई करना चाहते हैं। यह खबर पातेही वालेसने जागीरदारों और अनुचरोंकी एक सभा बटोरी। उसके बुलावे पर रसलिनमूरमें चालीस हजार आदमी जमा हुए। उसने जागीरदारोंको सम्बोधन करके कहा—"एडवर्ड स्काटलेन्डपर फिर चढ़ाई करना चाहते हैं इसलिये मैंभी प्रण करता हूं कि देहमें दम रहते उन्हें सफलमनोरथ न होनेदूंगा।' जागीरदारोंने एक स्वरसे बड़े उत्साहपूर्वक उसकी प्रतिज्ञामें सहायता देना स्वीकार किया। ४० हजारमेंसे उसने २० हजार आदमी छांट लिये। जो लोग अस्त्रशस्त्रसे सुसज्जित और जातीयकार्य्यके व्रती थे वालेसने उन्हींको चुना। बाकी बीस हजार आदमियोंको उसने देशकी भीतरी उन्नतिके कामोंमें लगाया। लगातार लड़ाइयां होनेसे इस देशकी भीतरी हालत बिगड़ गई थी इससे वालेसने कहा—अब ज्यादा आदमी लेनेकी जरूरत नहीं है।

सागरगामिनी नदीकी भांति वह महती सेना एक मन और एक ध्यानसे जातीय गीत गाती इंगलेन्डकी तरफ चली। वालेसका इरादा था कि एडवर्डको स्काटिश मैदानमें पैर न रखनेदें। इसलिये वह लोग उनकी चाल रोकनेके लिये इगलेन्डकी तरफ रवाना हुए। इस बार स्काटिश भाग्यकी इंगलेन्डके मैदानमें परीक्षा होगी। अबके वह लोग यह प्रतिज्ञा करके निकले हैं कि या तो युद्धमें जीतेंगे या वहीं कट मरेंगे। इस वास्ते वालेसने इस यात्रामें देशके बड़े बड़े जमींदारोंको साथ नहीं लिया। कारण अगर वह न लौटे तो उन्हीं जमींदारों द्वारा स्काटलेन्डकी रक्षा होसकेगी। बहुत कहने सुननेसे लाचार होकर उनमेंसे सिर्फ कुछ जमींदारोंको साथ

लेगया। बड़े आदमियोंमें सिर्फ मलकम, केब्बल, रामजे, ग्रेहम, एडम, बायड, अचिंगलेक, लुन्डिन, लोडर, है और सीटनने साथ नहीं छोड़ा। इस महती सेनाने ब्र विसके मैदानमें जाकर छावनी डाली। वहांसे सिर्फ ४० आदमियोंको साथ लेकर वालेस रक्सबरा किलेके द्वार पर पहुंचा और किलेदार सर रेल्फग्रेको बुलाकर हुक्म दिया कि तुम लौटते समय किलेकी चाबियां मेरे हाथमें देनेके लिये तैयार रहना नहीं तो तुम्हारी देह किलेकी दीवारमें लटका दूंगा। उसने रामजेकी मारफत ऐसाही हुक्म बारविक कर्मले भी भेज दिया।

अब ज्यादा देर न करके वालेस और उसकी सेना ट्वड नदी पार होकर नारदम्बरलेण्ड और कम्बरलेन्डमें दाखिल हुई। मतवाले हाथीकी तरह उसकी सेनाने इनदोनों प्रदेशोंको दलमल डाला। आग लगाकर डरहम नगर खाक कर दिया। यार्कशायरकी भी यही दशा हुई। सेनाको बदला लेनेका जोश चढ़ा था वह जहां जाने लगी वहां तलवार और आगसे काम लेने लगी। पन्द्रह दिन के अन्दर एडवर्डके दूतने आकर वालेससे चालीस दिनकी शान्ति चाही, कहा—"इसके बादही एडवर्ड लड़ाईमें वालेसका मुकाबला करेंगे।" स्काटलेन्डके भाग्यनाथने यह प्रस्ताव मान लिया और यार्कनगरमें एक दिन ठहरकर ससैन्य नरदालरटनकी तरफ कूच किया। वहां पहुंचकर छावनी डाली। चालीस दिनकी सन्धि सर्वत्र प्रगट कर दी गई और वालेसने लूटका माल खरीदनेके लिये सब को बुलाया।

एडवर्डने सन्धिका नियम तोड़कर सन्धिके भीतरही बेखबरीमें वालेस पर आक्रमण करनेके लिये बहुतसी सेनासहित वालटननगरके कप्तान सर रेल्फ रेमन्डको भेजा। वालटननगरसे थोड़ी दूर पर कुछ स्काचमेन रहते थे। वह लोग यह खबर स्काटिश छावनीमें लेगये। वालेसने उसी वक्त क्रिड, लुन्डिन और रिचार्डके सेनापतित्वमें तीन हजार सेना भेजी। हुक्म दिया कि

राहमें छिपकर आनेवाली अङ्गरेजीसेनापर बेखबरीमें हमला करना। सर रैल्फ रेमन्ड सात हजार सेना लेकर आते थे अचानक तीन-हजार स्काचसेनाने बड़े वेगसे गर्जकर उनपर आक्रमण किया। उसकी प्रचण्ड तलवारोंसे पलक भरमें तीन हजार अङ्गरेज मारे गये बाकी डरके मारे जहांतहां भाग गये। सेनापति सर रैल्फ लड़ाईमें काम आये। वालेस फौरन उस भागती हुई अङ्गरेज सेना का पीछा करके मालटन नगरमें दाखिल हुआ और वहां असंख्य शत्रुओंको मारकर शहर लूट लिया। दो दिन रहकर शहरका किला गिरादिया और फिर छकड़ोंमें लूटका माल असबाब लदाकर अपनी छावनीमें लेआया। लौटकर अपनी सेनाको अचानकके आक्रमणसे बचानेके लिये छावनीके चारोंओर चारदीवारी बनाई।

इससे एडवर्ड समझ गये कि वालेस जल्द इंगलेन्ड छोड़ना नहीं चाहता। अब उनके जीमें डर समाया। उन्होंने पमफ्रेट नगरमें पार्लीमेन्टका अधिवेशन किया; किन्तु लार्डोंने कहा कि जबतक वालेस स्काटलेन्डका मुकुट नहीं पहनता तबतक हमलोग आपको उससे लड़ने नहींदेंगे। पार्लीमेन्टकी यह राय स्काटिशछावनीमें भेजी गई। इसके फैसलेके लिये केम्बल आदि स्काटिश वीरोंने वालेसको ताज पहननेका अनुरोध किया। उसने दृढ़तासे इस प्रस्तावको अस्वीकार किया। अन्तमें अर्ल मलकमकी सलाहसे एडवर्डका उज्र मिटानेके लिये सिर्फ एक दिन अपनेको स्काटलेन्डका राजा कहनेका हुक्म दिया। तोभी अङ्गरेज खुली लड़ाईमें वालेसके सामने आनेका साहस न कर सके। उन्होंने सलाह की कि किलेवाले शहरोंकी रक्षा करें और सब बाजार बन्द करके वालेसकी सेनाको रसद न मिलने दें। उनकी यह कोशिश व्यर्थ हुई। वालेसने सन्धि का समय बीत जानेके बाद भी पांच दिन तक राह देखी तो भी अङ्गरेज सेनाका दर्शन न पाया तब अपना झण्डा उड़ाया और एडवर्डको अयोग्य राजा कहकर घोषणा की। वह नरदालरटन शहर जलाकर खेती बरबाद करता यार्कशायरसे होकर जाने लगा।

उसकी सेना गिरजे और स्त्री बच्चोंके सिवा और कुछ नहीं छोड़ गई।

धीरे धीरे वह जबरदस्त सेना यार्कनगरके सामने आपहुंची। यार्कनगर किलेसे सुरक्षित था वहां बहुत सेना तैनात थी। स्काटोंने चार हिस्से होकर चार जगहसे उस किले पर हमला किया। उनके साथ चार हजार तीरन्दाज थे। इधर नगरमें भी ४ हजार धनुर्धर और बारह हजार दूसरी सेना थी। इसलिये उसने बड़ी कामयाबीसे स्काचोंका हमला व्यर्थ किया। स्काट लोग डरसे नगर छोड़कर भाग गये।

इधर रात होगई। स्काट रात भर शहरसे बाहर छावनी डाले पड़े रहे। सारी रात मशाल जलाकर वह लोग शत्रुओंका रंगढंग देखते थे। यद्यपि उनमें बहुतसे घायल हुए थे किन्तु एक भी स्काच मारा नहीं गया। इसीसे स्काटोंने हार कर भी हिम्मत नहीं हारी।

दूसरे दिन सूर्य्योदयके बाद स्काटोंने नये उत्साहसे पहले दिनकी तरह कतार बांधकर नगर पर फिर आक्रमण किया। इस दिन भी आग फेंककर तथा कई तरहसे शहरको बड़ी हानि पहुंचाई किन्तु शहरमें घुस नहीं सके। फिर रात होगई फिर स्काटोंने शहर-पनाहके बाहर छावनी की। सब आराम करने लगे मगर वालेस की आंखोंमें नींद नहीं थी। वह घोड़े पर सवार होकर चारोंओर देखता फिरता था कि प्रहरी पहरा देरहे हैं या नहीं। इतनेमें एकाएक पासही शत्रुसेना देखी। सर जान नाटन और सर विलि-यम ली पांच हजार सेना लेकर चुपके चुपके हमला करनेकी नीयत से स्काटिश छावनीकी तरफ बढ़ रहे थे। देखतेही वालेसने बिगुल बजाया, फौरन उसकी हमेशा मुस्तैद सेना उठकर अस्त्रशस्त्रसे सज्जित हुई। शत्रु शहरपनाहसे निकलकर पहले अर्ल मलकमके सामने आये। वालेस उसे हठी समझता था इसलिये स्वयं लड़ाईमें पहुंचा। दोनों मिलकर शत्रु सेनाको मारने लगे।

अन्तमें सर जान नाटन और १२०० सेनाके मारे जानेसे अङ्गरेज

पीठ दिखाकर शहरमें भाग गये। स्काटोंने विजयोल्लाससे छावनीमें लौटकर आरामसे रात बिताई। सवेरे उठकर फिर शहर पर चढ़ाई की। इस तरह बहुत दिनके घेरेके बाद यार्कशहर ने सोना देकर प्राणभिक्षा चाही। वालेसने इस शर्तपर उन्हें छोड़ना चाहा कि वह लोग शहरपनाह पर स्काटिश झण्डा गाड़ने दें। यार्क लाचार राजी हुआ। स्काटलेन्डका झण्डा यार्क शहरकी दीवार पर फर्राने लगा। पांच हजार पौण्ड कर और इफरातसे रोटी शराब तथा दूसरी खानेकी चीजें पाकर स्काट बीस दिनके बाद शहर छोड़कर चले गये।

अप्रैलका महीना आया। अभीतक वालेस और उसकी सेना इंगलेन्डमें है। रसदका मिलना मुशकिल होजानेसे लाचार उसे लूट पाटकाही सहारा लेना पड़ा। वह लोग जंगली हरिण मारकर और खेतकी खड़ी फसल काट कर किसी तरह पेट पालने लगे। अन्तमें दक्षिणकी तरफ कूच कर गये। राहमें अग्निक्रीड़ा करने लगे। गांव शहर लूटती जलाती वह असभ्य सेना लन्दनकी तरफ जाने लगी। तोभी अङ्गरेजसेनाने वालेसका सामना करनेका साहस नहीं किया। उसने पीछे हटते हटते अन्तमें लन्दन जाकर छावनी डाली।

उधर रसदकी कमीसे वालेसको आगे बढ़नेकी हिम्मत न हुई। उसने अपने झण्डा लेवरलेवाले जापकी सलाहसे रिचमन्डकी कूच किया। वहां अभीतक इफरातसे रसद थी। उसे पाकर उसकी सेना बेहद खुश हुई। रिचमन्डमें बहुतसे स्काच कैदी और मजदूर थे। यहां नौ हजार स्काच वालेसके झण्डेके नीचे आखड़े हुए। यह सम्मिलित सेना वहांसे साम्पटनकी रवाना हुई।

स्काचोंने उस शहरको सहीसलामत छोड़ जाना चाहा था मगर नगर रक्षक सैनिकोंने उन पर ऐसा अत्याचार किया कि उन्होंने किलेको घेरकर आग लगा दी। किलेदार फिट्ठियूने किलसे ज्योंही बाहर निकलना चाहा त्योंही वालेसकी तलवारने उसका सिर धड़

से अलग कर दिया। पीछे स्काटोंने किलेमें घुसकर बच्चे बूढ़े और स्त्रियोंको छोड़ बाकी सबको यमलोक भेज दिया। रात वहीं बिताई। सवेरे किलेका माल लेकर चलते बने। वालेसने फिट्जियू के सिर सहित एडवर्ड या उनकी मन्त्रीसभाके पास यह खबर भेजी कि अगर आप पूर्वप्रतिज्ञानुसार मुझे युद्ध न देंगे तो मैं एक बारही लन्दनके तोरणद्वार पर जापहुंचूँगा। मन्त्रिसभा बुलाई गई बहुत बड़ी बहसके बाद तय हुआ कि चाहे किसी दाम पर हो शान्ति मोल ली जाय। यह बात तय हुई किन्तु किसीने दूत बनना स्वीकार नहीं किया। अन्तमें एडवर्डकी रानी स्वयं स्काटिश छावनी में जानेके लिये जिद करने लगीं। ऐसी अफवाह है कि वालेसके वीरोचित गुणों पर रानी यहां तक मुग्ध होगई थीं कि उसकी प्रेमाभिलाषिनी हुई थीं। जोहो इधर स्काट हारफोर्डशायरके सेन्ट अलबन शहरमें आपहुंचे। नगरके पादरीने मदर्सांससे उनकी बड़ी खातिर की। इससे उन्होंने नगरको कुछ नुकसान नहीं पहुंचाया। यहां स्काट छावनी डाल और चन्दोवा तानकर राजमहिषीकी बाट देखने लगे।

वालेसने उस शुभदिनको खूब सवेरे उठकर ईश्वरप्रार्थनासे निश्चित हो वीरवेश धारण किया। उसके चमकते हुए दस्तर पर सूर्य्यकी किरणें पड़कर चारों ओर झलकने लगीं। नंगी तलवार कमरमें जालटकी। उसका चमकता हुआ कमरबन्द मानो सूर्य्यकी किरणोंको खींचने लगा। उसने हाथमें बढ़िया इस्पातका बना दण्ड धारण किया। देखकर मालूम हुआ कि मानो भीम फिर पृथिवी पर आया है। वालेस इस प्रकार चन्दोवेके नीचे राजमहिषीकी बाट देख रहा था कि इतनेमें रानी पचास भले घरकी स्त्रियों और सात बूढ़े पादरियोंके बीचमें घोड़ेपर सवार स्काटिश छावनीमें आपहुंचीं। जहां वीरकेसरी बैठा था वह लोग वहीं जा कर चन्दोवेके सामने खड़े हुए। उस वीरके सामने पहुंचतेही रानी झट घोड़ेसे उतरकर घुटना टेक वीरपूजा करना चाहती थीं किन्तु

अर्ल मलकमने उन्हें इससे मना किया। वालेसने रानीका हाथ धरकर उनका मुकुट चूमा। उनमें राज्यसम्बन्धी विषयों पर बहुत बात चीत हुई। दोपहरका खाना खानेके बाद दरबार हुआ। रानी ने वालेसको फुसलानेकी हजार कोशिश की किन्तु उसे किसी तरह टससे मस न कर सकीं। अनुकूल सन्धि पानेकी आशासे अन्तमें सोनेका लोभ तक दिखाया गया किन्तु वह आशा भी विफल हुई। स्वदेशके लिये प्राण न्योछावर करनेवाले स्वदेश प्रेमीके आगे कामिनी और कञ्चन दोनों निष्फल होते हैं। वालेसने औरतसे सन्धि करना अस्वीकार किया हां इतना मानलिया कि वह एडवर्डके यहां से सन्धिका प्रस्ताव लेआने वाले दूतोंकी रक्षा करेगा और मुमकिन हुआ तो उनका प्रस्ताव मंजूर कर लेगा। एडवर्ड इस समय फ्लान्डर्स की लड़ाईमें लगे थे जल्द उनके आनेकी उम्मेद न थी इससे रानी लाचार इतनेहीसे सन्तुष्ट होकर चली गईं।

स्काट सेन्ट आलवनमेंही रहे। इसी बीचमें एडवर्डके दूत सन्धि का प्रस्ताव लेकर आये। सन्धिकी नियमावली ते हुई। रक्सबरा और वारविकके किले और इङ्गलेण्डमें कैद या और किसी कारणसे रहनेवाले स्काच वालेसके सपुर्द किये गये। जो स्काच सपुर्द हुए उनमें रैन्डलफ, अर्ल लोरन् अर्लबूकन, क्यूमिन और सुलिस मुख्य थे। वालेसने ब्रूस और सर आमेर डी वालेंसको मांगा तो एडवर्ड ने उत्तर दिया कि वह भागगये। कासपेट्रिक भी वालेसके सपुर्द किये गये। वालेसने उन्हें आदरसे लिया। कुल एकसौ स्काच लार्ड कैद से छोड़कर एकसौ बढ़िया घोड़ों सहित वालेसके पास भेजे गये। सन्धिके नियमानुसार स्काट जब नरदारलटनमें आये तब दोनों तरफ के हस्ताक्षर सन्धिपत्र पर हुए। जब स्काट वम्बरो नगरमें पहुंचे तब उनकी संख्या ६० हजार होगई थी। यह विजयी महती सेना कैरमसूरमें आई। यहां वारविक और रक्सबरा किलेकी चाबियां वालेसके हाथमें दी गईं। यह सन्धि ५ वर्षके लिये हुई।

बारहवां अध्याय।

वालेसकी फ्रान्स यात्रा।

स्काटलेण्डमें पांच बर्षके लिये सन्धि हुई। अब वालेसने एक बार फ्रांस देखनेका विचार किया। इरादा है कि फ्रांस की भीतरी अवस्था देखकर स्काटलेण्डकी भीतरी उन्नति करना चाहिये। इसी इरादेसे वह सिर्फ पचास आदमियों सहित सन् १२९८ ईस्वी की ता० २० अप्रेलको फ्रांस रवाना हुआ। पार्लीमेंन्टसे अनुमति लेनेमें उज्र उठनेका ख्याल करके उसने चुपचाप यात्रा करदी। छिपकर जानेका एक यहभी कारण है कि स्काटलेण्डमें उसके न रहनेका समाचार पाकर कहीं एडवर्ड सन्धिका नियम तोड़ चढ़ाई न करदें या अपने जंगी जहाज भेजकर उसे गिरिफ्तार न करालें।

अनुकूल हवा पाकर जहाजकी पालें मानो हवासे बातें करने लगीं। एक दिन और एक रात योंही बीती इतनेमें दूरसे सोलह जहाज बड़ी तेजीसे आते दीख पड़े। वालेसने तुरन्त साथियोंको कमर कसकर तय्यार हो जाने का हुक्म दिया। यह जहाज फ्रांसके लांगविल शहरके टामस नामक एक आदमीके थे। टामस किसी बड़े आदमीकी हत्याके अपराधमें देशसे निकाल दिया गया था। तबसे वह समुद्री डाकू बन गयाथा। वालेस कोभी उसने अपना शिकार बनाना चाहा था लेकिन कामयाब न हुआ।

टामसने इस नये पेशेमें नया नाम पायाथा। समुद्री यात्री उसे लाल रोवर कहते। लाल रोवर जहाज दौड़ाकर वालेसके जहाज की बगलमें आ पहुंचा। जहाज ज्योंहीं बगलमें आकर खड़ा हुआ त्योंही रोवर एक छलांग मारकर वालेसके जहाजपर कूद पड़ा। वालेस खड़े होकर इसीकी बाट देखताथा ज्योंहीं रोवर कूदा वालेस ने उसका गला पकड़कर ऐसा धक्का मारा कि उसके मुंह और नाक से खून गिरने लगा। देखतेही देखते रोवरके सोलहों जहाजोंने

आकर वालेसका जहाज घेर लेनाचाहा। किन्तु वालेसका पोताध्यक्ष क्राफोर्ड फौरन पाल चढ़ाकर दूरनिकलगया और उनको बहुत पीछे छोड़गया। अब रीवरने लाचार होकर वालेससे क्षमा मांगी। वालेस ने क्षमा तो की किन्तु उसके हाथमें जो तलवार और छुरी थी वह लेकर उसे निरस्त्र कर दिया और शपथ कराई कि वह कभी उसका कुछ नुकसान नहीं करेगा। इधर रीवरके आदमी बराबर गोले गोलियां बरसा रहेथे। वालेसके आदेशसे रीवरने उनको मना कर दिया। दोनों दलमें शान्ति होगई। टामसने वालेसको रचेलतक पहुंचा आना चाहा। अङ्गरेजों के आक्रमणके भयसे वालेसने मंजूर किया। राहमें दोनोंमें परिचय हुआ। टामसने अपना हाल सुना कर कहा—'आजतक मुझे कोई परास्त नहीं कर सका था। मेरा विश्वास है कि स्काटलेन्डके उद्धारकर्त्ता वालेसके पास मैं हूं।' टामसने जब जाना कि उसका विश्वास ठीक है तब उसने घुटना टेक कर स्काटलेन्ड और वालेसके काममें जान देदेनेकी प्रतिज्ञा की। वालेसने उसका हाथ धरकर उठाया और फ्रांसनरेशसे उसके लिये माफी मांगनेका वादा किया।

उन दिनों लालरीवरके नामसे लोग थरथर कांपते थे। जब जहाजोंका झुण्ड रचेलबन्दरके पास पहुंचा तब नगरनिवासी रीवर के जहाज पहचान कर बहुत डरे और आक्रमण रोकने या भागने को तय्यार होनेके लिये लड़ाईका बाजा बजाने लगे। यह देखकर वालेसने आज्ञा दी कि मेरे जहाजके सिवा और कोई जहाज बन्दर-गाहमें न जाय। वालेसके झण्डे पर स्काटलेन्डका लाल शेर बना हुआ था। वह चिन्ह देखकर सबने अनुमान किया कि स्काटलेन्ड के आदमी आये हैं। उन दिनों फ्रांससे स्काटलेन्डकी दोस्ती थी इसलिये उन्होंने जहाजके यात्रियोंको आदरसे ग्रहण किया। वह लोग नहीं जानते थे कि स्काटिश गवर्नर स्वयं वालेस उनका अतिथि है तो भी उसके आदर सत्कारमें कुछ कमी न हुई। वालेसने टामस और दूसरे साथियों सहित राजधानीकी यात्रा की। पेरिस नगरमें

राजा और रानीने उसका और उसकेसाथियोंका बड़े आदरसे स्वागत किया। सब एकटक स्काटिश वीरकेसरीको देखने लगे। भोजनादि के बाद राजा और उनके सभासद वालेसके साथ दरबारमें गये। यहां वहांकी बहुतसी बातें होनेके बाद राजाने ताज्जुबसे कहा कि वालेस लालरीवरसे क्योंकर बच गये हैं। वालेसने उनसे रीवरका पूरा हाल बयान किया और उसके लिये क्षमा मांगी। फ्रांसनरेशने वालेसकी खातिर रीवरको माफ किया और वहीं उसको नाइटका खिताब दिया। तबसे रीवर और उसके स बसाथी डकैती छोड़कर सच्चे नागरिककी तरह फ्रांसमें रहने लगे।

यों तीस दिन राजाकी मेहमानीमें बीते। वालेस बेकार बैठे बैठे उकता गया। अङ्गरेजोंका गाइन प्रदेशमें रहना सुनकर राजासे बिदा हो वालेस उधरही चला। देखतेही देखते चारोंओरसे नौ सौ स्काच उसके झण्डेके नीचे आखड़े हुए। आस्ट्रियाके अत्याचार से जैसे इटली निवासी एक समय पृथिवीके चारोंओर जाछिपे थे वैसेही इङ्गलेन्डके जुल्मसे उस समय स्काट अनेक देशोंमें फैल गये थे। गेरीबाल्डी जहां इटलीका तिरङ्गा झण्डा उड़ाता वहीं असंख्य इटालियन उसके नीचे आखड़े होते। गेरीबाल्डीकी तरह वालेसको कभी आदमीकी कमी न होती। गेरीबाल्डीकी तरह वह भी नाम मात्रकी सेना लेकर विराट शत्रुसेनाका सामना करता और प्रायः हरबारही जीतता। दोनों रणमें अजेय थे। आज वालेस वही नौसौ सेना लेकर बड़ी भारी अङ्गरेजी सेनाके सामने आया। मानो शेरोंका झुण्ड भेड़ोंके झुण्ड पर टूट पड़ा। बेशुमार अङ्गरेज उन लोगोंकी तलवारके शिकार हुए। अङ्गरेजोंके अच्छे अच्छे किलों पर वह दखल जमाने लगे। उस प्रदेशमें अङ्गरेजी हुकूमतकी जड़ में कुल्हाड़ी चलाने लगे। वालेसने सरटामस लांगविलके सिवा और किसी फरासीसीको साथ नहीं लिया। मगर फ्रांसनरेशने उसकी कामयाबीसे उत्साहित होकर बीस हजार सेना सहित ड्यूक आफ अरलिंसको उसकी मदद पर भेजा। वह वालेससे मिलनेके लिये

गाइन प्रदेशके बीचसे बड़ी फुर्तीसे रवाना हुए। इधर कैलेके किले-दार अर्ल आफ ग्लास्टर स्काच सेनानायकके इन सब कार्मोंकी खबर लेकर इङ्गलेन्ड गये। एडवर्डने क्रोधसे अधीर होकर वालेसकी गैरहाजिरीमें स्काटलेन्ड पर चढ़ाई करनेका विचार किया। एडवर्ड जो सोचते थे वही करते थे। ग्लास्टर स्थल सेनाके सेनापति होकर चले। सर जान सिवर्ड जहाजी सेनाके सेनापति होकर तरीके रास्ते रवाना हुए। देशद्रोही विश्वासघातक सर आमिर डी वालेंस घोड़े पर सवार हो स्थलसेनाका पथप्रदर्शक बनकर चले। स्काट लोग सन्धि पर विश्वास करके बेफिक्र होकर घरके काम धन्धोंमें लगे थे। शत्रुसेनाकी खबर मिलते मिलते कितनेही किले शत्रुओं के हाथमें चले गये। यह सब किले बोथवेलको दिये गये। उत्तरमें डन्डी और सेन्टजानस्टन अङ्गरेजोंके हाथ आगये। फाइफ उनकी अधीनतासे एकदम अलग नहीं था। सारांश यह कि चिवियटसे समुद्र तक समूचा दक्षिण प्रदेश अङ्गरेजोंके अधीन होगया। पश्चिम भी नहीं छूटा। दक्षिण प्रदेशके अधीश्वर स्टुआर्टकी मृत्यु होजानेसे उसका नाबालिग लड़का वाल्टर जान लेकर आरन नगरको भाग गया। आत्मरक्षाके लिये रिकर्टनके एडम, क्रोगके लिन्डसे रचलीनमें और सर जान ग्रेहम लाइडजनमें जाछिपे। राबर्ट बायड भी आत्म-रक्षाके लिये छिपे रहे। जब सिवार्डने सर आमिर ब्राइनको फाइफ का शेरिफ नियत किया तब लुन्डिनके रिचार्ड बड़ी विपदमें पड़े। शत्रुओंसे सन्धि करना भी नहीं चाहते और टे नदी पार होनेका भी सुबीता न था। क्योंकि उस पारमें अङ्गरेज दखल जमाये बैठे थे। और उपाय न देखकर उन्होंने ग्रेहमसे मिलनेका विचार किया। सिर्फ अठारह साथी और बालबच्चे लेकर रातको स्टर्लिंग पुल पार करके ग्रेहमकी खोजमें डनडफ मूरकी तरफ रवाना हुए और उसके गुप्तस्थानका पता पाकर उधरही चले। सर जान ग्रेहम भी इनके आनेकी खबर पाकर गुप्तस्थान छोड़कर आमिले। इनलोगोंके आनन्दका पार न रहा।

उन्होंने सुना कि सर आमेर डी वार्लेसने बोथवेल किलेमें शराब और रसदका ढेर लगा रखा है। यह सुनकर उन्होंने सिर्फ पचास सैनिक लेकर उस किले पर आक्रमण किया। किलेकी रक्षाके लिये सर आमेरके मातहत अस्सी आदमी थे। स्काट उनमेंसे ६० को मारकर क़िलेका माल लेकर चल दिये। उनके ५ आदमी उस लड़ाईमें मारे गये। उन्होंने अब वहां रहना उचित न समझकर रातके समय अर्ल मलकमकी तरफ कूच किया। मलकम उनकी सहायतासे लेनक्स किलेकी रक्षा करने लगे।

इधर और और जागीरदारोंने अपनेको लाचार देखकर वालेस की खोजमें दूत भेजा। दूत ढूँढ़ता ढूँढ़ता समुद्र पार फ्लान्डर्समें आपहुंचा। वहां सुना कि वालेस गाइन प्रदेशमें है। दूत उधर ही दौड़ा और उसने वालेसके पास जाकर अङ्गरेजोंका सब अत्याचार कहा। वालेस अङ्गरेजोंके विश्वासघातसे बहुत क्रुद्ध हुआ और बिदा होनेके लिये फ्रांसनरेशके प्रासादमें गया। फ्रांसनरेशने उसे बिदा देनेसे बहुत रोका मगर वालेसने जब फिर आनेका वादा किया तब लाचार उसे बिदा दी; कहा कि वालेस अगर कभी स्वदेश छोड़कर फ्रांसमें रहना चाहेंगे तो फ्रांसनरेश उन्हें चाहे जिस स्थानके लार्ड बना सकेंगे।

वालेस उनसे बिदा लेकर अपने सहचरों और सर टामस लांगविल सहित जहाज द्वारा मनरोज हेविन नामक बन्दरगाहमें आकर उतरा। उसके आनेकी खबर स्काटलेण्डमें सर्वत्र फैल गई। चारों ओरसे उसके लड़ाकू साथी आकर उससे मिलने लगे। सर जान रामजे रुथवेन बार्ल्स आदि सेना सहित बर्लमबनमें जाकर उससे मिले। सब सेनाने वहीं छावनी डाली।

१२९८ ईस्वीके अगस्त महीनेमें यह मिलन हुआ। सबसे पहले सेन्ट जानस्टन किला दखल करनेका प्रस्ताव हुआ। रातको वह लोग टे नदीकी तरफ जाकर सड़कके किनारे जङ्गलमें छिप रहे। अङ्गरेज नौकर घास लानेके लिये ६ छकड़े लेकर जारहे थे वालेसने

कई साथियों सहित झट जङ्गलसे निकलकर छकड़े छीन लिये। वह लोग नौकरोंको कतल करके उनकी पोशाक पहनकर घास लाने चले और घास काटकर छकड़ोंके भीतर १५ हथियारबन्द आदमियोंको छिपा ऊपरसे घास रखकर किलेको लौटे। पहरेदारोंने बेखटके उन्हें किलेमें जाने दिया समझा कि यह तो अपने ही घसियारे हैं। किलेमें घुसतेही सशस्त्र जवान घासमेंसे निकलकर जमीन पर कूद पड़े। वालेसने उन्हें साथ लेकर दरवाजेके पहरेदारोंपर आक्रमण किया। उनलोगोंके मारेजानेपर द्वार उनके हाथमें आगया। इसी बीचमें सर जान रामजे बाकी स्काच सेना लेकर किलेमें घुस आये। बातकी बातमें क़िलेके सब सिपाही मारे गये या भाग गये। कुछ टे नदीमें कूदकर डूब मरे। दुर्गाध्यक्ष सर जान सिवार्डने बड़ी मुश्किलसे मिथडेन बनमें जाकर शरण ली। कोई चार सौ अङ्गरेज मारे गये। १४० ने भागकर प्राण बचाये। वालेसने सर जान रामजेको कप्तान और रुथवेनको शेरिफ बनाकर फाइफकी तरफ कूच किया ; कह गया कि अगर इधर अङ्गरेज आक्रमण करें तो फौरन मुझे खबर दीजाय। स्काचोंको सेन्ट जानस्टनमें बहुत माल असबाब मिला था इससे वह कुछ दिन आराम से रहे।

इधर वालेसके फाइफकी तरफ रवाना होनेकी खबर पाकर सिवार्ड डेढ़ हजार सेना सहित ब्लैक आयरन साइड नामक स्थानमें उसकी बाट देखने लगा। सेनाकी संख्या अधिक देखकर स्काट पहले तो बहुत डरे। वह सेन्टजानस्टनमें भी खबर न भेज सके, क्योंकि अङ्गरेज रास्तेकी निगरानीमें थे। इस हालतमें वालेसने वहीं एक समरसभा की। सभामें बहुत कुछ वादाविवाद हुआ, बहुतोंने बहुत तरहकी रायदी किन्तु वालेसने कहा कि जान पर खेलकर लड़नेके सिवा दूसरा उपाय नहीं है। बहुत कुछ वितण्डे के बाद वालेसकी राय मंजूर हुई। वालेसके उत्साहसे जोशमें आकर स्काटोंने युद्धमें जय लाभ करनेके लिये प्रतिज्ञा की। उन्होंने

बनमें घुसकर वृक्षोंकी ओटमें डालियां गाड़कर एक मजबूत किला बना लिया। किला अभी पूरा नहीं बना था कि सिवार्ड ससैन्य उन पर टूट पड़ा। अङ्गरेजसेनाने दो हिस्से होकर दो तरफसे किले पर हमला किया। एक हजार सेना सिवार्डके और पांच सौ सर आमिरडी वालेन्सके अधीन थी। दोनों तरफसे आक्रमण रोका गया इससे बेशुमार अङ्गरेज मारे गये। अन्तमें अङ्गरेज सेनापतिने किला घेरनेके इरादेसे आठ सौ सेना लेकर सारा जङ्गल घेर लिया और किले पर हमला जारी रखनेके लिये सात सौ सेना सहित वालेंसको छोड़ गये। आशादी कि अगर आप वालेस को पकड़ेंगे तो एडवर्ड आपको फाइफका अर्ल बना देंगे।

दोनों अङ्गरेज सेनापतियोंका मतलब समझकर वालेस क्राफोर्ड और लांगविलको किला सौंपकर ४० आदमी किलेमें छोड़ बाकी ६० को लेकर सिवार्डका सामना करने चला। सिवार्डके पहुंचनेसे पहलेही वह लोग एक बान्धकी बगलमें बड़ी बड़ी घासोंके भीतर जाकर छिप रहे। अङ्गरेज आहट पाकर मार मार करते उन पर टूट पड़े। किन्तु स्वदेशके लिये प्राणसमर्पण किये हुए वीरोंकी देह ईश्वरके दिये हुए बखतरसे रक्षित थी। इसीसे वह थोड़ेसे वीर उस प्रचण्ड अङ्गरेजसेनाकी गति रोकनेमें समर्थ हुए। वज्रमुष्टिमें तलवार धारण करके स्काटोंने असंख्य अङ्गरेजोंको कालके हवाले किया। अङ्गरेजोंको और आगे बढ़नेकी हिम्मत न हुई वह भौचक से होकर चित्रकी तरह वहीं खड़े रहे। सिवार्ड यह देखकर अचम्भेमें आगये कि क्योंकर इन इने गिने स्काटोंने असंख्य अङ्गरेज सेनाकी चाल रोकदी। तब उन्होंने किले पर आक्रमण करनेकी अन्तिम चेष्टा की। किन्तु फल उल्टा हुआ। जब वह किलेकी तरफ चले तो स्काटोंने इस तेजीसे उन पर हमला किया कि उन्हें मैदान छोड़कर भागना पड़ा। सब मिलाकर १३० अङ्गरेज इस लड़ाईमें मारे गये। सिवार्डने सर आमिरको पांचसौ सेना सहित किला घेरे रहनेका हुक्म दिया और डराया कि हुक्म नहीं मानोगे

तो कल तुम्हें फांसी पर लटका दूंगा। सिवार्डके चले जाने पर वालेसने वालेंससे मुलाकात करके कहा कि एडवर्डकी गुलामी छोड़कर जातीय दलमें आजाओ। वालेंस सिवार्डका हुक्म पहले होसे नहीं मानना चाहते थे और न माननेका नतीजा भी सुन चुके थे इसलिये उन्होंने सहजमेंही वालेसका कहना मान लिया।

दोनोंकी सेनाने मिलकर सिवार्डकी सेना पर धावा किया। इधर रामजे और रुथवेन वालेसकी विपद सुनकर सेना सहित झट-पट वालेससे आमिले। इन सबकी मिली हुई सेनासे अब भी सिवार्डकी सेना ज्यादा थी। संख्याकी ज्यादतीके भरोसे सिवार्डने अपनी सेनाके दो हिस्से किये। दोनों सेनाओंमें घोर युद्ध होने होने लगा। बड़ी देर तक संग्राम हुआ। रामजे और रुथवेन अपनी ताजा सेनासे शत्रुओंको मारनेमें गजब करने लगे। स्वयं सर जान सिवार्ड वालेसकी तलवारके शिकार हुए। अङ्गरेज सेना सेनापतिके मारे जानेसे तितर बितर होकर भाग गई।

लड़ाई जीतकर रुथवेन सेन्ट जानस्टनको लौट आये और रामजे ने कूपर किलेको कूच किया। कूपरका किला बेलड़ाई उनके हाथमें आगया। उधर वालेस, क्राफार्ड, गुथरी, रिचार्ड वालेस और लांग्रविल लगातार लड़ाइयोंसे थककर वालेंसके मकान पर आराम करने गये। वालेंसने चर्व्यं, चोष्य, लेह्य, पेयसे उनकी खातिरदारी की।

सवेरे स्काट सेन्ट एन्ड्रूकी तरफ चले। वहांका अङ्गरेज विशप भागकर समुद्रकी राह इङ्गलेन्ड चला गया। इसके बाद वह लोग कूपर किलेको रवाना हुए। वहां कुछ दिन रह किले का दरवाजा तोड़कर चले गये।

सन् १२९८ ईस्वीकी १२ जूनको यह युद्ध हुआ। इस युद्धमें सब मिलाकर १५८० अङ्गरेज मारे गये जिनमें सर अलडोमर और सर जान सिवार्ड प्रधान थे।

इस ब्लैक आयरन साइडके युद्धमें स्काटोंने बड़ीही बहादुरी

दिखाई थी। चौगुनी पचगुनी अङ्गरेज सेनाके सामने पड़कर भी जरा न डरे न हटे। अंगरेजोंने उन पर बार बार हमला किया उन्होंने बारबार उनका वार व्यर्थ किया। अन्तमें उनकी अलौकिक वीरता पर मुग्ध होकर जयलक्ष्मी उनकी गोदमें आई। दो स्काट-सेनानायक इस युद्धमें मारे गये। फाइफके शेरिफ सर डङ्कन बालफोर, सर क्राईस्टोफर, सीटन और सर जान ग्रेहम घायल हुए। इस युद्धमें रामजे, गुथरी और बिसेटने असाधारण विक्रम दिखाया था।

यह एक मामूली जंगली लड़ाई थी किन्तु इससे स्काट वीरोंका यशःसौरभ चारोंओर फैल गया। सिवार्डकी मृत्यु सुनकर फाइफ के सब अङ्गरेज वहांसे भाग गये। सिर्फ लकलेवेनकी छावनीमें थोड़ी सी अङ्गरेज सेना थी। उस छावनीके चारों तरफ पानी था इससे उसने समझा था कि कुछ डर नहीं है किन्तु बहुत जल्द उस की भूल दूर हुई। सब स्काट सेनाने कैंबेलमें एकत्र होकर वहांसे स्काटलेण्डसवेल नामक स्थानमें आकर छावनी डाली। रातको भोजनके पश्चात् वालेस सिर्फ १८ आदमी साथ लेकर चुपकेसे छावनीसे निकलकर लकलेवेनकी तरफ चला। इस पारके बन्दरगाह में पहुंच कर साथियों को वहीं छोड़ उस पार से नाव लानेके लिये स्वयं जलमें कूदपड़ा। उस वक्त उसके बदन पर सिर्फ एक कमीज थी और गलेमें तलवार लटकती थी। वालेस बातकी बातमें तैरकर दूसरे किनारे जापहुंचा। नावपर कोई आदमी नहीं था इस लिये वह बेखटके नाव इस पार ले आया। सब उस पर चढ़ कर उस पार पहुंच गये और अङ्गरेजों पर आक्रमण किया पलभरमें सब अङ्गरेज मारे गये। उस छोटेसे किलेका सब सामान अब उनके हाथ आया। रातको यह खबर स्काटलेन्डसवेलमें भेजी गई। वहांके स्काट सवेरे आकर विजयी सहचरोंके शामिल हुए। वह छोटी सी सेना विजयकी खुशीमें आठ दिन तक वहां उत्सव करती रही।

आठ दिनके उत्सवके बाद स्काट किलेकी सब चीजें लूट कर उसी नावसे इस पार आये और नाव जलाकार चले गये। वालेस सेण्ट जानष्टनको गया। वहां विशप सिनक्लेयर उससे आकर मिले। वालेस उत्तरकी तरफ जानेके लिये बहुत अधीर हुआ। किन्तु विशपने उसे मना किया। क्योंकि उस समय शत्रुसेना स्काट-लेन्डको चारोंओरसे रौंदती फिरती थी। अंगरेज बीचका रास्ता इस गरजसे रोके बैठे थे कि उत्तरवाली जातीयसेनासे वालेस मिलने न पावे। इधर बूकनके अर्ल इस बातकी कोशिश कर रहे थे कि जिससे वालेसके पास किसी तरह रसद न पहुंचने पावे।

अङ्गरेजोंके हजार कोशिश करने पर भी चारोंओरसे कंगाल आदमी वालेसके भण्डेके नीचे आकर खड़े होने लगे। नवयुवक रेन्डलफने मरेसे वालेसको मददके लिये बहुतसे आदमी भेज दिये। इस बीचमें जाप और ब्रुयर चुपकेसे शत्रुसेनाकी भीतरी हालत देख आये और वालेसको बता दी। वालेसने यह खबर पाकर जाप ष्टिफन और कार्ले आदि ५० सहचरों सहित सेन्टजानस्टनसे यारेथ किलेको कूच किया। राहमें एक विधवा स्त्रीने जातीय भावके जोशमें आकर उस छोटीसी सेनाके लायक सब खाना तय्यार रखा था। एक मछुआ पथप्रदर्शक बनकर रातको उन्हें उस खाईसे घिरे हुए किलेके पास लेगया। किलेके पीछे एक छोटासा गुप्त पुल था। स्काट उसी पुलसे किलेके भीतर घुसे। डेढ़ पहर रात चली गई थी। अङ्गरेज बेखटके होकर खाना पीना कर रहे थे इतनेमें वालेस उस दालानके दरवाजे पर दिखाई दिया। सब लोग चौंककर उस की ओर देखने लगे। देखतेही देखते वालेसकी तलवारने किले-दार टामलीनका सिर काट डाला। मालिककी मौत देखकर अङ्गरेजोंकी अक्ल मारी गई। एक एक करके किलेकी रक्षा करने वाले १०० अङ्गरेज स्काटवीरोंकी तलवारोंके शिकार हुए। इसके बाद वालेसने अपने चाचाको कैदसे छुड़ाया। टामलीनने वालेससे पार न पाकर उसके चाचाको पकड़वाकर कैद कर रखा था। दुष्टने

उस बूढ़ेके हाथ पैर लोहेकी जंजीरमें बांधकर पानीके गढ़ेमें डाल दिया था। बूढ़ा जञ्जीरसे छूटकर भतीजेको आशीर्वाद देने लगा। विजयी वीर आनन्दसे जयध्वनि करने लगे। उस रात वह वहां आरामसे सोये। दूसरे दिन भी वहीं रहे। बीच बीचमें सिर्फ अङ्गरेज आक्रमणकारी आकर उनके विश्राममें खलल डालते रहे। स्काट हरबार उनका हमला व्यर्थ कर देते थे। इस तरह उन्होंने वहां दूसरी रात भी बिताई।

तीसरे दिन तड़के उन्होंने वहांसे डम्बार्टनको कूच किया। वहांसे कुछ दूर टरवड स्थानमें सारा दिन बिताकर रातको चुपके चुपके शहरमें पैठे। वहां जातीयभावका ख्याल रखनेवाली वालेसकी पुरानी जान पहचानकी एक विधवा औरत रहती थी। वालेस उसके मकान पर गया। उसने स्काटिश वीरोंको एक गोदाममें लेजाकर छिपा दिया और चर्व्य, चोष्य, लेह्य पेयसे उनकी खूब खातिर की। उसके ८ बेटे थे। उसने सबसे वालेस का मंत्र ग्रहण करनेके लिये शपथ कराया। वह बिधवा स्त्री अङ्गरेजोंको कर देकर सुख और आरामसे शहरमें रहती थी उसे किसी तरहकी तकलीफ न थी किन्तु जातीय दलके आनेसे उसने शान्तिको दूर भगाकर जातीय कार्य्यमें आत्मोत्सर्ग करदिया।

वालेसकी आज्ञासे वह बिधवा जिन जिन मकानोंमें अङ्गरेज रहते थे उन पर कुछ निशान कर आई। इसके बाद वालेस अपने साथियों सहित अस्त्र शस्त्रसे सज घोड़े पर सवार होकर सड़कमें निकला। वह लोग सबसे पहले एक होटलमें पहुंचे। कई अङ्गरेज वहां खाना पीना कर रहेथे। वालेस की तलवारसे उनमें से अधिक मारेगये। उसके साथियोंने बाकी अङ्गरेजोंको भी मार डाला। होटलका मालिक यह देखकर बेहद खुश हुआ और मद मांससे उनकी खूब खातिरदारी की। उनको भर पेट खिला पिला कर होटल वाला पथ दर्शक होकर अङ्गरेजोंके स्थानमें लेगया। तीन सौ अङ्गरेज शहरकी रखवालीके लिये तैनात थे उसी रातको

एकएक करके वहसब जातीयदलके हाथ मारेगये। सूर्य्योदयके पहले ही वालेस अपने दल सहित नगरसे कुछ दूर एक गुफामें जाकर दिन भर छिपा रहा। होटल वालेने मद्‌ मांससे वहांभी उनका पेट भरा।

रातको वह लोग रोजनीथके पहाड़ी किलेकी तरफ रवाना हुए। यहां बहुतसी अङ्गरेज सेना थी। एक छोटेसे पहाड़ पर किला बना था। स्काट जंगल झाड़ियोंसे होतेहुए चुपकेचुपके पहाड़की चोटी पर पहुंचे। किलेके निवासी उस समय किसी विवाहके लिये गिर्जेमें गये थे सिर्फ कई गुलाम किलेमें मौजूद थे। स्काट बेधड़क किलेमें घुस गये कुछ देर बाद अङ्गरेज गिरजेसे लौट कर आये। वह गिन्तीमें ८०या इससे भी कुछ ज्यादा थे दरवाजेपर आते ही स्काट बड़े वेगसे उनपर टूट पड़े। पलभरमें सब अङ्गरेज जमीन पर लोटने लगे। स्काटोंने सात दिन तक वहां विजय का उत्सव मनाया। फिर किलेका माल लूटकर उसमें आग लगा चलते बने।

यहांसे वह फलसन नामक स्थानमें गये। वहां अर्ल मलकम रहते थे। ग्रेहम, बायड, लुन्डिनके रिचार्ड, एडम वालेस और बार्क्ले आदि वालेसके मित्र भी मलकमके मकान पर मौजूद थे। सभने बड़ी धूमधामसे वालेसका स्वागत किया। वालेस बड़े दिन तक वहां रहा। यहीं उसे अपनी माताके मरनेकी खबर मिली। उसकी माताने एलरस्लीसे निकाली जाकर डनफर्लिन एबीमें शरण ली थी। वहीं वह मरी। माताके मरनेकी खबरसे वालेसको बड़ा शोक हुआ और आप उसके दफन करनेमें शामिल होनेके लिये जानेका साहस न करके जाप और ब्लेयरको धूमधामसे यह काम करनेके लिये भेजा। एक दिन गेरीबाल्डीको भी इसी तरह प्राणसे प्यारी स्त्री एनिटाको दफनानेका भार आश्रयदाता किसानके के हाथमें सौंपना और भागकर पीछा करनेवाले आस्ट्रियावालोंके हाथसे जान बचानी पड़ी थी।

डगलसडेलके सर विलियम डगलसने यह सुनकर कि वालेस फिर

लड़ाईके मैदानमें उतर आया है जातीय व्रत पालन करनेकी प्रतिज्ञा की। यद्यपि उन्होंने जवानीमें लाचार होकर एडवर्डकी अधीनता स्वीकार की थी, यद्यपि उन्होंने अङ्गरेज मेमसे विवाह किया था तथापि जातीय भाव उनके हृदयसे दूर नहीं हुआ था। न दिनों उनकी स्त्री का कोई रिश्तेदार संकुहर नामक किलेका अफसर था। उसने उस किले और डगलस डेलके बीचके स्थानको अच्छी तरह बरबाद कर डाला था। डगलसने इस अत्याचारका बदला लेनेके लिये आज स्वयं उस किले पर धावा किया।उन्होंने टामडिक्सन नामक एक नौकरको पहले वहां भेजा। राहमें एन्डर्सन नामक एक किलेके आदमीसे उसकी भेट हुई। डिक्सनने उससे अपनी पोशाक और घोड़ा बदल लिया और वही पोशाक पहन कर और लकड़ीका बोझ लेकर सवेरे किलेमें घुसनेका विचार किया। एन्डर्सनसे सुना कि किलेमें सिर्फ ४० हथियारबन्द आदमी हैं। टाम डिक्सन उसी पोशाकमें उसी घोड़े पर चढ़ कर किलेकी तरफ जाने लगा इधर एन्डर्सन भी पीछेसे डगलसको लेकर लौटा। डगलस और डिक्सनको पासही कहीं छिपाकर एन्डर्सन अकेले दरवाजे पर पहुंचा। इतना सवेरे दरवाजा खुलवानेके लिये दरवानने उसे बहुत डांटा। दरवाजा खुलतेही एन्डर्सनने कई डालियां काट कर द्वार पर इस ढङ्गसे डालदीं कि फिर दरवाजा बन्द नहीं किया गया। इसी समय एन्डर्सनके इशारेसे डगलस दलबल सहित किलेमें घुस आया। सबसे पहले दरवान और फिर एक एक करके सब अंगरेज मारेगये। सिर्फ एक अङ्गरेजने जान बचाकर डूरिस डियरमें जा कर यह खबर दी। डगलस पर हमला करनेके लिये बहुत जल्द टाईवारस मूरमें एक अङ्गरेज सेना इकट्ठी हुई। डगलसने डिक्सन की मार्फत इस आसन्न विपदकी खबर वालेसके पास भेजी। वालेस उस समय लेडेन गढ़में था। उसने तीन सौ सेनासे उस किले पर दखल जमाया था। फिर किलसिथ किले पर दखल करने का इरादा करता था! उस समय रावेंसडेल उस किलेका अध्यक्ष

था वह किसी कामसे दूसरी जगह गया था। किन्तु लार्ड किउमिन उनकी गैरहाजिरीमें वहां मौजूद था वालेसने किला घेरने का काम मलक़म पर छोड़ कर डगलसकी सहायताके लिये कूच किया। राहमें अचानक राविंस डेलसे उसकी मुलाकात होगई। राविंसडेल पचास सिपाहियों सहित अपने किले को लौट रहा था। मतवाले हाथी पर जैसे शेर टूटता है वैसेही वालेस और उसके सैनिक उस छोटीसी अङ्गरेज सेनापर टूट पड़े। अङ्गरेज एक सांस भागे और आकर किलसिथ किलेमें ढुकना चाहा किन्तु मलकमने दो सौ स्काटिश सेना सहित किला घेर रखा था। इस लिये अंगरेज वहां जातेही उसके शिकार हुए। वालेस लूट पाटमें मशगूल न होकर डगलसकी मददको रवाना हुआ।

राहमें लिनलिथगोपील और डनकीथ आदि किले उसके हस्तगत हुए। इधर वालेस की लगातार विजयसे उत्साहित होकर बहुतसे स्काटिश वीर उसके झण्डेकी छायामें आकर खड़े हुए। लोडर, सीटन, वास, ह्यू दी हे प्रभृति अपनी अपनी सेना सहित वालेससे आमिले। इस मिलनसे वालेस और मलकम बहुतही प्रसन्न हुए। पीवल्स से आकर वालेसने घोषणाकी कि जो हम लोगोंके शामिल होंगे वह बहुत कुछ पुरस्कार पावेंगे। वालेसकी सेना धीरे धीरे ६०० होगई। उसने उसे लेकर लाइडस डेलकी ओर कूच किया। अङ्गरेजोंने संक्रुहर किलेमें डगलसको घेर रखा था किन्तु वालेसका आना सुनतेहीकिलाछोड़कर इङ्गलेन्डको भागे। वालेस क्राफोर्डमूरतक पहुंचा था। अङ्गरेजोंका भागना सुनकर उस ने मलकमको बाकी सेना सहित छोड़ सिर्फ २ सौ चुने हुए सवार लेकर शत्रुओंका पीछाकिया। कूोजबरनमें जाकर शत्रुओंको धर पकड़ा। पीछे वाली एक टुकड़ी सेनासे लड़ाई होने लगी। पलक भरमें कोई डेढ़ सौ अङ्गरेज खेत हुए। आगेकी सेना यह सुन कर पीछे लौटी। इधर मलकमकी सेना भी वालेससे जामिली। दोनों सेना मिलकर बड़े जोरसे अङ्गरेज सेना पर टूट पड़ी। वह जोर

न सह कर अङ्गरेज फिर भागे। स्काटोंने फिर पीछा किया। डाल मुइन्टन पहुंचनेसे पहलेही पांच सौ अङ्गरेज मारे गये तोभी पीछा न छूटा। घोड़ोंके थक जाने पर वालेस और ग्रेहम पैदल पीछा करने लगे। उसी समय सौभाग्यसे एडम कोरी जानस्टन, कर्कपेट्रिक और हालिडे नये जोशसे वालेससे आमिले। वालेस पहली सेना ले आनेका भार ग्रेहमको सपुर्द करके आप इस नई सेनासे एकघोड़ा चुनकर उसपरसवारहो नयेवलसे पीछाकरताचला। रास्तेमें वह लोग अङ्गरेज-मेधयज्ञ करते जाते थे। डुरिसडर, इनाक और टाइबर मूरके किलेदार मारे गये। काकपूल नामक पुलके किनारे बेहिसाब अङ्गरेज मारेगये। कितनेहीं नदीमें कूद कर डूब गये। यहां केयर लावेराकस्थानके अध्यक्ष माक्सवेल वालेस से आमिले। उस रात वहीं रहकर दूसरे दिन उन्होंने डमफ्रिज की यात्राकी। मार्गमें घोषणा करते गये कि स्काटलेन्ड फिर जातीय दलके हाथमें आगया है इसलिये अब डरको कुछ बात नहीं है। अङ्गरेज जहां जहां थे जल या थलके रास्ते इङ्गलेन्ड भाग गये। सिर्फ एक अङ्गरेज अबभी स्काटलेन्डमें हुकूमत करता था। सिर्फ डन्डीका किला मार्टन नामी अङ्गरेजके अधीन था। इसके सिवा समस्त स्काटलेन्डमें फिर जातीय पताका उड़ने लगी।

किन्तु एक भी विदेशीका चरण स्काटलेन्डकी छाती पर रहते वालेसको कल न थी। इस लिये उसने डगलसको फिरसे पाये हुए प्रदेशोंकी रक्षाका भार देकर डन्डीको कूच किया। वहां पहुंच कर वह शहर घेरने लगा मार्टनने प्राणभिक्षा करके आत्मसमर्पण करना चाहा किन्तु वालेस इसपर राजी न हुआ। इस समय एडवर्ड सेना सहित फ्रांसमें थे। स्काटलेन्डमें अङ्गरेज मेधयज्ञका हाल सुन कर उन्होंने भारी सेना सहित स्काटलेन्ड पर चढ़ाई करने का विचार किया। वालेस डन्डीको घेरे हुए था इस बीचमें एक दिन उसके विश्वासी कर्म्मचारी आपने आकर खबरदी कि एडवर्ड एक लाख सेना लेकर आरहे हैं। यह समाचार पाकर वालेस दो

हजार सेना सहित स्किमजिओरको डन्डी घेरे रहनेके काम पर नियुक्त करके आप ८ हजार सेना लेकर सेन्टजानस्टनको चला। यहां कई दिन अङ्गरेजोंकी बाट देखता रहा। इस बीचमें अङ्गरेज सेनापति उडस्टक दस हजार सेना सहित स्टर्लिङ्ग ब्रिज नामक स्थानमें आपहुंचे। मानो एक काली घटाने आकर स्काडलेन्डके सौभाग्य सूर्य्यको छिपा लिया।

तेरहवां अध्याय।

शेरिफ मूयरका युद्ध—फलकार्कका युद्ध—सर जान ग्रेहमकी मृत्यु—ब्रूससे वालेसकी भेट—लिंगलियगाउमें अङ्गरेजों पर अचानक घेरा—डन्डी पर अधिकार—वालेस का इस्तेफा—उसका फ्रांस चलाजाना—लिनके जानका मारा जाना—फ्रांस नरेशका बड़े आदरसे वालेसका स्वागत।

डन्डीका घेरा उठवा देनाही उडस्टक चाहते थे। इस लिये टे नदीमें सब जङ्गी जहाज भी भेजे गये। वह बड़ी भारी सेना लेकर आये थे इससे उन्हें स्काटोंका कुछ डर न हुआ। विशेषकर उनके चतुर पथप्रदर्शक उन्हें सामनेकी उपत्यका छोड़कर सेन्ट जानस्टन होकर लेजाना चाहते थे। उस उपत्यका प्रदेशमें वालेस साथियों सहित शत्रुकी बाट देखता था। उडस्टकने उधरसे जाते समय देखा कि स्काटोंकी संख्या उनकी सेनासे बहुत कम है। यह देख वह लड़ाईके लिये उतर पड़े। अङ्गरेजी सेना ऐसी धीरतासे चलती थी कि सर जान रामजेने पहले उसे देखकर समझा कि यह अलंमलकमके आदमी हैं। किन्तु वालेसकी तेज दृष्टि झट समझ गई कि वह कौन हैं। उसने फौरन अपने सैनिकोंको तय्यार हो कर शेरिफ मूयरके मैदानमें कतार बांधकर खड़े होजानेका हुक्म

दिया। अङ्गरेज बड़े जोरशोरसे उन पर टूट पड़े। दोनों ओरसे घमासान युद्ध होने लगा। पृथिवी खून खून होगई। स्काटवीरों की अलौकिक वीरतासे समूची अङ्गरेज सेना अपने सेनापति सहित लड़ाईमें मारी गई। बहुतसे बहुमूल्य पदार्थ स्काटोंके हाथ लगे।

वालेसने बड़ी फुर्तीसे स्टर्लिंग पुलकी ओर कूच किया। वहां आकर पुल तोड़ दिया और नदीमें बहुतसे खूंटे गड़वा दिये जिससे सेना किसी तरह नदी पार न कर सके। थोड़ीही दूर पर नदीमें अङ्गरेजोंके जहाज, विपद पड़नेपर अङ्गरेजोंको चढ़ा लेजानेके लिये तय्यार थे। वालेसने लोडर नामक सहचरको उनमें आग लगा देनेके लिये भेजा। लोडर काम पूरा करके झट उससे आमिला। इधर सीटन अर्ल मलकम, सर जान ग्रे हम वगैरह भी अपने अपने सहचरों सहित वालेससे आमिले जिससे वालेसकी सेना बहुत बढ़ गई। पीछे खबर आई कि एडवर्ड अपार सेना लेकर टर्फीचेनमें आपहुंचे हैं। एडवर्ड मस्त हाथीकी तरह चारोंओर संहार करते आते थे यहां तक कि सेन्ट जानस्टनके नाइट लोगोंकी सम्पत्ति भी उन्होंने नहीं छोड़ी। इधर बूटके स्टुआर्ट बारह हजार और किउमिन बीस हजार सेना लेकर फालकार्कके मैदानसे कुछ दूरपर लड़ाईका नतीजा देखनेके लिये ठहरेरहे। वालेस दस हजार सेना लेकर उस असंख्य अङ्गरेज अक्षौहिणीके सामने आया। उसकी तरफ अर्ल मलकम, सरजान ग्रेहम, रामजे, सीटन, लोडर, लुण्डिन और एडम वालेस सेनापति थे। एडवर्ड एक लाख सेना लेकर समुद्रगामिनी उत्तालतरङ्गिनी नदीकी भांति टर्फीचेनसे स्लामनमूरके मैदानको चले।

भाग्य फूटने पर सहजमें नहीं सुधरता। स्काटलेन्डके दुर्भाग्य-वश इस अन्तिम अवस्थामें स्काटिश सेनामें फूट फैली। स्वजाति विश्वासघाती किउमिनने वालेससे डाह करके उसकी सेनामें फूट डाल दी। इस बातको लेकर भारी फसाद खड़ा हुआ कि सेना-पति कौन हो। किउमिनने उज्र उठाया कि स्टुआर्टके रहते

वालेसको सेनापति बननेका कुछ अधिकार नहीं है और स्टुआर्टको भी यह बात हरगिज नहीं माननी चाहिये। किउमिनने जो चाहा था वही हुआ। वालेसने ऐसे संकटके समय सेनापतिका पद छोड़ने से अस्वीकार किया। जब समस्त जातिने एक वाक्यसे उसको जातीय शासनकर्त्ताके पद पर नियुक्त किया है तब उसने ऐसी हालतमें किसी खास आदमीके कहनेसे उक्त पद छोड़नेसे अस्वीकार किया। विशेषकर जिस आदमीने जातीय स्वाधीनताके समरमें आजतक जरा भी सहायता नहीं की है उसको जातीय सेनापतित्व लेनेका क्या अधिकार है? वालेसने ऐसे प्रस्तावसे अपना अपमान समझा। खासकर स्टुआर्टके वाक्यसे उसे बड़ा गुस्सा आया। स्टुआर्टने दूसरी चिड़ियाका पर खोंसकर शोभा पानेवाले कव्वेसे उसकी उपमा दी और कहा कि यदि हम लोग अपनी अपनी सेना लेकर चले जायंगे तो वालेस कैसे जीतेंगे देखा जायगा।

वालेससे अब सहा नहीं गया। उसने समझ लिया कि स्काटलेन्डका सुखसूर्य्य उदय होनेमें बहुत विलम्ब है, समझ लिया कि स्काटलेन्डके भाग्यमें बहुत दुःख बदा है, समझ लिया कि ऐसे घरके शत्रु मौजूद रहते विजयकी आशा कहीं दूर है। यह समझकर वह अपनी दस हजार सेना लेकर फलकार्क मैदानके पूर्ववाले जंगलको चला गया। तब स्टुआर्टने अपनी भूल समझी। समझा कि मैंने विश्वासघातक किउमिनके जालमें फंसकर स्वजातिका सत्यानाश किया, समझा कि इस भयङ्कर युद्धका योग्य नेता केवल वालेस है, समझा कि यह शौर्य्यका ताज मेरे सिर पर नहीं सजता है, समझा कि विधाताने मुझे जातीय सेनापति बनाकर नहीं भेजा है। समझकर वह घोर चिन्तामें डूब गये। समूची स्काटिश छावनी पर विषादकी घटा छागई।

चतुर एडवर्डने इस घरकी फूटकी खबर पाई। पातेही अर्ल ब्रियरफोर्डको तीस हजार सेना सहित स्टुआर्ट पर चढ़ाई करनेके लिये भेजा। स्टुआर्ट फौरन लड़नेको तय्यारहुए। कुछदेरतक दोनों

में घमासान युद्ध होता रहा। अन्तमें अङ्गरेज पीठ दिखाकर अङ्गरेजी छावनीमें जाछिपे। बीस हजार अङ्गरेज इस लड़ाईमें मारे गये। वालेस दूरसे स्टुआर्टकी बहादुरी देखकर आनन्दमें मग्न होगया बार बार हाथ हिलाकर उसकी प्रशंसा करने लगा।

किन्तु एडवर्ड प्रणसे पीछे हटनेवाले नहीं थे। उन्होंने फिर ४० हजार सेना देकर ब्रूस और विशप बेकको भेजा। अबके वालेस का मन घबराया—भावी जातीय अमङ्गलकी आशङ्कासे उसका चित्त चञ्चल हुआ। एक बार इरादा किया कि अभिमान छोड़ कर जातीय कार्य्यमें शामिल होजाऊं किन्तु इस बार अभिमानने स्वदेशानुरागको हरा दिया। वह गेरीबाल्डीकी तरह नहीं कह सका कि अगर एक मामूली प्यादा बनकर भी मैं जातीय कार्य्य करने पाऊं तो अपने जीवनको सफल समझूंगा। यहां गेरीबाल्डी से वालेसकी तुलना नहीं होती। वह किस हृदयसे जातीय स्वाधीनताकी रक्षाका भार विलासमें पड़े हुए अदूरदर्शी स्टुआर्टके हाथमें देकर लापरवाहीसे अलग खड़े होकर जातीयबल का नाश देखने लगा? नहीं, वालेस! तुम्हारे जीवनके सब कामों से आजके इस बर्तावका मेल नहीं है। जिस जातीय स्वाधीनताके लिये जन्मसे सुख चैन छोड़ चुके हो आज तुच्छ अभिमानके गुलाम होकर तुमने उस जातीय स्वाधीनता रत्नको, हाथमें पाकर भी रत्न स्वार्थोकी तरह पैर तले रौंद दिया? या तुम्हारा क्या दोष है! ब्रह्माका लेख कौन मिटा सकता है?

ब्रूस और बेकके आनेपर कापुरुष किउमिन सबसे पहले लड़ाई छोड़ कर भाग गया। किन्तु वीरवर स्टुआर्ट और उसकी दिलेर सेनाने दममें दम रहते तक मैदान नहीं छोड़ा। स्टुआर्टने अपने और अपनी सेनाके खूनसे अपने पापका प्रायश्चित किया। उन वीरों की देहें टुकड़े टुकड़े उड़ गईं तथापि वह पीछे नहीं हटे। क्षत्रिय सेनाकी भांति उन्होंने अटल अचल होकर वीरोचित मृत्युको आलिङ्गन किया। एक बार भी पीछे नहीं हटे। धन्य स्टुआर्ट धन्य तुम्हारी वीरता! अद्भुत तुम्हारा प्रायश्चित!

भाग कर पासके टरउड बनमें शरण लेनेके सिवा वालेस और उसकी सेनाके लिये और कोई उपाय न रहा। सोचने विचारने का भी समय नहीं। वालेस पलभरमें सेना सहित एडवर्डकी सेना के बीचसे हवाकी तरह टरउड वनको चला गया। इतनी जल्दीमें यह काम हुआ था कि वालेसके व्यूहभेद करके चले जानेके बाद एडवर्डको सब हाल मालूमहुआ। घोड़ोंकी टापोंसे धूलउड़कर चारों ओर इतना अंधेरा होगया था कि वालेसकी समूची सेना चलेजानेके पहले असली बातको कोई जान न सका। जैसे महा तूफान सामने को जड़ अजड़ सब चीजोंको उड़ा लेजाता है वैसेही वालेस और उसकी सेना सामनेकी विपक्षी सेनाको दल मल कर निकल गई। वालेस ग्रेहम और लोडर तीनसौ चुनी हुई सेनासे पीछा करनेवाले शत्रुओंका आक्रमण रोकते रोकते जंगलको चले गये। ब्रूसने बीस हजार सेना लेकर भागते हुए स्वदेशियोंका पीछा किया। वालेस अपनी चुनी हुई सेनाको प्रधान सेनासे मिल जानेका हुक्म देकर ग्रेहम और लोडरको मदद देता शत्रुओंका आक्रमण व्यर्थ करने लगा। जो उसकी प्रचण्ड तलवारकी परिधिमें आता वह कालके हवाले होता। अन्तमें ब्रूसने स्वयं वालेसका गला ताक कर बर्छी चलाया। वालेस जखममेंसे बर्छी निकालकर पट्टी बांधनेलगा। इधर ग्रेहम और लोडर बड़ी दिलेरीसे शत्रुओंका सामना करने लगे। वालेस फौरन तीन सौ सेना लेकर ग्रेहम और लोडरकी मददको पहुंचा। उधर बिशपबेक अपनी सेना सहित ब्रूसकी मददको आ गये। ब्रूसने फिर वालेस पर बर्छा फेंका किन्तु अबके उसका निशाना खाली गया। वालेसने क्रोधसे अन्धे होकर कराल तल-वारकी चोटसे ब्रूसको नीचे गिराया। ब्रूसकी सेनाने उसीवक्त उन्हें घोड़े पर चढ़ा दिया। वालेस क्रुद्ध शेरकी तरह अकेले रणमें गर्जने लगा। बहुत जल्द ग्रेहम उसकी मददको पहुंच गया। पहुंचते ही उसने तलवारसे ब्रूसके सामनेके अङ्गरेजोंको काट डाला। यह देखकर एक दूसरे अङ्गरेज नाइटने पीछेसे उसकी पीठमें जोरसे

बर्छा मारा। ग्रेहमने पैरसे कुचले हुए सर्पकी तरह गुस्से में आकर एकही तलवारमें उसको काट डाला। किन्तु यही उसका आखिरी वार हुआ। मृत्यु सामने देखकर उसने प्रधान सेनासे मिलनेके लिये उधर घोड़ेकी बाग मोड़ी। किन्तु रास्तेमेंही घोड़ा मारा गया और क्षणभरमें ग्रेहमका प्राणपक्षी उड़ गया। स्काटलैन्डके पूर्ण चन्द्रमाको राहुने ग्रस लिया!

वालेस शोकमें पागल होगया। मतवाले हाथीकी तरह शत्रुओं को रौंदने लगा। जिसे सामने पाने लगा उसे मारने लगा। ग्रेहम की लाश पर उसकी आग बरसाने वाली आंखें पड़ती थीं और बिजलीकी तरह उसकी नसनसमें खून दौड़ता था। ब्रूसने वालेसको शोकान्ध देखकर अपने बर्छाधारी सैनिकोंको उसके घोड़े पर बर्छा चलानेका हुक्म किया। उनके बर्छेसे उसका घोड़ा घायल हुआ। तब वालेसका होश ठिकाने आया। वह घोड़ेको दौड़ाकर अपनी सेनामें आगया। सेना कैरन नदीके किनारे खड़ी होकर उसका रास्ता देखती थी। वालेसने आतेही उसे नदी पार होनेका हुक्म दिया; स्वयं सबसे पीछे घोड़े पर चढ़ा नदीमें कूद पड़ा। स्वामिभक्त घोड़ा स्वामीको उस पार पहुंचाकर गिर पड़ा। गिरा और मरा। उसी वक्त कार्लेने उसके लिये एक दूसरा घोड़ा लादिया। वालेस उस पर सवार होकर झट अपनी सेनामें आगया। इस फलकार्क-कुरुक्षेत्रमें तीस हजार अंङ्गरेजी सेना मारी गई। उधर सर जान ग्रेहम और सिर्फ पन्द्रह स्काट पैदल मारे गये। अंगरेजोंने लड़ाई तो जीती पर असंख्य अङ्गरेज परिवारोंमें हाहाकार पड़ गया।

वालेसकी सेना टरवुड बनमें चली गई मगर वह और कार्ले कैरन नदीके किनारे कुछ देर ठहरे; उस पार फलकार्कके मैदान में प्यारे मित्र ग्रेहमकी लाश पड़ी है इससे वालेसका हृदय आगे बढ़नेसे व्यथित होने लगा। इधर फलकार्क युद्धमें जय प्राप्त करनेके बाद ब्रूसकी आंखें खुलीं। तब उन्होंने देखा कि अपने पैरमें आप

कुल्हाड़ी मारी है, तब समझा कि अङ्गरेजोंसे मिलकर स्वदेशका सत्यानाश किया है। अब पश्चात्तापसे उनका कलेजा फटने लगा। तब नदीके उस पारसे वालेसको मित्रभावसे बुलाया। दोनों मिलने पर एक दूसरेको टूसने लगे। वालेसने शपथ खाकर कहा कि राजगद्दी लेनेको मेरी लालसा नहीं है। मैं जातीय स्वाधीनताके लिये इतने दिनसे लड़ रहा हूं स्काटलेन्डके असली राजाकी अधीनता माननेको सब तरहसे तय्यार हूं किन्तु राजा होकर प्रजा पर हथियार उठाना—ब्रूससे ऐसा अपराध हुआ है जो क्षमाके योग्य नहीं। यह बात वालेसने साफ साफ कहदी। ब्रूसका हृदय वालेसके वाक्यसे पिघल गया। अन्तमें दोनों दूसरे दिन सबेरे डुनिपेसके गिरजेमें मिलनेका वादा करके उस दिन अपने अपने डेरेको चले गये। यह भी वादा हुआ कि ब्रूस बारह स्काटों सहित और वालेस दस आदमियों सहित आवेंगे। ब्रूस वालेससे बिदा होकर झटपट एडवर्डके खेमेमें चले गये। वहां हाथमें खून लगे हुएही सबके साथ खाना खाने बैठ गये। एक अङ्गरेजने उनकी दिल्लगी उड़ाई—"तुम स्काट लोग अपना खून आप पीते हो" यह बात उनके हृदय पर वज्रसी लगी। उन लोगोंने बारबार हाथ धोनेको कहा मगर उन्होंने उत्तर दिया—"यह अपना खून है धो देनेका नहीं है।" उस दिनसे ब्रूसकी तलवार फिर स्काटलेन्डके विरुद्ध नहीं उठी।

इधर वालेस टरउड जंगलमें चला आया। वहां उसकी सेना खा पीकर सोने लगी वह भी बिस्तरे पर गया पर उसकी आंखोंमें नींद नहीं आई। उठ बैठा। प्यारे मित्र ग्रेहम और स्काटिश वीरोंकी लाशें फलकार्क मैदानमें पड़ी हैं अभीतक दफनाई नहीं गई—इस मर्म्मभेदी चिन्ताने उसे व्याकुल कर दिया। वह अर्ल मलकम, लुन्डिन, रामजे, लोडर, सीटन और रिकर्टनके एडमको साथ ले पांच हजार सुसज्जित सेना सहित उसी रातको लड़ाईके मैदानमें आया। लाशोंके ढेरमेंसे चुन चुनकर स्काटिश वीरोंकी

लाशें निकालीं। जब प्रियमित्र ग्रेहमकी देह मिली तब वह घोड़े से उतरकर लाश गोदमें लेकर रोने और विलाप करने लगा। उसके रोने बिलखनेसे सब रोने लगे। अन्तमें सबने उसको गोदसे लाश लेकर फलकार्कके गिरजेमें दफन की।

प्यारे मित्रकी अन्तिम क्रिया होजाने पर वादेके अनुसार वालेस दस आदमियों सहित डुनिपेसके गिरजेमें ब्रूससे भेट करने गया। अपनी छोटीसी सेनाको फलकार्कके मैदानमेंही ठहरनेको कह गया। ब्रूस ठीक समय पर वहां पहुंच चुके थे। ग्रेहमके शोकसे वालेस ब्रूसके साथ मीठी बातें न कर सका। उसकी मर्म्मभेदी बातोंसे ब्रूसका हृदय बिंधगया। उन्होंने गिड़गिड़ाकर कहा "वालेस, अब अधिक मुझे मत धिक्कारो मैं अपनी करनीपर आप रोरहाहूं।" ब्रूसके अपना दोष स्वीकार करने पर वालेसके हृदयका भाव बदल गया। क्रोध दूर होकर भक्तिभावका सञ्चार हुआ। वह हृदय के उच्छ्वाससे ब्रूसके चरणोंमें गिर पड़ा। ब्रूसने हाथ फैलाकर उसे गोदमें उठा लिया। ब्रूसने वेदीके सामने प्रतिज्ञा की कि मैं अब कभी स्वदेशियों पर हथियार नहीं उठाऊंगा और एडवर्डसे जो प्रतिज्ञा कर रखी है उसका समय पूरा होतेही वालेससे आमिलूंगा। दोनोंने एक दूसरेसे बिदा ली। ब्रूस एडवर्डकी छावनीमें चले गये और वालेस अपनी सेनामें आगया। १२९८ ईस्वीकी १२ वीं जुलाईको फलकार्कका युद्ध हुआ।

वालेसकी लड़नेकी प्रतिभा शान्त होनेवाली नहीं थी। प्यारे मित्रकी मृत्युका बदला लिये बिना उसकी इच्छा मैदानसे हटनेकी न हुई। फलकार्कमें जय पाकर एडवर्ड सेना सहित लिनलिथ गाऊ नामक शहरमें खुशीका जलसा करते थे। वालेसने अपनी सेनाके दो टुकड़े करके एक दलका सेनापति मलकमको बनाया और एकका आपहुआ। दोनोंने दो ओरसे अचानक अङ्गरेजी छावनीपर आक्रमण किया। अङ्गरेज इसके लिये तय्यार न थे इसलिये बहुतसे अङ्गरेज पहलेही हमलेमें मारे गये। ब्रूस अपनी सेना लेकर लड़ाईके

स्थान से हट गया। एडवर्ड वीरोचित विक्रमसे संग्राम करने लगे। वालेसने उनके झण्डे वाले को एकही वारमें मार गिराया। झण्डा गिरा देख कर अंगरेज सेना डर कर भागी। एडवर्डने स्वयं लाचार होकर भागती हुई सेनाका साथ दिया। लिनलिथगाऊमें ११ हजार अङ्गरेजोंका सथराव होगया। स्काट तोभी न हटे। समूची स्काट सेनाने अङ्गरेजोंका पीछा किया। उनकी प्रचण्ड तलवारोंसे चालीस हजार अङ्गरेज भागते भागते मारे गये। बाकी सेना सहित एडवर्डने सालवे पार हो इंगलेण्डमें जाकर प्राण बचाया।

वालेस लौट कर एनम प्रदेशसे होता हुआ एडिनबरामें आया, आकर क्राफोर्डको फिर उसका शासनकर्त्ता बनाया। अङ्गरेजी आक्रमणसे पहले जो जिस पदपर थे और जीतेथे उन्हें उन्हीं पदोंपर नियुक्त किया। समस्त स्काटलेण्डमें फिर विश्वव्यापी शान्ति विराजने लगी। डन्डी किलेपर स्क्रिमजियो द्वारा फिर दखल होगया।

अवसर देखकर वालेसने सेन्ट जानस्टन शहरमें एक पार्लीमेन्ट बुलाई। जब पार्लीमेन्टके सभ्य अपने अपने स्थान पर बैठ गये तो वालेसने सबके सामने अपनी गवर्नरीसे इस्तीफा दिया। उसने साफ साफ कह दिया कि जब जमींदार लोग मुझसे डाह रखते हैं तब मैं इस पद पर नहीं रहना चाहता। कहा कि मैं फलकार्कके मैदानमें पूरा फल पाचुकाहूं—देशके लिये जो आत्मोत्सर्ग किया था उसके बदले यथेष्ट अपमान और तिरस्कार पाया है। इस बार मैंने स्काटलेण्डको फिर शत्रुओंके पंजेसे निकाल दिया है अब मैं जन्मभूमिसे बिदा लेकर फ्रांस चलाजाऊंगा। वहां जाकर जैसे बनेगा जिन्दगीके बाकी दिन बिताऊंगा।

पार्लीमेन्टने उसे ऐसा न करनेके लिये बार बार अनुरोध किया किन्तु वालेसका प्रण टूटनेवाला नहीं था। वालेसने देख लिया कि जबतक स्काटलेन्डकी गद्दीके लिये जागीरदारोंमें झगड़ा रहेगा, जब तक मतलबके अन्धे तंगख्याल जमींदार मुझसे डाह करेंगे, जबतक स्काटलेन्डके असली राजा ब्रूस अपना ख्याल न करेंगे तबतक

स्काटलेण्डको सदाकेलिये शत्रुओंकीमुट्ठीसे निकाललेना असंभव है। इसलिये स्वदेशमें रहकर स्वदेशका बारबार अधःपतन नहीं देख सकता। जब कभी दिन आवेगा, फिर,स्वदेशके उद्धारकेलिये हथियार उठाऊंगा। यह कहकर वह आंसूभरी आंखोंसे पार्लीमेन्टसे विदा लेकर सिर्फ अठारह सहचरों सहित फ्रांसको चलागया। स्काटलेन्डका सुखसूर्य्य कुछ दिनके लिये अस्त होगया!

जो अठारह आदमी वालेसके साथ गये उनमें लांगविल, साइमन रिचार्ड वालेस, सर टामसग्रे, एडवर्ड लीटल जाप और ब्रूयर मुख्य थे। अपनीइच्छासे देशत्यागनेवालायहवीरदल कुछ व्यापारियोंसहित डण्डीबन्दरमें जहाजपर सवार हुआ। जहाज इङ्गलेन्डके राज्यसे होकर जानेलगा। कुछही दूरपर लाल पालका शेर चिन्हित ध्वजावाला एक जहाज अचानक देखपड़ा। व्यापारियोंको मालूम था कि यह किसका जहाज है। उन्होंने वालेससे कहा कि यह लीनके जान का जहाज है। यह जालिम अङ्गरेज स्काटलेन्डवासियोंको मार डालना पुण्य समझता था। देखते देखते जान वालेसके जहाजके निकट पहुंच गया। पहुंचतेही उसने "युद्ध देहि" कहकर स्काटोंको लड़नेके लिये ललकारा। उस ललकारके उत्तरमें ब्रूयरके धनुषसे तीन बाण छूटे। एक एक बाणसे एक एक अङ्गरेज मारा गया। अङ्गरेज क्रोधमें आकर एक घण्टे लगातार गोले और बाण बरसाते रहे। अन्तमें दोनों दलोंमें हाथापाई और तलवारकी लड़ाई होने लगी। एक एक करके साठ अङ्गरेज स्काटोंके हाथ मारे गये। जानको भागनेका डौल लगाते देखकर क्राफोर्डने उसके जहाजके मस्तूलमें आग लगादी और वालेस, लांगविल और ब्रूयर उसे पकड़ कर अपने जहाज पर लेआये। वालेसकी तलवारकी एक ही चपेटमें उस जालिम डाकूका सिर धड़से अलग होगया साथही साथ युद्धकी आग भी बुझ गई। खबर देनेके लिये एक भी मल्लाह देशको नहीं लौटने पाया। तब स्काटोंने उसका रसदसे भरा जहाज लेकर फ्रांसको कूच किया। स्लूइस बन्दरमें

पहुंचकर वालेसने माल असबाब खुद लेलिया और जहाज व्यापारियों को देदिया। वालेस फ्लान्डर्स होकर फ्रान्स गया। पेरिस राजधानीमें फ्रांस नरेशने बड़े आदरसे वालेसको उतारा।

चौदहवां अध्याय

वालेसका फ्रांसका सेनापति बनाया जाना—एडवर्डकी स्काटलेन्ड पर फिर चढ़ाई—किर्डमिन और ब्रूससे सन्धि—आर्मीसकी सन्धि—अंगरेजोंकी स्काटलेन्ड पर फिर चढ़ाई—रसलिनका युद्ध—अङ्गरेजोंकी हार—एडवर्डकी फिर चढ़ाई—फिलिपका विश्वासघात।

फ्रांसनरेशने वालेसका स्वागत करके उसको समूचे गाइन प्रदेश की हुकूमत सौंपदी। उन्होंने वालेसको ड्यूक बनाना चाहा। वालेस ने स्वीकार नहीं किया तो उसे नाइटकी उपाधि और फरासीसी सेनापतिका पद दिया। उन्होंने उसको अपनी वर्दी आप पसन्द कर लेनेको कहा। वालेस अपनी सदाकी लाल सिंहवाली पोशाक व्यवहार करने लगा। फिलिपने उसे बहुत जल्द रणभूमिमें उतरनेका अनुरोध किया। उस समय इङ्गलेन्डसे फ्रांसकी बड़ी भारी लड़ाई चलती थी। वालेसके मैदानमें आतेही चारोंओरसे स्काट उसके झण्डेके नीचे आकर जमा होने लगे। लांगविलने भी उसके लिये बहुतसी फरासीसी सेना जमा की। थोड़े समयमें दसहजार सेना उसके झण्डेके नीचे जमा हुई। इधरसे ड्यूक आफ बरलिंस भी बारह हजार सेना सहित उसकी मददको आपहुंचे। मानो जयलक्ष्मीने वालेस पर प्रसन्न होकर स्वयं उसके लिये सेना जुटा दी।

इधर स्काटलैन्ड-रविके पूर्व सागरमें छिपजाने पर घोर दुःखकी रात आकर सारे स्काटलेन्ड पर छागई। घरके शत्रुही स्काटलेन्ड के सत्यानाशकी जड़ थे। विश्वासघातक जातीय शत्रु सर आमिर डि वालेंसने लियन हौसकी अफसरोंकी आशा देकर सर जान मान्टोथसे एडवर्डकी अधीनता स्वीकार कराई। इधर एडवर्डने भी भारी सेना लेकर इस मौके पर फिर स्काटलेन्ड पर चढ़ाईकी। वालेसकी गैरहाजिरीमें जातीय सेनाका नायक होने लायक कोई आदमी उस वक्त न था। इससे एक एक करके सब स्काटिशकिले बेलड़ाई उनके अधिकारमें आगये। जिन्होंने एडवर्डकी अधीनता न मानी वह हाईलेन्डके पासकेटापुओंमें भागगये। विशप सिंक्लेयर बूट को भागगये। स्वाधीनताकी यादतक मिटादेनेकेलिये एडवर्डने रोम की दीवारें गिरवादीं और राजसम्बन्धी सब कागजात नष्ट करदिये। जिन्होंने उनकी अधीनतामें जमींदारी करनेसे इनकार किया उनको इङ्गलेन्डके कैदखानोंमें भेज दिया। सर विलयम डगलस इङ्गलेन्डके कैदखानेमेंही मरे। टामस रेन्डलफ, लार्ड फ्रेजर और व्हिड दि हैको उन्होंने वालेसके पहरेमें इङ्गलेन्ड भेजदिया। सीथन, लोडर और लन्डिन बासको भाग गये। मलकम और केम्बल बूटमें विशप सिंक्लेयरके यहां चले गये। रामजे और रुथर्वेन क्लाइमेस नामके एक आदमीके साथ राथ शायरके अन्तर्गत स्टाकफोर्ड शहरमें एक किला बनाकर रहने लगे। एडेम वालेस, लिन्डसे और राबर्ट बायडने आरनमें शरण ली। वालेसरूपी सूर्य्यके अन्तर्धान होनेसे मानो स्काटिशजातीय सूर्य्यमण्डलके ग्रह केन्द्रजआकर्षण बिना चारों ओर बिखर गये। कसपेट्रिक एडवर्डकी अधीनता स्वीकार करके अपने किलेमें मौज उड़ाने लगे। एबरनेथी, सोलिस, किउमिन, लोरनके जान, लार्ड ब्रेचिन और दूसरे और बहुतसे रईस एडवर्डसे सन्धि करके अपनी अपनी जागीर भोगने लगे। मानो एक सूर्य्य मण्डलके ग्रह सहसा अपने केन्द्रसे गिरकर दूसरे केन्द्रपर जालटके।

ऐसे गुलामीकी जंजीरसे व्यथित होकर बूटवासी देशहितैषीदलने

एक जहाज सजाकर दूतके साथ वालेसके पास भेजा और कहला भेजा कि आप आकर स्काटलेन्डके सूने सिंहासन पर बैठिये हमसे एडवर्डका अत्याचार अब सहा नहीं जाता। वालेसके साथ फल-कार्कमें जो बुरा बर्ताव हुआ था उसे वह भूला न था इसलिये उसने प्रस्ताव अस्वीकार किया। जातीय दूत हताश होकर छूछा जहाज लेकर लौट आया। जातीय दलको बेहद अफसोस हुआ।

इधर स्काटलेन्डका बन्दोबस्त बेधड़क होनेलगा। एडवर्ड समस्त स्काटलेन्ड पर फिर अधिकार करके अनुगत और आश्रित जागीर-दारोंको उसकी जमीन बांटने लगे। उन्होंने यार्कके अर्लको सेन्ट-जानस्टनकी सिलकीयत और टे और डी नदीके बीचके दुआवका सेनापतित्व दिया। लार्ड बीमन्डको हाईलेन्ड प्रदेशका सेनापति बनाकर भेजा, लार्ड क्लिफोर्डको डगलस डेलका अधिकार और दक्षिणस्काटलेन्डकी हुकूमत दी; विश्वासघातक किउमिनको समूचा गालवे प्रदेश सौंपा और लार्ड मोलिसको समूचे मार्स प्रदेशका मालिक और बारबिकका सेनापति बनाया। एडवर्डने पवित्र आतिथ्यधर्मका नियम तोड़कर शरण आये हुए विशप लेमर्टन और लार्ड ओलीफेन्टको बेड़ियां पहना कर इङ्गलेन्डके कैदखानेमें भेजा। इस तरह वह स्काटलेन्डमें शान्ति स्थापन करके इङ्गलेन्ड लौटआये।

पापका धन बहुत दिन नहीं रहता। एडवर्ड जातीय विश्वास-घात् फैलाकर स्काटलेन्डकी छाती पर जो राजमहल बना गये थे उनके लन्दन लौटते लौटते विश्वासघातकी विप्राकर्षणी शक्तिसे उस आलीशान इमारतकी नीव धस गई। विश्वासघातक किउमिन ने ब्रूससे यह शर्त ठहराई कि अगर ब्रूस किउमिनकी सहायतासे स्काटलेन्डकी गद्दी पावें तो किउमिन जितनी जागीर मांगेगा ब्रूस उतनी देंगे।

इस बार समस्त स्काटलेन्ड एडवर्डके विरुद्ध खड़ा हुआ। एक एक करके सब किले फिर स्काटोंके हस्तगत होगये। केवल स्टर्लिंग किला और लकमेबेन तथा दूसरे मामूली शहर अब भी

अङ्गरेजोंके दखलमें रहे। १२९८—९९ ईस्वीमें स्काट धीरे धीरे अङ्गरेजोंके अधिकारमें गये हुए किलों पर हमले करने लगे। १२९९ में पोपसे एडवर्डकी एक सन्धि हुई। उसके अनुसार एडवर्डने स्काटिश सिंहासनके मुख्य दावेदार बेलियलको पोपके सुपुर्द किया।

वालेसके स्काटलेन्डके अभिभावकका पद त्याग करने पर किउमिन, लार्ड सोलिस और सेन्ट एन्डरूजके विशप लेम्बर्टन स्काटलेन्डके रिजेन्ट बनाये गये। रिजेन्ट लोगोंने एक स्वरसे शत्रुओंको निकाल बाहर करनेका प्रण किया। उन्होंने बड़ी मुस्तैदीसे स्टर्लिंग का किला घेर लिया। एडवर्डने इस खबरसे डरकर जागीरदारोंको ससैन्य स्काटलेन्ड चलनेका हुक्म दिया। किन्तु जागीरदार लोग लगातार लड़ाइयोंसे थक गये थे इसलिये उन्होंने एडवर्डसे कई तरहके उज्र और बहाने करके जाना न चाहा। किन्तु एडवर्ड चुप रहनेवाले आदमी नहीं थे उन्होंने अपनीही सेना लेकर स्टर्लिंग को कूच किया। स्काटलेन्डमें पहुंच कर देखा कि स्काट उनका सामना करनेको भलीभांति मुस्तैद हैं और स्काटिश सेना अबके उनकी सेनासे कम नहीं है। यह देख उन्होंने चुपचाप लौट जानाही अच्छा समझा। तब स्टर्लिंग किलेके निवासियोंको लाचार होकर लार्ड सोलिसके हाथमें आत्मसमर्पण करना पड़ा। स्काटिश रिजेन्टोंने सर विलियम ओलिफेन्टको स्टर्लिंग किलेका हाकिम बनाया।

किउमिनने अब अपने पापका प्रायश्चित्त आरंभ किया। अपार धन और असीम अधिकारमें उस समय स्काटिश जागीरदारोंमें कोई उसका सानी न था। उसने अपने धनके अनुसार दान देना शुरू किया। उसके दानसे प्रजा उसको बहुत मानने लगी। खासकर रिजेन्ट लोगोंने जब सुना कि वह लोग प्रजाके सौंपे हुए विश्वासका अपव्यवहार करेंगे तो वालेस स्वदेश लौटनेको तय्यार है तबसे वह बड़ीही सावधानीसे काम करने लगे।

किउमिन अपने अच्छे बर्तावसे प्रजाका विशेष प्रीतिभाजन होगया। वालेसके कहनेसे फ्रांसनरेश फिलिप फ्रांससे बहुतसा अन्न और शराब स्काटलेन्डमें भेजने लगे। किउमिन आधे दाम पर वह सब चीजें प्रजाके हाथ बेचने लगा। प्रजाने उसका नाम 'गुड स्काटिशमेन' यानी 'साधु स्काटशमेन' रखा।

उधर एडवर्डने स्वदेश लौटकर जागीरदारोंके सब उज्र मिटा कर १३०० ईस्वीकी पहली जुलाईको बड़ी भारी सेना लेकर फिर स्काटलेन्ड पर चढ़ाई की। इसबार ८७ जागीरदार अपनी अपनी सेना सहित एडवर्डके झण्डेके नीचे आखड़े हुए। इस बारकी यात्रा समूचे स्काटलेन्डको सदाके लिये जीत लेनेके इरादेसे थी। जागीरदारोंमें ब्रिटेनके नाइट लोग, लोरेन, स्काट्शनरेश बेलियलके भाई अलकजेन्डर बेलियल, पेट्रिक, सपुत्र अर्ल डनबर सर साइमन फ्रेजर, ग्रेहमके हेनरी और रिचार्ड सिवार्ड प्रधान थे। इस विराट सेनाके चार भाग हुए। पहला भाग लिंकनके अर्ल, दूसरा वारेनके अर्ल जान तीसरा स्वयं एडवर्ड और चौथा युवराज एडवर्ड के सेनापतित्वमें चढ़ाई करने चला। एक रणबांकुरा सैनिक सेन्ट जान का जान—सत्रह वर्षकी अवस्थाके युवराज एडवर्डकी सहायतामें नियत हुआ।

इस महती सेनाको लेकर एडवर्डने प्रसिद्ध पहाड़ी किले कैयार्व लावेरकको जाघेरा। उस समयके अनेक लड़ाईके यन्त्र लेकर एडवर्डने किला तोड़नेकी चेष्टाकी मगर किसी तरह काम-याब न हुए। बार बार उसकी सेना किलेपर दखल जमानेकी कोशिश करने लगी मगर हर बार पीछे हटना पड़ा। इस तरह बहुत दिन बीत गये तो भी किला हाथ नआया। किलेवालेभी लगातार रोकनेकी चेष्टा करते करते थक गये और अन्तमें प्रस्ताव किया कि अगर हम लोग सकुशल किला छोड़ कर जाने पावें तो एडवर्डको किला सौंप कर चले जानेको तय्यार हैं। एडवर्डको लाचार यह प्रस्ताव मानना पड़ा। किले वाले अस्त्र शस्त्रसे सज्जित

होकर किलेसे निकल एडवर्डकी छावनीके सामनेसे चले गये। एडवर्ड देख कर दांतोंमें उंगली काटने लगे कि सिर्फ साठ बहादुर इतने दिन उनकी अपार सेना की सब चेष्टा व्यर्थ करके किलेकी रक्षा कर रहे थे। कोई कोई इतिहास लेखक कहते हैं कि एडवर्डने अपनी प्रतिज्ञा तोड़कर उस वीर दलमेंसे कईएकको फांसी पर लटका दिया था। खैर जोहो, एडवर्ड किलेपर अधिकार करके ह्वियर फोर्डके अर्लको उसका अफसर बनाकर ससैन्य उत्तरकी तरफ रवाना हुए।

इधर स्काटिश कमिश्नर फ्रांस राज फिलिपसे सहायता न पाकर रोमनगरमें गये। उनकी दुःख कहानी सुनकर पोपने एडवर्डको स्काटलेन्डकी स्वाधीनता छीननेसे बाजरहनेका अनुरोध करके एक चिट्ठी लिखी। एडवर्ड यह आज्ञापत्र पाकर पहले तो बड़े नाराज हुए पीछे शान्त होकर पोपको इस किस्मकी चिट्ठी लिखी कि मैं आपका पत्र पार्लेमिन्टमें पेश करूंगा। चिट्ठी भेज कर झटपट उन्होंने लिंगकलनमें एक पार्लेमिन्ट बुलाई। इस सभामें १०४बैरन उपस्थित हुए। सबके दस्तखतसे इस किस्मकी एक चिट्ठी रोमके पोपको लिखी गई कि स्काटलेन्ड मुद्दतसे इंगलेन्डकी अधीनता स्वीकार किये आता है इससे इङ्गलेन्ड इतने दिनकी प्रभुता छोड़ना नहीं चाहता। चिट्ठी भेजकर एडवर्ड मस्त हाथीकी तरह समस्त स्काटलेन्डको रौंदने लगे। बीच बीचमें स्काटिश सेनासे उनकी सेनाका खण्ड युद्ध होने लगा। असंख्य किले धीरे धीरे उनके अधिकारमें आने लगे।

इधर अर्ल वारेनकी सेनाभी इरविंग तक बढ़ी। वहां रिजेन्टों से वारेनकी घमासान लड़ाई लगी। स्काटिश सेना बहुत थोड़ी थी इससे अङ्गरेजी सेनाके बार बार हमला करनेसे बिखर कर भाग गई। दूसरी तरफ युवराजकी सेनाने क्लाइडसडेल, बथबेल किले और लेसमा हागो एबीको जलाकर राख कर दिया। पहले दो किलों और एबीमें बहुत स्काट जाछिपे थे; वह सब जलकर भस्म होगये।

एडवर्डने समूचे दक्षिणी स्काटलेन्डको हमेशाके लिये इङ्गलेन्ड के राजसिंहासनके अधीन करना ठाना था। उन्होंने पुराने किलोंकी मरम्मत शुरू करा दी और सब किलोंको दीवार खाई आदिसे मजबूत कराने लगे। इस कामके लिये उन्हें इङ्गलेन्डसे बहुतसे मजदूर मंगाने पड़ेथे। स्वदेशानुरागके कारण स्काटिश भूमिमें उन्हें एक भी मजदूर न मिला। धन्य स्काटलेन्ड! धन्य तुम्हारा स्वदेशानुराग! इतनाही नहीं अपनी अपार सेनाके लिये रसद तक उन्हें इङ्गलेन्डसे मगानी पड़ीथी क्योंकि स्काटोंने अङ्गरेजीसेनाको रसद न देनेकी इच्छासे बाजार बन्दकरदिये थे और अपने सब कलकारखाने इसलिये तोड़ दिये थे कि उनके देशकी बनी हुई चीज अङ्गरेज न पासकें। धन्य स्वदेशानुराग! धन्य स्वजातिप्रेम!

उन्नीसवीं सदीके अन्तमें अङ्गरेज अफगानस्थान जीत कर जैसी झंझटमें पड़े थे एडवर्ड दक्षिण स्काटलेन्ड जीत कर भी वैसेही सङ्कटमें पड़े। उस प्रदेशको शासनमें रखनेके लिये जितना खर्च पड़ने लगा उतना कोई फायदा न हुआ। इधर फिलिपने भी उनसे कमसे कम सामयिक सन्धि करनेके लिये प्रस्ताव किया। एडवर्ड के दूतने पेरिसमें जाकर इस सामयिक सन्धिकी शर्ते तय कीं। १३०० ईस्वीकी ३० वीं अक्टोबरको डमफ्रीज शहरमें उस सन्धि पत्र पर स्वाक्षर किया। उस सन्धिमें स्काटलेन्डभी शामिल हुआ। उसके मुताबिक हेलोमस हुइटसन्डे तक इङ्गलेन्ड, स्काटलेन्ड और फ्रांसमें शान्ति रहेगी। कोई किसीपर हस्तक्षेप न कर सकेगा।

सामयिक सन्धिका समय पूरा होतेही एडवर्डने स्काटलेन्ड पर फिर चढ़ाई शुरूकी। वहां एक किला बनानेके लिये तय्यारी होने लगी। इधर फ्रांसनरेश फिलिपके दरबारमें स्थायी सन्धिके नियम बनाये जाते थे। अर्ल बिउकन, स्काटलेन्डके स्टुआर्ट जेमस और रिजेन्टसौलिस और इनजेल बामडो एम फ्रेविल स्काटलेन्डके प्रतिनिधिके तौर पर पेरिसमें मौजूद थे। एडवर्ड और फिलिप दोनों ही दिलसे शान्ति चाहते थे। एडवर्ड मनही मन यह इरादा करते थे कि फिलिपसे झगड़ा मिटतेही स्काटलेन्डका सब तरहसे शासन

कर लेंगे। इधर फिलिप भी लड़ाईके खर्चसे तंग आगये थे। किन्तु वह स्काटलेन्डको छोड़ कर सन्धि करनेको तय्यार न थे। एडवर्ड भी किसी तरह उससे राजी नहीं हुए। अनेक वाद-विवादके बाद एक फैसला हुआ। एडवर्डने आश्रित फ्लेमिंग्स लोगोंको छोड़ दिया; फिलिपने आश्रित स्काटोंको एडवर्डकी कृपा पर छोड़ दिया। इङ्गलेन्डके वाणिज्यको इससे बड़ी हानि होने पर भी एडवर्ड विकट राज्य लालसामें अन्धे होकर राजी होगये। इस सन्धिका नाम आमींसकी सन्धि है।

इस बीचमें सर साइमन फ्रेजर एडवर्डका झण्डा छोड़ कर जातीय झण्डेके नीचे आकर खड़े हुए। वह बड़े प्रतिभाशाली और साहसी पुरुष थे। उनके आनेसे जातीय दलका बल बहुत बढ़ गया। उधर ग्लासगोके बिशपने एडवर्डकी अधीनता स्वीकार की। फ्रेजरके आनेसे यह घाटा पूरा हुआ बल्कि कुछ नफा रहा।

१३०२ ईस्वीकी ३० वीं नवम्बरको डमफ्रायरकी सन्धिका समय पूरा हुआ। उसी दिन जान डी सिग्रेवके अधीन २० हजार अङ्गरेजसेना स्काटलेन्ड पर भेजी गई। इसने रसलिन नगरके नजदीक पहुंचकर छावनी डाली। वहां इसके तीन टुकड़े होकर तीन तरफको चले। यह समाचार पातेही गवर्नर जान किडम्मिन और साइमन फ्रेजरने आठ हजार सेना लेकर १३०३ ईस्वीकी २४ वीं फरवरीको सवेरे एकबएक पहले दल पर आकर आक्रमण किया। अङ्गरेज इस अचानक आक्रमणके लिये तय्यार न थे इससे उनकी सेना भौचकसी होकर भाग गई। एक एक करके स्काटोंने तीनों दलको अच्छी तरह परास्त कर दिया। उनकी अद्भुत वीरता की कहानी सारे युरोपमें फैल गई। सर जान डी सिग्रेव बेटे और भाई सहित अपने अपने बिछौने पर सोये थे। पराजयके बाद सेना के शोरगुलसे उन लोगोंकी नींद टूटी। उठकर देखा कि वह लोग विजयी स्काटोंके हाथमें कैद हैं। सर टामस नेविल, एडवर्डके खजांची सर रल्फ डी कफरर और १६नाइट भी कैद हुए।

उंगलियों पर गिनने योग्य थोड़ेसे स्काटोंके हाथसे सिग्रेव जैसे सेनापतिके अधीन इतनी भारी अंगरेज सेनाकी हार सुनकर एडवर्ड क्रोधसे पागल होगये। युरोपमें अपनी सेनाकी इज्जत घट जानेसे वह बहुत डरे। गई इज्जतको फेर लाने पर मुस्तैद हुए। स्काटलेन्डके लिये जो लोहेकी जञ्जीर बना रखी थी इस बार उन्होंने प्रण किया कि चाहे जैसे हो स्काटलेन्डके पैरमें वह बांधनी होगी। इस लिये उन्होंने स्वदेशविदेशमें जो जहां था सबसैनिकोंऔर जागीरदारों को अपने झण्डेके नीचे आकर खड़े होनेका हुक्म दिया। बेशुमार जङ्गी जहाज रसद और पोशाक आदिसे भरकर तरीके रास्ते स्काटलेन्डको रवाना हुए। उन्होंने स्वयं वह विराट सेना लेकर खुश्की के रास्ते उत्तरको कूच किया।

इधर फिलिपका विश्वासघात इस समय चरम सीमाको पहुंच गया। उन्होंने स्काटिशकमिश्नरोंको इस अन्तिम अवस्थामें कैद कर रखा। उन्हें फुसलाकर नजरबन्द रखा कि हम एडवर्डको स्काटलेन्डसे अलग सन्धि करानेके लिये कोशिश कर रहे हैं। वैसे वीरों के उस समय स्वदेशमें रहनेकी बहुत जरूरत थी। तथापि फिलिप ने किसी तरह उन्हें आने नहीं दिया। ऐसा करके वह एक तरहसे एडवर्डकी मदद करने लगे।

एडवर्डके आगमनकी बात समस्त स्काटलेन्डमें फैलने नहीं पाई थी कि कमजोर दिलके स्काट अमीरोंने आगे बढ़कर एडवर्डसे माफी मांगी। जातीय विश्वासघातक सर जान मौन्टीथ उनमें अगुआ था। उसे इस विश्वासघातके बदले समूचे लेनक्स प्रदेशकी हुकूमत इनाममें मिली और अपने पहले पद (डम्बरटनकी गवर्नरी) पर रहनेका हुक्म मिला।

पन्द्रहवां अध्याय।

वालेसकी सङ्कटावस्था।

जब एडवर्डने असंख्य सेना लेकर तीसरी बार स्काटलेण्ड पर चढ़ाई की तब भयभीत और चौकन्ने स्काटलेण्डने वालेसको इस भीषण विपदसागरमें एक मात्र कर्णधार समझकर याद किया। समस्त स्काटलेण्डवासियोंने एक वाक्यसे उसको स्काटलेण्डके सूने सिंहासन पर बिठानेका विचार किया। यह विचार करके उन्होंने वालेसको राजी करनेके लिये फ्रांसनरेश फिलिपके पास दूत भेजा। किन्तु फिलिप वालेसको इसमें शामिल नहीं होने देना चाहते थे इससे उन्होंने उसको इसकी खबर न होने दी।

उधर फरासीसी भूमिमें रहना वालेसको बहुत बुरा मालूम होने लगा। फ्रांस नरेशने उसे गाइन प्रदेश दिया था किन्तु उसका शासन करनेमें उसे शारीरिक और मानसिक दोनों शक्तियां खर्च करनापड़ी थीं। अङ्गरेजोंने अब भी बोर्डो नगरपर दखल रखा था। अर्ल ग्लास्टर उस किलेके अफसर थे। वालेस दो महीने लगातार उसको घेरे रहा मगर किलेके निवासी समुद्रके रास्तेसे रसद और लड़ाईका सामान पाया करते थे इससे उसकी सब चेष्टा विफल होने लगी। अन्तमें ड्यूक आफ अरलिंसका कहना मानकर वालेस घेरा उठाकर पेरिसमें चला आया। फिलिपने बड़े आदर मानसे उसका स्वागत किया। अब वालेस स्काइनन प्रदेशमें रहने लगा। एक नाइट उसका असली अधिकारी था। वह पुश्तैनी जायदादसे वञ्चित होकर वालेससे बदला लेने पर आमादा हुआ। बहुत दिनसे मौका देख रहा था अब मौका मिला। एक दिन वालेस कुछ सहचरों सहित सैरको निकला था। उसके साथ सिर्फ तलवार और छुरे थे। नाइट बहुत आदमियों सहित जंगलमें छिपकर वालेसकी

बाट देखता था। वालेसके पहुंचतेही नाइट हथियारबन्द जवानों सहित सामने आया। वालेस डरनेवाला नहीं था उसने झट तलवार निकालकर एकही चपेटमें नाइटको काट डाला। नाइटके मरनेसे युद्ध बन्द नहीं हुआ क्योंकि उसका भाई सेना लेकर लड़ने लगा।

मगर शेरके सामने भेड़के बच्चे की बहादुरी कबतक रहसकती है? बातकी बातमें वालेस और उसके साथियोंकी तलवारोंसे नाइटके भाई और उसकी छोटीसी सेना खतम होगई। सिर्फ सात आदमी भाग गये। वालेसके साथियोंमें घायल तो कई हुए पर मारा कोई नहीं गया। फ्रांसनरेश वालेसके प्रति इस आक्रमणका समाचार सुनकर बहुत दुःखित हुए और वालेसको अपने परिवारके शामिल रहनेका हुक्म दिया। कहा कि अब कोई तुम्हारा बाल नहीं छूएगा। राजा वालेसको बहुत मानते थे तोभी वालेसको बीच बीचमें अकसर ऐसी आफतमें फंसना पड़ता था।

मृत नाइट और उसके भाईके दो जाति भाइयोंने बदला लेनेके इरादेसे राजासे चुगली खाई कि वालेस शेरसे लड़कर अपना पराक्रम दिखाना चाहता है। फ्रांसनरेशने उनका असली मतलब न समझकर इस बातका अनुमोदन किया। उन्होंने जरा भी नहीं समझा कि यह लोग इस बहाने वालेसकी मृत्यु देखना चाहते हैं। इससे उन्होंने कुश्तीकी तय्यारी करनेका हुक्म दिया। नियत दिनको राजा सभासदों सहित अखाड़ेमें आये। वीर चूड़ामणि वालेस भी निडर होकर अखाड़ेमें पहुंचा। जानकी उसे [illegible] परवा न थी परन्तु इस बातका सोच हुआ था कि फ्रांसनरेश[illegible] उसकी मौतके मामलेमें कैसे हामी भरी। वह नहीं जानता था [illegible] राजाको धोखा दिया गया है। सबने उस[illegible] बख्तर प[illegible]नकर कठघरेमें घुसनेका अनुरोध किया। उसने अभिमानपूर्वक कहा कि ईश्वर मेरी रक्षा करेगा। यह [illegible] कर वह [illegible] तलवार हाथमें लिये कठघरे[illegible] [illegible] । [illegible] और [illegible] [illegible] बन्द हो

गया। उसी वक्त शेर गर्जकर उस पर टूट पड़ा। किन्तु वीरकेसरी वालेस भी डरनेवाला नहीं था। उसने शेरका अयाल पकड़कर इस जोरसे तलवार चलाई कि पलभरमें शेरके दो टुकड़े होगये।

अब वालेसके अभिमानकी आग भड़क उठी। उसने राजाकी तरफ लाल आंखें करके कहा—"महाराज! क्या आश्रित स्काटको इस तरह मरवा डालनाही आपका इरादा था? अगर आपका यही दिली इरादा है तो मैं डरता नहीं। आपकी पशुशालामें जितने पशुराज हैं एक एक करके सबको लानेका हुक्म दीजिये मैं इसी कराल तलवारसे हरेकको काट डालूंगा उसके बाद आज आपसे विदा लूंगा। इतने दिन आपने जो मुझे शरण दी थी उसके लिये आपका कृतज्ञ रहूँगा। किन्तु अब मेरे यहां रहनेकी जरूरत नहीं है। पशुओंसे लड़नेके लिये वालेसका जन्म नहीं हुआ है। स्काट-लेन्ड अभी शत्रुओंहीके अधीन है। वहां वालेसकी तलवार शत्रुओं को मारनेके काम आवेगी। आज मैं आपसे और फ्रांससे इस जन्म के लिये विदा लेता हूं।" यह कहकर वालेस चुप हुआ। उसकी लाल आंखोंसे आग बरसने लगी। सबलोग सन्नाटेमें आगये।

फ्रांसनरेशने इसका गूढ़ मतलब न समझकर वालेससे स्पष्ट हाल पूछा। उससे सुनकर उन दो पापियोंकी बुरी नीयत समझी। उनके बहुत तंग करने पर उन्होंने अपना दोष स्वीकार किया। फ्रांसनरेशने उसी वक्त उनको फांसीका हुक्म दिया और वालेसका शरीर कोई न छूए इसके लिये खबरदार हुए। किन्तु वालेसका मन अब उस भूमिमें नहीं लगा। स्वर्गादपि गरीयसी जन्म-भूमि आज उसे याद आई। इतने दिन वह मानो सोता था, इतने दिन अभिमानने उसके गहरे स्वदेशानुरागको ढक रखा था। इतने दिन पर उसकी मोहनिद्रा टूटी। देखा कि फ्रांसके लिये वह प्राण तक देनेको तैयार था तथापि फ्रांसने उसे अपना नहीं समझा। वह अपनी भूल समझकर फिर जन्मभूमिके लिये जीवन उत्सर्ग करनेको तत्पर हुआ। जन्मभूमि शत्रुके चरणों तले रौंदी जाती

है—इसकी याद फिर उसका कलेजा फाड़ने लगी। अबके प्रतिज्ञा की कि या तो जननीका उद्धार करूंगा नहीं तो प्राण दे दूंगा। अबके उसकी अन्तिम साधना है—अन्तिम आत्मबलि है।

फ्रांसनरेश फिलिपने जब देखा कि वालेस स्वदेश लौट जानेका पक्का इरादा कर चुका है तब उन्होंने वालेसको स्वदेश भेजनेके लिये जितने पत्र पाये थे वह सब उसे दिखाये। वालेससे अब रहा नहीं गया। स्वदेश फिर उसकी सेवा ग्रहण करनेको व्याकुल है यह सुनकर फिर उसका चित्त उत्तरको उड़ा। वह राजासे बिदा होकर एक मात्र विश्वासी मित्र लांगविलको साथ ले स्काटलेन्डको रवाना हुआ। वह लोग स्लोस बन्दरमें जहाज पर सवार हुए और अर्ल माउथ बन्दरमें जाकर उतरे। वालेसने फलकार्क युद्धके बाद १२९८ ई०के अन्तमें स्काटलेन्ड छोड़ा था; फ्रांसमें कुछ अधिक दो वर्ष रहकर १३१० में स्वदेश लौट आया। फ्रांसनरेश फिलिपको उसके वियोगसे बहुत अफसोस हुआ। वह वालेसको दिलसे प्यार करते थे इसीसे स्काटलेन्डसे बारबार अनुरोध पाकर भी उसे भेजना नहीं चाहा और इस ख्यालसे कि खबर पाकर वालेस उन्हें छोड़कर चला न जाय, उन्होंने वह सब चिट्ठियां छिपा रखीं। किन्तु विधाताका लेख कौन मिटा सकता है? मातृभूमिके उद्धार के लिये वालेसकी आत्मबलिकी जरूरत पड़ी थी। इसीसे आज वालेसने प्रियबन्धु फिलिपका बहुत कुछ आग्रह टालकर भी स्वदेश की यात्रा की। भाल लिखि लिपि को सक टार?

अर्लमाउथमें उतर कर वालेसने पर्थकी नगरकी यात्रा की। वहां अपने जाति भाई क्राफोर्डके गोदाममें जाकर छिप रहा। गोदाम ऐसा बना था कि किसीको उसके आनेकी खबर न हुई। सिर्फ उसमें एक छेद था वही नदीमें आनेजानेका रास्ता था और उसी रास्तेसे उन लोगोंके पास खाना भेजा जाता था। वालेस और लांगविल यों उस गुप्तस्थानमें चार पांच दिन रहे। क्राफोर्ड उनके लिये अधिक रसद सेन्ट जानस्टनसे लाते थे। अङ्गरेजोंने देखा कि वह अपनी

जरूरतसे ज्यादा रसद लेजाते हैं। उन्हें शक हुआ और उन्होंने उनको कैद कर लिया। पीछे जब सुना कि वालेस आया है तो उसका पता लगानेके लिये क्राफोर्डको छोड़ दिया। जिस रास्ते से क्राफोर्ड गये अङ्गरेज सेनापति बटलरने आठसौ सेना लेकर उन का पीछा किया। यह सुनकर वालेस क्राफोर्ड पर बहुत बिगड़ा—कहा कि तुमने अंगरेजोंके हाथमें हम लोगोंको सौंपकर स्वजातिकी शत्रुता साधी ? किन्तु क्राफोर्डने सब हाल बताकर उसको शान्त किया और उन लोगोंको दूसरी जगह भाग जानेकी सलाह दी। मगर वालेसने भागनेसे अस्वीकार किया। वह क्राफोर्ड सहित २० सहचर लेकर उस प्रकाण्ड अंगरेज सेनाका मुकाबला करनेको मुस्तैद हुआ।

सोलहवां अध्याय।

वालेसकी गिरिफ्तारी।

वालेसने पेड़ोंकी डालियोंसे एक मुख्तसा किला बनाया और उसमें बैठकर अङ्गरेजसेनाका रास्ता देखने लगा। देखते देखते अङ्गरेज सेना क्राफोर्डके गोदामके सामने आपहुंची। अङ्गरेज सेनापति बट-लरने आकर पहले क्राफोर्डकी स्त्रीका हाथ पकड़ा और पूछा 'स्काट कहां छिपे हुए हैं बतादो नहीं तो अभी तुम्हें मार डालूंगा।' अङ्गरेज सेनापतिका यह जघन्य व्यवहार देखकर क्रोधसे अधीर हो वालेस किलेसे निकल आया और कहा—"नीच! स्त्रीके ऊपर हाथ लगाना वीरका काम नहीं है अगर साहस है तो आ—आज पृथिवी या तो बटलर शून्य होगी या वालेस-शून्य"

वालेसकी कड़ी बातोंसे बटलरका दिलीदाह भड़क उठा। युद्धके लिये ललकारनेसे बटलर सेनासहित वालेसके सामने आया।

लाचार वालेसको काठके किलेमें घुसना पड़ा। वालेसने चाहा था कि आज द्वन्द युद्धमें बटलरसे जोरआजमाई करेंगे किन्तु कापुरुष बटलरने द्वन्द युद्धका साहस न करके सेनाके सहारे असहाय वालेस को अभिमन्यु-वध करना चाहा। लेकिन उसका इरादा व्यर्थ हुआ। थोड़ेसे स्काट अलौकिक वीरतासे उस काठके किलेकी रक्षा करने लगे। किला तोड़नेकी कोशिश करनेमें १५ अङ्गरेज मारे गये। तब बटलर अपनी सेनाके तीन भाग करके तीन तरफसे किले पर आक्रमण करनेके इरादेसे अचानक मैदानसे गायब होगया। वालेसने उसका गूढ़ अभिप्राय समझ कर अपने छोटे दलके भी तीन भाग किये। लांगविल और विलियमके अधीन छः छः आदमी देकर और स्वयं सिर्फ ५ आदमी लेकर किलेकी रक्षा करने लगा। वह किलेके जिस तरफ था बटलर स्वयं उधर ही बढ़ा। कुछ देर घोर युद्धमें दोनों सेना अद्भुत वीरता दिखाती रही किन्तु मस्त हाथीके साथ गीदड़ोंका दल कबतक लड़ सकता है? अङ्गरेज सेना लड़ाईमें शत्रुकी अजीब बहादुरीसे भौचक होकर भागी। इधर तारा नाथ ताराओं सहित गगनपट पर आकर विराजमान हुए। बटलर और उसकी सेना अपनी छावनीमें खाना पीना करने लगी। उधर स्काटोंने सिर्फ झरनेका पानी पीकर अपने काठके किलेमें रात बिताई।

प्रधान अङ्गरेज सेनापति अर्ल यार्कने बटलरको कहला भेजा कि हम तुम्हारी मददको जल्द आते हैं जब तक हम न पहुंचें तब तक तुम अपने किलेसे न निकलना। किन्तु बटलर वालेसको पकड़नेकी बहादुरी लेनेके लिये इतना उतावला होरहा था कि उसने अर्लका कहना न माना। उसने वालेससे एकान्तमें भेटकर उसे सलाहदी कि मेरे सिवा और किसीके हाथ आत्मसमर्पण न करना। कहा—आपने मेरे पिता और दादाको मार डाला है अब मेरी सिर्फ इतनी बात मान कर उस पापका कुछ प्रायश्चित्त कीजिये। यह मैं नहीं कहता कि आप अभी आत्मसमर्पण कीजिये। आप

जब आत्मरक्षासे असमर्थ होकर आत्मसमर्पण करनेकी जरूरत समझें तब मेरे सिवा और किसीके हाथ आत्मसमर्पण न करें—मैं सिर्फ इतनाहीं चाहता हूँ।" वालेस बटलरका यह निष्ठुर अभिप्राय सुनकर हंस पड़ा और बोला कि समूचा इङ्गलेन्ड जमा होकर भी मुझे नहीं हरा सकेगा।

वालेसको 'मंत्र सिद्ध हो या प्राण जाय' की प्रतिज्ञापर बद्धकटि देखकर बटलर रातभर उसका किला घेरे रहा। रात बीती किन्तु अन्धेरा दूर नहीं हुआ रातके अन्धेरेके बदले कुहासा छागया। उस अवसरमें स्काटिशवीर काठके किलेसे निकल कर अङ्गरेजी छावनी पर टूट पड़े। अङ्गरेजोंको कुछ दिखाई न पड़ा। असंख्य अङ्गरेज मारेगये। सेनापति बटलर वालेसकी तलवारके एकही वार से यमपुर पधारा। उसकी मृत्युसे अङ्गरेजसेना डरके मारे लड़ाई छोड़कर भाग गई। स्काट इस मौके पर मेथवे बनको चल दिये। यहां इफरातसे रसद मौजूद थी इससे उनको और कोई तकलीफ न रही। यहां वालेसके दो एक साथी दलबल सहित उससे आमिले। वहां एक रात रहकर जातीय दल बार्नेम बनको रवाना हुआ। वहां पहुंच कर प्राणदण्डकी आज्ञा पाये हुए स्क्वायर रुथवेनसे मिल गया। यह सम्मिलित सेना वहांसे एथोल और एथोलसे लोरन गई। रास्तेमें उन लोगोंके कष्टको सीमा न रही। रास्तेके दोनों तरफके निवासियोंकी, दुर्भिक्षके मारे हड्डी हड्डी हिलती थी। लगातार लड़ाइयोंसे खेती वाणिज्य आदि सब बन्द होगये हैं। कहीं खानेको कोई चीज नहीं मिलती। खेतोंमें फसल नहीं। दुकान हाट बाजार सब बन्द हैं। देशकी यह दुर्दशा देख कर वालेसका कलेजा टूक टूक होने लगा। विशेष कर अपने सहचरों का दु:ख देखकर उसका धैर्य्य जाता रहा। उन्हें भूखों मरते देख उसने लम्बी सांस लेकर कहा—भाइयो! मैं ही तुम लोगोंके इस कष्टका कारण हूं। आज्ञा दो अब मैं जाता हूं—अगर तुम्हारा कष्ट दूर करसका तो अच्छाही है नहीं तो तुम्हें फिर इस तरह

बांध कर नहीं रखूंगा, यह कह कर अपने लौटने तक उनको वहां ठहरा कर वह अन्तर्धान होगया।

वालेस पहाड़ी चोटियां लांघ कर एक खेतमें पहुंचा। उसकी यातनाकी सीमा न थी। वह दुःखी होकर एक पेड़के नीचे हाथपर गाल धर कर सोचने लगा। मन ही मन अपनेको धिक्कार देकर कहने लगा—'पामर! तेरेही दोषसे तेरे साथियोंको आज यह कष्ट है। स्काटलैण्डको स्वाधीन करनेकी चेष्टामें तू इस तरह आत्मोत्सर्ग करने वाले वीरोंकी आहुति देने चला है! किन्तु तेरी आशा वृथा है! विधाताने तेरे भाग्यमें यह सौभाग्य नहीं लिखा। शायद तुझसे किसी योग्य और अधिक संभ्रान्त मनुष्यके ललाटमें यह सौभाग्य लिखा है। भाइयो! मेरेही लिये तुम भूखों रह कर नींद छोड़ कर घास पात पर पड़ कर बड़े कष्टसे दिन काट रहे हो ईश्वरसे मैं मनसा वाचा कर्मणा प्रार्थना करता हूं कि तुम्हारा यह दुःख दूर हो। मैंही तुम्हारे इस दुःखका मूल हूं; इसलिये मैं इसका प्रायश्चित्त करूंगा। मैं अकेले सबका दुःख भोगूंगा।' ऐसी आत्मग्लानि पूर्ण चिन्तामें निमग्न होजाने पर शान्तिदायिनी निद्रा-देवीने आकर उसे गोदमें ले लिया। वह वीर देह पेड़के नीचे ढुलक गई!

तीन दिनसे तीन अंग्रेज और दो स्काट वालेसके पीछे पीछे घूमते थे। वालेसको जागतेमें पकड़नेकी किसीकी हिम्मत न हुई। एडवर्डने प्रकाश्य युद्धमें वालेसको हरानेमें असमर्थ होकर अन्तमें यह नारकी उपाय निकाला था। इनामका लोभ दे कर उसको पकड़नेके लिये गुप्तचर नियत किये थे। यही पांच आदमी एडवर्डके नियत किये गुप्तचर थे। इनपांचोंके साथ एक लड़का था वह उनके लिये भोजन जुटाया करता था। यह पांचों पासकी एक झाड़ीमें छिपे थे। जब देखा कि वालेस नींदमें बेखबर सोगया है तब उन्होंने वहांसे निकलकर उसे पकड़ा। सोते शेरको जगानेसे वह जैसे गर्ज उठता है वैसेही वालेस जागकर गर्जने लगा और एक पैतरेमें जो सबसे

जबरदस्त था उसके पास जापहुंचा और उसको पकड़ कर उसका सिर इस जोरसे पेड़की डाली पर पटका कि उसकी खोपड़ी चूर चूर होगई। इसके बाद अपनी तलवार लेकर बाकी चारों पर हमला किया और दोको पलभरमें काट गिराया। बाकी दो प्राण लेकर भागने लगे किन्तु वालेसने दौड़कर उन्हें भी मारडाला। सिर्फ लड़का बचा। उसने कांपते कांपते वालेसके चरणोंमें गिर कर क्षमा मांगी। कहा कि मैं वेसमझे बूझे इन लोगोंके साथ आया था और सिर्फ खाना जुटानेके सिवा किसी काममें शामिल न था। वालेस उसे उसके सामान सहित अपने साथियोंके यहां लेगया और उनसे सारा हाल कह सुनाया। वह लोग चौंके और डरे और वालेसको इस तरह अकेले कहीं जानेके लिये टूसने लगे।

उन्होंने उस लड़केसे उस प्रदेशकी हालत पूछ कर जाना कि रैनक शहरमें गये बिना कुछ रसद मिलनेकी उमेद नहीं। इस लिये वह लोग उसी रातको वहांसे कूच करके रात रहतेही रैनक में पहुंचे। उस थोड़ेसे सैनिकोंको लेकर ही वालेसने उसी रातको किले पर हमला किया। उसकी जबरदस्त ठोकरसे किलेका दरवाजा टूट गया जिसकी आवाजसे किलेके सब लोग जाग गये किलेके अध्यक्ष और दूसरे लोग स्काट थे—जानके डरसे अङ्गरेजों की शरण आये थे। अब खुशीसे वालेसके झण्डेके नीचे आगये।

देशके आदमियोंका मन जाननेके लिये वालेसने दूसरे दिन जातीयझण्डा उठाकर अङ्गरेजोंके विरुद्ध युद्धघोषणा करनेका इरादा किया। सवारोंके लिये जंगी घोड़े संग्रह किये गये। इस छोटी सी जातीय सेनाने सजधज कर डनकेल्डको कूच किया। उसके आनेकी खबर पातेही वहांके विशप सेन्ट जानस्टनको चलदिये। डनकेल्ड किलेमें जितने अङ्गरेज थे सब स्काट वीरोंके शिकार हुए। किला लूटकर स्काटोंने बहुतसी बहुमूल्य चीजेंपाईं। पांच दिन वहां आराम करके वालेसकी सलाहसे वह रासनगरको रवाना हुए। वालेसने इस उमेदसे उधरकी यात्राकी कि वहां विशप सिंक्लेयर

आदि बहुतसे स्काट उससे आमिलेंगे। वह ज्यों ज्यों आगे बढ़ने लगे त्यों त्यों अङ्गरेज चारों ओरसे भागने लगे। किसीको उनका सामना करनेका साहस नहीं हुआ। वालेसकी सेनामें धीरे धीरे असंख्य स्काट आमिले। उसकी सेना सात हजार होगई। उस को लेकर उसने एवर्डीनको कूच किया। अङ्गरेज यह खबर पाकर एवर्डीनको वियाबान करके चले गये। रुथवेन, सिंक्लेयर लिन्डसे, बायड, एडम वालेस बैरन, रिकर्टन, सीटन, लौडर, लुन्डिनके रिचार्ड आदि वालेसके सब सहचर धीरे धीरे अपनी सेना सहित उससे आमिले। एवर्डीनसे स्काट सेना सेन्ट जानस्टन में पहुंची। अङ्गरेज जिधर रास्ता मिला उधर भागे। डंकेल्डके विशप सेन्ट जानस्टनसे लन्दन भागगये। उन्होंने एडवर्डसे अङ्गरेजों की यह दुर्दशा कही। एडवर्डने सलाह लेनेके लिये आमेर डी वालेंसको बुला भेजा।

एडवर्ड अब हताश होगये। उन्होंने देखा कि बलसे वालेस परास्त नहीं होगा। वह एक बार हरावेंगे फिर वालेस जोर पकड़ कर मैदानमें खड़ा होगा। बलमें हार कर एडवर्डने अबकी रिशवतसे कामलेनेका विचार किया। यह इंगलेन्डका खास अपना ईजाद किया हुआ पेशा है। विश्वासघात कराके उसका फल-लूटना इंगलेन्डकी हमेशाकी चाल है। एडवर्डको यह नारकी उपाय-सूझा कि वालेसके साथियोंको रिशवतसे मुट्ठीमें करें और उन्हींके जरिये सोते समय वालेसको पकड़वावें। उन्होंने विश्वास-घाती सर आमेर डी वालेंसको यह काम सौंपा। वह इसकामके लिये मनमाना खर्च करनेका हुक्म पाकर स्काटलेन्ड लौट आया। वालेंसने स्वदेश लौटकर सर जान मौन्टीथको इसके योग्य समझकर बुलाया। सरजान मौन्टीथ लेनक्सकी मिलकियत और तीन हजार अशर्फियोंके बदले प्रिय सहचर वालेसको अङ्गरेजोंके हाथ पकड़वा देने पर राजी हुआ। एक प्रतिज्ञापत्र लिखा गया। वालेंस मौन्टीथका लिखा हुआ वह प्रतिज्ञा पत्र बडेहर्षसे एडवर्डके पास लेगया। उसे देख कर एडवर्ड बेहद खुश हुए।

इधर वालेस सेन्टजानस्टन किला घेरे हुआ था। अङ्गरेज बड़ी बहादुरीसे किलेकी रक्षा करते थे। एक दिन सबेरे पांचहजार अङ्गरेज किलेके दक्षिणी दरवाजेसे स्काटव्यूह तोड़कर निकले किन्तु स्काटिश वीरोंने पलभरमें उनके सामने आकर उन्हें किलेमें लौट आनेको मजबूर किया। स्काट अङ्गरेजोंको खदेड़ कर किलेमें लेगये। डंडास हमलेके जोरमें साथियोंको छोड़ कर किलेमें घुस गये। अङ्गरेज झट उन्हें पकड़ कर सेनापति अर्ल यार्कके पास लेगये। उन्होंने वालेसको कृतज्ञ बनानेके लिये डन्डासको दूतके साथ उसके पास भेजा। सेनापतिने सोचाथा कि मेरे इस बर्ताव पर लट्टू होकर वालेस एडवर्डकी अधीनता स्वीकार करेगा। किन्तु वालेस किसी तरह अपने उद्देश्यसे हटने वाला नहीं था। उसने इस अच्छे बर्तावके बदलेमें अङ्गरेज सेनापतिके पास धन्यवाद भेज दिया।

स्काट वीरोंकी वीरताकी कहानी धीरे धीरे स्काटलेन्डमें सर्वत्र फैलने लगी। अर्ल फाइफ और फाइफके शेरिफ अपने दल सहित आकर जातीय पताकाके नीचे खड़े हुए। सम्मिलित स्काटसेनाने बड़े वेगसे स्काट किले पर हमला किया। सैनिक दीवार फांद कर किलेके भीतर घुसगये। उनकी तलवारोंसे क्षणभरमें हजारों अङ्गरेज मारे गये। पीछे अङ्गरेज-मेधयज्ञ आरंभ हुआ। वालेसने पहला उपकार यादकरके अर्ल यार्कका प्राण बचानेके लिये उनके पास दूत भेजा। जाप दूत हुआ। वह अर्ल यार्कके लिये एक छकड़ा लाया। उनको स्काटिश सैनिककी पोशाक पहना कर गाड़ी पर चढ़ाया और राह खर्च देकर बिदा दिया। स्त्रियों और लड़के लड़कियोंको भी रिहाई होगई। इस विजयने जान किया वालेसने अब स्काटोंको जातीय झण्डेके नीचे खड़े होनेके लिये आह्वान किया।

कुछ सैनिक लेकर आये थे। इन्होंने असंख्य अङ्गरेजोंको लड़ाईमें हराया और मारा और हुड़गटन किले पर अधिकार कर लिया। [illegible] और एडवर्ड ब्रूसने विश्वस्तता दिखा कर परस्पर प्रेमालिङ्गन किया। एडवर्ड ब्रूस उसी जगह पर जातीय अधिनायक बनाये गये। वालेसने यह भी प्रतिज्ञाकी कि अगर राबर्ट ब्रूस स्काटलेण्डके सिंहासन पर बैठनेसे अस्वीकार करेंगे तो वह सिंहासन एडवर्ड ब्रूसको दिया जायगा। वालेस यह प्रतिज्ञा करके कमनककी काली गुफामें चला गया।

इधर वालेस और एडवर्ड ब्रूसका सन्धि समाचार इङ्गलेन्डनरेश एडवर्डके कानों तक पहुंचा। उन्होंने तीनबार स्काटलेन्डको पराजय करके वहां अपना अधिकार जमाया था। उनके चले आने पर तीनों बार स्काटलेन्डने सिर उठाया। यह देख कर एडवर्डने उस पर फिर चढ़ाई करनेका इरादा छोड़ दिया। उन्होंने देखा कि जब तक वालेस जीता रहेगा तब तक स्काटलेण्डमें उनको कुछ आशा नहीं है। इसलिये उन्होंने मौन्टीथको वालेसको पकड़वा देनेकी प्रतिज्ञा याद दिलाई। मौन्टीथने एडवर्डके बहकानेसे अपने भानजेको वालेसके पास नौकरी करनेके लिये भेजा। वह युवक वालेस के पास जाकर नौकर हुआ। स्काटलेण्डमें शान्ति और स्वाधीनता स्थापित करनेकी चिन्तामें लगे रहनेसे वालेसने उस युवककी बदनीयती नहीं समझी और उसे अपनी सेवामें रख लिया।

स्काटलेण्डसे अङ्गरेजोंको एकदम निकाल कर वालेसने विश्वासी दूत जानको एक पत्र देकर ब्रूसके पास इंगलेण्ड भेजा। लिख भेजा कि स्काटलेन्डका सिंहासन खाली पड़ा है आप आकर उस पर बैठिये इससे स्काटलेन्डके स्त्रीपुरुष बूढ़े बच्चे सब सुखी होंगे। कोई प्रतिद्वन्द्वी नहीं है। ब्रूस इस समाचारसे बहुत प्रसन्न हुए और वालेसको इसके लिये धन्यवाद देकर सलाह पूछी कि कैसे मैं चुपके चुपके इंगलेन्डसे भाग आऊं। यह भी लिखा कि तुम ग्लासगो मूर तक आओ। १३०५ ईस्वीके जुलाई महीनेकी पहली

रातको मैं चुपके वहां आकर तुमसे मिलूंगा। वालेसको भी अकेलेही छिपकर वहां आनेका अनुरोध किया।

वालेस डरको कोई चीज नहीं समझता था। वह उस नियत रातको सिर्फ कार्ले और मौन्टीथके भेजे हुए उस युवकके साथ ग्लासगोमूरमें गया। वह ब्रूसकी बाट देखते शहरके बाहर टहलने लगा। इधर विश्वासघातक मौन्टीथ साठ हथियार बन्द जवानों सहित उसी रातको ग्लासगोमूरमें जा पहुंचा। वह ग्लासगोगिर्जे के नजदीक किसी मकानमें आदमियों सहित छिपारहा। वालेस भी देर तक ब्रूसकारास्ता देख उसके आनेसे निराशहोकर प्रिय मित्र कार्लेके साथ किसी पान्थशालामें टिकने चला गया। आधीरात होगई, नींदमें अलसाकर वालेस औरकार्लेसोनेके लियेएक कोठरीके अन्दर गये। युवक नौकर बाहर पहरा देने लगा। जब वह दोनों नींदमें बेखबर सोगये तब उस विश्वासघातक नौकरने धीरे धीरे अन्दर जाकर उनके हथियार निकाल लिये। फिर मौन्टीथको आकर खबर दी कि वह लोग अब काबूमें हैं। मौन्टीथने उसीवक्त आदमियों सहित आकर वह मकान घेर लिया। घरमें जाकर सोये हुए कार्लेको दरवाजे पर लाकर मार डाला। इसके बाद धूर्त्त सोयेहुए वीर सिंहको रस्सियोंसे बांधने लगे। वालेसकी नींद टूट गई। वह उछल कर अलग जा खड़ा हुआ और अन्धेरे में अस्त्र शस्त्र टटोलने लगा मगर कहीं कुछ नहीं पाया। तब सामने जिसको पाने लगा उसको उठाकर पटकने लगा। इस धर पटकमें कई अङ्गरेज मारे गये। मुश्किल देख कर मौन्टीथने छलसे काम लिया; कहा कि अङ्गरेजोंने बड़ी भारी सेनासे तुम्हें घेर लिया है उनके हाथसे तुम्हें हिकमतसे बचानेके लिये मैं आया हूं मेरे साथ कैदी की तरह चलोगे तो वह लोग कुछ न बोलेंगे। मैं तुम्हें उनसे बचाकर तुम्हारे घर छोड़ आऊंगा। मौन्टीथ एक समय वालेसका प्रिय सहचर था। उसने यह बातें ऐसी सहानुभूतिके साथ कहीं कि वालेस सन्देह न कर सका। तथापि

उसने विश्वासकेलिये मौन्टीथसे शपथ कराया। मौन्टीथने बिना कुछ हिचके ईश्वरको साची दे शपथ किया मैं कि कभी वालेसको शत्रुके हाथ नहीं सौंपूंगा। सीधे सादे वालेसने मौन्टीथके छलमें पड़ कर दोनो हाथ रस्सीसे बांधनेको कहा। आपसे गिरफतार हुए बिना उस शेरको कोई पकड़ने वाला न था। हाथ बंध जाने पर उसने प्रिय मित्र कार्लेको ढूंढ़ा पर उसका कुछ पता न पाया। तब वह समझा कि मैं विश्वासघातकके हाथमें पड़गया हूं। तब समझा कि मेरा भाग्य फूटा। किन्तु अपनी चिन्तासे स्काटलेन्डकी चिन्ता उसे अधिक हुई। वह यह सोचकर बहुतही व्यथित हुआकि मेरे बाद स्काटलेन्डकी क्या दशा होगी।

इधर वालेसके हित मित्रोंको इस बातकी कुछ खबर न थी। वालेस उनके हाथसे निकल गया तब उन्हें पूरा हाल मालूम हुआ। मौन्टीथ इतनी फुर्तीसे उसेलेगया कि वह लोग सबेरे कार्लाइलमें जा पहुंचे और वहां जाकरही उसे लार्ड क्लिफोर्ड और वालेन्सके सपुर्द किया। उन्होंने वालेसको शहरके कैदखानेमें कैद कर रखा तभीसे वह कारागार वालेस टावरके नामसे मशहूर है। बुरी घड़ीमें वालेस अकेले ब्रूसकी अगवानीको निकला था। बुरी घड़ीमें उसने विश्वासघातक मौन्टीथका विश्वास करके आत्म समर्पण किया था! हाय क्या हुआ! अब कौन स्काटलेन्डका उद्धार करेगा?

सत्रहवां अध्याय।

वालेसका विचार और प्राणदण्ड।

कार्लाइलके कारागारसे वालेसको लेकर मौन्टीथने इङ्गलेन्डकी यात्रा की। वह और वालेस कालेरंगकी गाड़ीपर सवार हैं और दो सौ सवार अङ्गरेज उनके पीछे हैं। इस तरह वह कैदीकी गाड़ी

क लांइलसे दक्षिणको रवाना हुई। गाड़ी बड़ी तेजीसे दौड़ने लगी मानो स्काटिश सूर्य्य उस दिन दक्षिण सागरमें अस्त होनेके लिये उधरही चला। अथवा मानो किसी दैवीशक्तिने स्काटलेन्डके वक्षस्थलसे उसका कलेजा काढ़कर सुदूर दक्षिणके मार्गमें फेंक दिया। सहसा मानो स्काटिश गगन अन्धकारमय होगया। सहसा मानो स्काटिश शरीरका खून सूख होगया। जिसने स्काटलेन्डका फिर उद्धार करनेके लिये छाती फाड़कर खून दिया था, जन्मभूमिके पुनरुद्धारके लिये जिसने समरभूमिको सुखसेज माना था, आज वही स्काटिश वीर स्काटलेन्डको सूना करके स्काटलेण्डके ज्ञातिद्रोह और स्वार्थका प्रायश्चित्त करनेके लिये आत्मवलि देने इङ्गलेण्डको चला है इस समाचारसे स्काटलेण्डके स्त्री पुरुष बालक बूढ़े आज घर घर रोरहे हैं।

इस समाचारसे वालेसके प्रिय सहचर लांगविलके शोककी सीमा न रही। उसने प्रतिज्ञा की कि जबतक इसका बदला नहीं लूँगा तब तक स्वदेश न लौटूंगा स्काटलेण्डमें ही रहूंगा। वह लकमेविन में गया वहां एडवर्ड ब्रूससे उसकी मुलाकात हुई। वहां दोनो स्काटलेण्डके राजा राबर्ट ब्रूसकी बाट देखने लगे। वैनक ब्रनके समरमें लांगविलने राबर्ट ब्रूसको बगलमें खड़े होकर स्काटलेण्डको स्वाधीनताके लिये बड़ीही बहादुरीसे लड़ाई की थी। ब्रूस आकर वालेसकी खबर सुनकर शोक सागरमें डूब गये। एडवर्ड ब्रूसने वालेसका अपार गुण बखान कर भाईको कुछ ढारस दिया और बदला लेनेके लिये जल्द तय्यार होने लगे।

इधर काली गाड़ी वालेसको लेकर यथासमय इंगलेण्डमें पहुंची। एडवर्डकी खुशीका पारावार न रहा। वालेस १३०५ ईस्वी की ५ वीं अगस्तको गिरिफ्तार करके २२ वीं अगस्तको लन्दन लाया गया। १७ दिन रास्तेमें लगे। राहमें इङ्गलेण्डके स्त्री पुरुष बूढे बालक अकचका अकचकाकर स्काटिश वीरको देखते थे। वालेसके साथ बहुत आदमी लन्दनमें आये। उस दिन

फ्रेनचर्चस्ट्रीटके किसी गृहस्थके मकानमें वह रखा गया। दूसरे दिन घोड़े पर सवार कराके वेस्टमिनिस्टरहालमें लाया गया। इगलेण्ड के ग्रेन्ड मार्शल सरजान डिग्रेव, लन्दनके रिकार्डर जिउफ्रे, मेयर शेरिफ, अल्डरमेन आदि बड़े बड़े आदमी उसके साथ गये। पीछे पीछे बेशुमार सवार और पैदल सेना गई। एडवर्डकी घबराहटका ठिकाना न था। जज लोग वालेसको दोषी ठहरावें इसके लिये वह उस दिन बारबार जजोंकी संख्या बदलने लगे। कभी स्थिर किया कि तीन जज विचारकरेंगे कभी चार और कभी पांच जजोंको चुना। कभी कहाकि दोसे कोरम होगा कभी तीनसे कोरम ठहराया। हालके दक्षिणी मंच पर वालेस बिठाया गया। वालेस घमण्डसे कहा करता कि मैं वेस्टमिनिस्टर हालमें बैठकर इङ्गलेण्डका राज-मुकुट पहनूंगा। इसीसे आज व्यङ्गसे उसके सिर पर लोरेल मुकुट रखा गया। एडवर्ड ऐसे कठिन समयमें भी वालेसको इस तरह मर्मवेदना पहुंचानेसे जरा नहीं हिचके। अङ्गरेजकी यह आदत पुरानी है। एक दिन वेल्स पेट्रियट लियोलिनका भी इसी तरह मर्मन्तुदअपमान किया गया। उसका सिर काट कर लन्दन टावरके ऊपर लटका कर उसके ऊपर आइवी लताका मुकुट रखा गया। वालेसके वधके बाद सर साइमन फ्रेजरको भी यही दुर्दशा की गई थी।

वालेसपर राजविद्रोहका अभियोग लगाया गया। सिग्रेव, मालुरी, सैनुविच; राकवेल और ब्लिन्ड नामके पांच जजोंने विचार आरम्भ किया। विचारका फल पहलेहीसे तय होचुका था तोभी जजोंने दिखावेके लिये वालेससे पूछा कि तुम पर राजविद्रोहका अपराध लगाया गया है तुम दोषी हो या निर्दोष? वालेसने उत्तर दिया मैं निर्दोष हूं क्योंकि मैं कभी इंग-लेन्ड नरेशकी प्रजा नहीं था इसलिये राजविद्रोहका अभियोग मेरे ऊपर नहीं लग सकता। जजोंने वालेसके इस उचित उत्तरपर कान नहीं दिया। अन्तर्जातीय नियमके अनुसार वह राजद्रोहके अपराधमें

दण्ड नहीं पासकता यह बात दुनिया समझ गई किन्तु जजोंने समझकर भी नहीं समझा। क्योंकि उन्होंने एडवर्डके पास अपना कर्तव्यज्ञान और धर्मबुद्धि बेच दी थी। इसीसे आज उन्होंने विचारककी मर्य्यादा और जिम्मेदारी पर लात मारकर विड़म्बना पूर्ण लोकदिखाऊ विचार किया। इसीसे आज उन्होंने नीचे लिखा युक्ति और न्यायरहित फैसला और दण्डाज्ञासुनाई। उन्होंने विचारासन पर बैठकर एडवर्डने जो कुछ सिखाया था वही कहके विचारक की जवाबदिहीसे पीछा छुड़ाया। फैसलेका मतलब यह है—स्काटलेन्ड नरेश जान वेलियलके राज्यच्युत होने पर—एडवर्डने स्काटलेन्डको जीता और अपने अधिकारमें किया। स्काटलेन्डकी पुरोहित मण्डली अर्ल और बेरन तथा दूसरी प्रजाने उनकी अधीनता मानली है। उन्होंने स्काटलेन्डमें शान्ति फैलाई है और वहांकी रीतिनीतिके अनुसार शासन प्रणाली जारी की है। यह सब होते हुए भी वालेसने बेशुमार फौज जमा करके अङ्गरेज कर्मचारियों पर हमला किया है, लानार्कके शेरिफ हेसिलरीगको मारकर उसकी लाशके टुकड़े टुकड़े किये हैं, स्काटलेन्डका अकेला मालिक बनकर वहां अपना हुक्म चलाया है, पार्लीमेन्ट बुलाई है, फ्रांस नरेशसे सन्धि करनेकी कोशिश की है नरदम्बरलेन्ड केम्बरलेन्ड और वेस्टमोरलेन्डको तहसनहस करदिया है, फलकार्कके मैदानमें खुली लड़ाईमें इङ्गलेन्ड नरेशका सामना किया और हारने पर जब उससे कहा गया कि क्षमा मांगकर शान्तिले लो उसने शान्ति लेनेसे इनकार किया था। इसी कारण वह तभीसे आईनके लाभसे वञ्चित किया गया है और उसने उसके बाद फिर इङ्गलेन्ड नरेशसे क्षमा मांगकर शान्ति नहीं ली इस लिये उसको सफाई पेश करने और अपना पक्ष समर्थन करनेका अधिकार देना इङ्गलेन्डके आईनके अनुसार बेकानूनी और अन्याय समझा जाता है इसलिये उसको वह अधिकार नहीं दिया जा सकता। अब उसे मृत्युकी सजाका हुक्म दिया जाता है और यह भी आज्ञा दी जाती

है कि उसका सिर उतार कर और अंग प्रत्यंग काटकर चारों ओर फेंके जायंगे। धन्य विचारक! धन्य तुम्हारी विचार प्रणाली! जैसा राजा वैसाही विचारक!

वध्यभूमिमें जानेके रास्ते के दोनों तरफ कतार बांधकर हथियार बन्द पुरुष खड़े थे पीछे पीछे बेशुमार आदमी दौड़ते थे। इस दशा में वालेस वध्यभूमिमें लाया गया। वालेसके चेहरे पर साहस और शान्ति बिराजमान थी। स्वदेशके लिये जान देनेमें वालेसके मनमें मानो अपार आनन्दकी लहरें उठ रही थीं। वालेसने एक पुरोहित या कनफेसर मांगा परन्तु एडवर्डने नहीं दिया और कहा कि जो कोई वालेसका यह काम करेगा उसे फांसी देदी जायगी। कन्टर-बरीके विशप एडवर्डको धिक्कार देकर उनकी फांसीकी धमकीकी कुछ परवा न करके वालेसके कनफेसर हुए। राजाने फौरन उन को पकड़नेका हुक्म दिया मगर उनके साथी मंत्रियोंने समझा बुझाकर उन्हें ऐसा करनेमे रोका।

वालेसने विशपके सामने जिन्दगीकी कहानी कुछ न छिपाकर सब 'कनफेस' की अर्थात् कह दी। घुटना टेक कर अपना आत्मा ईश्वरमें अर्पण कर दिया। विशप अगला दृश्य देखने की हिम्मत न करके वहांसे भाग गये। घातक इसके बाद उसको तिकठीके पास लेगये। उसके पैर अभी तक सख्त लोहेकी जञ्जीरमें बंधे हैं आज तीस दिनसे वह इसी हालतमें रखा गया है। वालेसने लार्ड क्लिफोर्डसे अपने सदाका साथी भजन ग्रन्थ मांगा। यह ग्रंथ कैद-खानेमें लेजानेके समय उसके कपड़े लत्तेके साथ काराध्यक्षको सौंप दिया गया था। तिकठीके फांसमें जब उसका सिर दिया गया तब उसने अपनी आखोंके सामने वह ग्रन्थ रखनेको कहा। ग्रंथ उसके सामने रखा गया। वह टकटकी लगा कर उसकी ओर देखने लगा। जब तक होश रहा तब तक माताके दिये हुए उस ग्रन्थकी तरफ भक्तिभावसे देखता रहा। इधर घाय-कोंने अपना काम पूरा कर डाला। आज इङ्गलेन्डकी वध्यभूमिमें

स्काटलेन्डके आकाशका चन्द्रमा राहु ग्रस्त हुआ! आज वसुन्धराने वीररक्तसे उमड़ कर विकराल मूर्ति धारण की! आज इङ्गलेन्डकी छाती उस रुधिराग्निसे भस्म हुई! २३ वीं अगस्तको बड़ी क्रूरताके साथ यह वीरमेधयज्ञ समाप्त हुआ। अङ्गरेजोंने उस वीरका शरीर टुकड़े टुकड़े करके चारों ओर फेंका। सिर लन्दनके पुल पर और दायां हाथ न्यूकैसल पुलपर रखा गया। बायां हाथ बारविक. दायां पैर पार्थ और बायां पैर एडवर्डीनमें भेजा गया। इस तरह उस महावीर प्रातः स्मरणीय चरित स्काटिश स्वदेशहितैषीने स्वदेशके लिये स्वजातिके लिये—और अनन्तकाल तक मनुष्य जातिकी शिक्षाके लिये—आत्मोत्सर्ग किया। धन्य वालेस! धन्य तुम्हारा आत्मोत्सर्ग! पुण्यभूमि वही देश है जिस देशमें तुम्हारे जैसे पुण्यात्मा जन्म लेते हैं। धन्य वह जाति है—अपने जन्मसे तुम्हारे जैसे आदमी जिस जातिको कृतार्थ करते हैं!

जो सर्व संहारिणी मृत्यु दुनियाके किसी जीवको नहीं छोड़ती बुरे भलेका विचार नहीं करती उसने वालेसकी देवोपम गुणावली न सह कर असमय ही उसको अपने पेटमें लेलिया! मगर नादान! तेरी यह वृथा चेष्टा है! जो अपने अद्भुत आत्मोत्सर्गसे अमर हो गया है उसको पेटमें छिपा रखना तेरा काम नहीं है। तू मूर्ख है इससे उसका गला सड़ा घृणित स्थूल शरीर लेकर तृप्त होगई है! यह देख वालेस फड़कते हुए सूक्ष्म शरीरसे गुलामीसे पीड़ित मुर्देके समान करोड़ों मनुष्योंके शरीरमें जीवन डाल रहा है। हवाके प्रचण्ड झोंकेसे उसकी चिता-भस्मकी एक एक रेणु आगकी चिनगारीकी तरह सारी पृथिवी पर फैल रही है उस बिजली भरी चिनगारीको छूना यमको दुश्वार है। वह चिनगारी जिसको छू जाती है वही अमरत्व पाजाता है। वह बिजली जिस शरीर में पैठजाती है वह फिर मरनेसे नहीं डरता। जिसको स्थूल शरीर से मोह है, स्थूल शरीर भोग्य है—भोगविलाससे आसक्ति है वही मौतसे डरता है। प्राण उत्सर्ग करनेवाले निष्काम योगी मौतका